भाकृअनुप
ICAR

सफलता की कहानी...
कृषक महिलाओं की ज़ुबानी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भाकृअनुप-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र-II
(आई.एस.ओ. 9001-2015 प्रमाणित संस्थान)
काजरी परिसर, जोधपुर - 342 005 (राजस्थान)

सफलता की कहानी...
कृषक महिलाओं की जुबानी

सम्पादक मण्डल

डॉ. राज नारायण

डॉ. सुशील कुमार सिंह

डॉ. हरनारायण मीना

डॉ. बाबू लाल जाँगिड़

डॉ. (सुश्री) सरोज चौधरी

भाकृअनुप
ICAR

भाकृअनुप-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र-II

(आई.एस.ओ. 9001-2015 प्रमाणित संस्थान)

काजरी परिसर, जोधपुर - 342 005 (राजस्थान)

प्रकाशकः
डॉ. सुशील कुमार सिंह
निदेशक
भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोन–II,
जोधपुर 342 005 (राजस्थान)

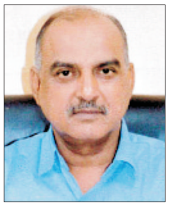

संपादकः
डॉ. राज नारायण
प्रधान वैज्ञानिक (उद्यान–सब्जी विज्ञान)

डॉ. हर नारायण मीना
वरिष्ठ वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान)

डॉ. बाबू लाल जांगिड़
प्रधान वैज्ञानिक (कृषि प्रसार)

डॉ. (सुश्री) सरोज चौधरी
वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता

संपादन में सहयोगः
डॉ. प्रेमपाल रोहिल्ला, प्रधान वैज्ञानिक (पशु उत्पादन एवं प्रबंधन)
डॉ. मोहर सिंह मीना, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि प्रसार)
श्री महेन्द्र कुमार, वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता

संगणना में तकनीकी सहयोगः
प्रीतम चंद सर्बटे, डाटा एंट्री ऑपरेटर
भवानी सिंह ईन्दा, डाटा एंट्री ऑपरेटर
पार्थ पांडेय, डाटा एंट्री ऑपरेटर

वर्षः 2022

उद्धरण
नारायण, राज; सिंह, सु   ील कुमार; मीना, हर नारायण; जांगिड़, बाबू लाल एवं चौधरी, सरोज (2022), सफलता की कहानी..... कृषक महिलाओं की जुबानी। भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग शोध संस्थान, क्षेत्र–।।, जोधपुर, राजस्थान पृष्ठ सं. 1–88

मुद्रकः एवरग्रीन प्रिण्टर्स, जोधपुर # 9414128647

भाकृअनुप
ICAR

डॉ. सुशील कुमार सिंह
निदेशक
Dr. Sushil Kumar Singh
Director

भाकृअनुप-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान
(काजरी परिसर) जोधपुर - 342 005 (राज.)
ICAR-Agricultural Technology Application Research Institute
(CAZRI Campus) **Jodhpur - 342 005 (Raj.)**
(ISO 9001:2015)
Phone: +91-291-2740516, 2748412 **FAX:** +91-291-2744367
E-mail: atarijodhpur@gmail.com; zpd6jodhpur@gmail.com
Website: www.atarijodhpur.res.in

प्रस्तावना

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता क्यों हुई यह एक विचारणीय प्र न है क्योकि जीवन का आधार होने के साथ महिलाओं द्वारा मानव सभ्यता के विकास के दौरान अपने कौशल से कला और विज्ञान के संगम का अनूठा उदाहरण अपने निवास के आसपास फसलों की बुवाई करके कृषि की कला और विज्ञान का विकास किया। पलायन की समस्या मानव सभ्यता के समय से ही है क्योंकि उस समय भी पुरूष शिकार करने अपने निवास से बाहर जाते थे। मानव सभ्यता के विकास से वर्तमान दिन तक महिलाएं लगातार अपने हुनर के साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के साथ–साथ कृषि एवं अन्य उद्यमों की धुरी बनी हुई है। महिलाएँ बडी दक्षता के साथ सभी कार्य करती हैं और अपनी कार्यदक्षता से आगे बढ़ रही हैं। महिलाएँ कुशल गृहणी के साथ–साथ सफल किसान भी हैं और अपनी महारत से चुनौतियों को स्वीकार और कुशलतापूर्वक हल करती हैं। वर्तमान समय में भी इनकी बहुमुखी प्रतिभा एवं भूमिका को यथोथित पहचान, मान–सम्मान एवं मान्यता नहीं मिल पाई है। इसलिए इन्हें कई बार 'अदृ य कार्यबल की संज्ञा भी दी जाती है।

भारत की ग्रामीण महिलाओं को देश की असली 'वर्किंग वूमन' कहा जाता है। आखिर इसमें सच्चाई भी है क्योंकि देश में एक ग्रामीण पुरुष वर्षभर में औसतन 1800 घंटे खेती में काम करता है जबकि एक ग्रामीण महिला वर्ष में औसतन 3000 घंटे खेती में कार्य करती हैं। इसके अलावा वह घरेलू कार्य भी करती हैं। जहाँ भारत में लगभग 6 करोड से अधिक महिलाएँ खेती का काम संभालती हैं, वहीं दुनिया में लगभग 50 प्रतिशत कृषि कार्य करने में महिलाओं का योगदान है बावजूद उन्हें कभी खेती करने का श्रेय नहीं दिया जाता है और वे हमेशा हाशिए पर रही हैं। खेती से इतना काम एवं योगदान के बाद भी उन्हें कभी किसान नहीं माना गया है। लेकिन कुछ महिलाओं ने इस भ्रांति को तोड़कर खुद को न केवल किसान बल्कि प्रगतिशील किसान साबित किया है। गाँव में महिलाएँ किसान भी है और खेतीहर मजदूर भी और साथ में घर–परिवार संभालने वाली कु ाल ग्रहणी भी। लेकिन सामाजिक–आर्थिक रूप से और सरकारी आंकड़ों से भी महिलाओं की बहुमुखी भूमिका को यथोचित मान–सम्मान तथा मान्यता नहीं मिल पायी है।

अपने ही खेत–खलिहान में काम करने वाली महिलाओं का विभिन्न कार्यों में निर्णय लेने हेतु 10–12 प्रति ात ही भागीदारी होती है। फिर भी वर्ष 2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार भारत में कुल महिला कामगारों में से लगभग 65 प्रतिशत महिलाएँ कृषि क्षेत्र में कार्य करती हैं। देश के कुल किसानों में 30.3 प्रतिशत महिलाएँ है तथा श्रमिकों की भागीदारी 55.21 प्रतिशत आंकी गई है, जबकि देश की व्यापक कृषि अनुसंधान प्रणाली में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 17.40 प्रतिशत दर्ज किया गया है। वर्ष 2011 में हुए एक व्यापक अध्ययन में कृषि के विभिन्न उपक्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी खेत की निराई–गुड़ाई में 48 प्रतिशत, फसलों की कटाई में 45.33 प्रतिशत, कृषि उपज के भण्डारण में 42.67 प्रतिशत तथा वित्तीय

प्रबंधन में 36 प्रतिशत है। वर्ष 2014 के एक अनुसंधान की रिपोर्ट के अनुसार डेयरी क्षेत्र में 7.5 करोड़ महिलाएँ अपना योगदान कर रही हैं जबकि केवल 1.5 करोड पुरुषों का योगदान इस क्षेत्र में है। इसी तरह पशुपालन में 15 करोड़ पुरुषों के मुकाबले 2 करोड़ महिलाएँ संलग्न हैं। ऐसा नहीं है कि महिलाएँ केवल मजदूरी करती हैं, उन्हें कृषि एवं पशुपालन की बारीकियों का भी ज्ञान होता है और वे इसका बखूबी इस्तेमाल भी करती हैं। इसके अलावा उनको कुछ हद तक मछलीपालन की जानकारी भी होती है। खेतीहर मजदूर महिलाओं को अक्सर मेहनत के काम जैसे—खरपतवार निकालना, घास काटना, कपास चुनना, बिनोले से बिनोले निकालना आदि सौंपे जाते हैं। यह देखा गया है कि जिन परिवारों में महिलाएँ पशुपालन के कार्य करती हैं, वहाँ अधिक उत्पादन एवं आमदनी होती है।

अन्तरराष्ट्रीय परिदृश्य पर अनुसंधान व अध्ययन के बाद संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ) के महिला एवं जनसंख्या विभाग ने बताया कि भारत जैसे विकासशील देशों में महिलाएँ लगभग 70 प्रतिशत कृषि श्रम प्रदान करती हैं, जबकि घरेलू खाद्य उत्पादन में 60—80 प्रतिशत, खाद्य भण्डारण में 80 प्रतिशत और खाद्य वस्तुओं के प्रसंस्करण में महिला श्रम की हिस्सेदारी पूरे 100 प्रति ात है। अधिकां ा विकास ील दे ों में महिलाएँ 60—80 प्रति ात खाद्य उत्पादन की जिम्मेदारी निभा रही हैं और सम्पूर्ण वि व में लगभग आधा खाद्य उत्पादन इन्हीं मजबूत हाथों और इरादों से हो रहा है। इस तरह महिलाएँ दुनिया के लगभग हर क्षेत्र में करोड़ों लोगों की खाद्य सुरक्षा में सतत् आधार दे रही हैं। यह मजबूत द ाा तब है, जबकि महिलाएँ आमतौर पर भूमि की अधिकार और निर्णय लेने के अधिकार से वंचित हैं और अनेक सामाजिक—आर्थिक विषमताओं को झेल रही हैं।

इन विषमताओं के बावजूद भी महिलाएँ कहीं न कहीं अपने आप को साबित कर रही हैं कि वो प्रत्येक कार्य को दक्षता से परिपूर्ण कर सकती हैं। यदि देखा जाए तो इस समय महिलाएँ हर एक क्षेत्र में पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं, बल्कि कुछ क्षेत्रों में पुरूषों से आगे भी निकल रही हैं। खेती एवं प ुपालन के क्षेत्र में भी महिलाओं के कार्य एवं लगन को कमतर नहीं आंक सकते हैं। महिलाओं ने साबित कर दिया है कि वे पुरूषों से कम नहीं हैं, परन्तु इस पुरुष प्रधान दे ा में महिलाओं की सफलता को वांछित सराहना एवं बढ़ावा नहीं मिल पा रहा है। बहुत सी महिलाएं अपने कौ ाल, बुद्धमता एवं कठिन परिश्रम से विषम परिस्थितियों में भी उभर कर आयी हैं और अपनी सफलता से अन्य की प्रेरणा स्रोत बनी हैं। परन्तु उनकी सफलता मुख्यधारा की मीडिया का शायद ही कभी हिस्सा बन पाये। इसलिए हम कृषि क्षेत्र से जुड़ी चुनिंदा महिलाओं की सफलता की कुछ गाथाओं को इस पुस्तिका में संजोकर आमजन तक पहुँचाने के उद्दे य से प्रका ित कर रहे हैं। यहाँ हम इन महिलाओं के अथक प्रयत्न एवं मेहनत के साथ—साथ संबंधित कृषि विज्ञान केन्द्रों के अधिकारीगणों की ह्रदय से सराहना एवं उत्साहवर्धन करते हैं जिनके मार्गद र्शन में इन महिलाओं ने न केवल समाज में अपने आप को सफल बनाया बल्कि समाज को एक नई राह भी दिखाई है।

इस प्रका ान हेतु हम संपादकीय मंडल, संकलनकर्त्ताओं, सहयोगियों तथा महिला कृषकों को बधाई देते हैं क्योंकि इनके अथक प्रयासों से इस पुस्तिका का अवतरण होना संभव हो सका है। हमें आ ाा है कि यह पुस्तिका अन्य महिलाओं, युवाओं एवं अन्य हितधारकों के लिए मार्गद र्शी एवं उपयोगी होगी।

(सुशील कुमार सिंह)

सम्पादकीय

भारत आजादी के 75 वें वर्ष के उपलक्ष्य में भारत के प्रगत ील 75 वर्षों के 'आजादी का अमृत महोत्सव' के रूप में मना रहा है। इसमें महिलाओं के पुरजोर स क्तिकरण हेतु 'स क्त महिला स क्त राष्ट्र नारे / कार्यक्रम का प्रमोचन किया जा रहा है। महिलाओं का समाज एवं अर्थव्यवस्था में हमे ा से एक महत्वपूर्ण सहयोग एवं सार्थक योगदान रहा है। महिलाएं समाज के स्वरूप को स क्त रूप से प्रभावित करती हैं और राष्ट्र के विकास में पुरूषों के बराबर महत्व रखती हैं। भारत एक कृषि प्रधान दे है और दे की लगभग 70 प्रति त जनसंख्या आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है जिसमें से अधिकां जनसंख्या, दे की लगभग 60 प्रति त जनसंख्या, कृषि एवं संबंधित क्षेत्र की गतिविधियों में कार्यरत हैं तथा दे में कुल 60 करोड़ महिला आबादी में करीब 40 करोड़ महिलाएं अपनी आजीविका के लिए फसल, प ुपालन, वानिकी, कृषि प्रसंस्करण एवं मूल्य वर्धन तथा अन्य कृषि संबंधित व्यवसायों पर निर्भर हैं। इसके बावजूद इनका स्वामित्व जमीन और पानी जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर बहुत कम है। ग्रामीण समुदायों में, कृषि एवं संबंधित क्षेत्र आजीविका का प्राथमिक स्रोत हैं सभी आर्थिक रूप से सक्रिय लोगो में से लगभग 80 प्रति त महिलाएं अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। जिनमें से लगभग 48 प्रति त महिलाएं स्वरोजगार किसान और 33 प्रति त महिलाएं खेतिहर मजदूर हैं। महिलाएं बड़े पैमाने पर कृषि एवं सबंधित गतिविधियों में लगी हैं। भारत सरकार के सांख्यकी और कार्यक्रम कार्यन्वयन मंत्रालय की 2017 की प्रतिवेदन के अनुसार दे में ग्रामीण महिलाओं का कार्यबल 41.8 प्रति त है जबकि भाहरी महिलाओं का कार्यबल केवल 35.31 प्रति त है।

ग्रामीण महिलाएं कृषि संबंधित सभी कार्यों जैसे उत्पादन पूर्व कटाई, कटाई प चात् प्रसंस्करण, डिब्बाबंदी, विपणन आदि के साथ–साथ प ुपालन, मछली पालन, म रूम उत्पादन, वर्मीकम्पोस्टिंग, मधुमक्खी पालन आदि में प्रभावी रूप से संलग्न होकर उत्पादकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।समय के साथ कृषि क्षेत्र में प्रति व्यक्ति 'घरेलू सकल उत्पाद' में महिलाओं का योगदान पुरूषों की तुलना में अधिक मात्रा में बढ़ा हैं। ये टिकाऊ खाध प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण समुदाय हैं। खाद्य और कृषि संगठन के 2011 के अनुसार अनुमान है कि महिला उन्मुख सुधार, संसाधनों को बढ़ावा देने से विकास ील दे ों में कृषि उत्पादन में 2.5 से 4.0 प्रति त की वृद्धि होगी।

ग्रामीण महिलाएं 'नए भारत' के लिए सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण परिवर्तन की पथ प्रद क हैं। कृषि में ग्रामीण महिलाओं को स क्त बनाना और मुख्य धारा में लाना आर्थिक विकास की ओर एक प्रतिमान परिवर्तन है। यह खाद्य एवं पोषण सुरक्षा बढ़ायेगा तथा गरीबी व भूख को कम करेगा। यह वर्ष 2030 तक सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक जीत की रणनीति है।

भारत में महिलाओं के समग्र विकास के लिए सुधार कार्यक्रमों को निरूपित किया गया है जिससे कि महिलाओं को सामाजिक–आर्थिक एवं स्वास्थ्य सुरक्षा मिलने के साथ–साथ ि क्षा एवं अन्य समान अधिकार मिले। हाल ही में आत्मनिर्भर भारत के तहत कृषि कार्य में लगी महिलाओं को मुख्यधारा में लाने के लिए उनके विकास एवं ग्रामीण सेवाओं के लिए धन आवंटित किया गया हैं। अब महिलाओं के लिए ि क्षा, उत्पादक संसाधन, क्षमता विकास, कौ ल विकास, स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रयोजन के साथ–साथ विविध आजीविका अवसरों के लिए सरकारी लाभार्थी योजनाएं भी लागू की गई हैं।

कृषि जनगणना के अनुसार, 73.2 प्रति त ग्रामीण महिलाएं कृषि गतिविधियों में संलग्न हैं। परन्तु केवल 8 प्रति त महिलाओं के पास ही जमीन का स्वामित्व है। इसी प्रकार भारत मानव विकास सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार दे की 83 प्रति त कृषि भूमि पुरूष सदस्यों को परिवार से विरासत में मिली है जबकि महिलाओं को केवल 2 प्रति त भूमि ही उत्तराधिकार में मिली हैं। साथ ही महिलाओं को वे अधिकार प्राप्त नहीं हैं जो उन्हें एक कृषक के रूप में होने चाहिए। महिलाओं को किसानों के रूप में मान्यता न मिलना उनकी समस्याओं का केवल एक पहलू है। महिला किसान मंच (MAKAAM) के अनुसार उन्हें भूमि, जल और जंगलों पर अधिकार के मामलों में अत्यधिक असमानता का सामना करना पड़ता है। इन सबके बावजूद भी महिलाएं कृषि एवं संबंधित क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहीं हैं। और यदि कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी की बात करें तो चाय बागानों में लगभग 47 फीसदी, कपास की खेती 46 फीसदी, तिलहन की खेती में 45 फीसदी, सब्जी उत्पादन में

39 फीसदी महिलाएं कार्यरत हैं। जबकि लगभग 21 प्रति   ात महिलाएं मछुआरों का काम करती हैं और 24 प्रति   ात महिलाएं मछली उत्पादक है। यह एक निर्विवाद तथ्य माना जाता है कि भारतीय कृषि उद्योग में 8 से 10 करोड़ महिलाएं कार्यरत है और यह क्षेत्र महिलाओं के बिना नहीं चल सकता। खेती के लिए जमीन तैयार करने से लेकर बीज चुनने, उन्हें बोने/पौध रोपने, निराई–गुड़ाई, खाद–उर्वरक–कीटना   ाक देने और कटाई–मड़ाई तक में महिलाओं का योगदान रहता है। वहीं प   ुपालन, मत्स्य पालन और सब्जियों आदि की खेती–बाड़ी अधिकां   ातः महिलाओं पर निर्भर है। इसके बावजूद उन्हें कोई वि   ोष श्रेय नहीं मिलता है। भारत को प्रगत   ील बनाने के लिए ग्रामीण भारत का विकास करने की जरूरत है। इसमें कोई अति   योक्ति नहीं है कि ग्रामीण भारत एवं किसान के विकास के बिना भारत का विकास संभव नहीं हैं और ये भी सर्वविदित है कि किसी भी दे   ा का वास्तविक विकास वहाँ की महिलाओं के विकास का प्रतिबिम्ब होता है क्योंकि महिला पूर्णरूपेण विकास की मुख्य एवं टिकाऊ स्तम्भ होती हैं। आज दे   ा की महिलाएं हर क्षेत्र में बढ़–चढ़ कर भाग ले रही हैं और अपनी कार्यकु   ालता, कार्यक्षमता, उत्साह, एवं लगनता से तरक्की कर नाम रो   ान कर रही हैं। इनकी मेहनत, लगन, कार्यकु   ालता, कार्यक्षमता एवं उत्साह की वजह से कृषि क्षेत्र में भी ये नये–नये आयाम स्थापित कर दे   ा की अर्थव्यवस्था एवं रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इस संदर्भ में हमने राजस्थान एवं हरियाणा राज्य की कुछ चुनिंदा महिला कृषकों की सफलता की गाथाएं इस पुस्तिका में वर्णित की हैं। हमें वि   वास है कि इन कृषक महिलाओं की सफलता की गाथाओं को पढ़कर–जानकर अन्य कृषक एवं बेरोजगार युवा कृषि एवं संबंधित क्षेत्र को न केवल अपनी आजीविका का जरिया बनायेंगें बल्कि नये आयाम स्थापित कर दे   ा की कृषि अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

हम इस महिला कृषकों की सफलता की गाथा पुस्तिका को तैयार करने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से दिये गये सहयोग एवं सानिध्य के लिए सभी महानुभावों का आभार प्रकट करते हैं, जिनके कृतित्व से प्रका   ान में संदर्भ ग्रहण किए गये हैं।

हम सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, भारत सरकार एवं महानिदे   ाक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, डॉ. त्रिलोचन महापात्रा के हृदय से अति आभारी हैं। इस संदर्भ में हम उप महानिदे   ाक (कृषि प्रसार), डॉ. ए.के. सिंह के प्रति हृदय से आभारी एवं कृतज्ञ हैं जिनके अतुल्य संरक्षण की वजह से हम इस पुस्तिका को प्रकाि   ात करने में सक्षम हो सके। जिनके मूल्यवान, अतुलनीय सुझाव एवं अप्रतिम सहयोग सुलभ व उपलब्ध रहे हैं।

हम डॉ. सु   ील कुमार सिंह, निदे   ाक, भा.कृ.अनु.प.–कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन–।। जोधपुर के बहुत आभारी हैं क्योंकि इनके सहयोग, मूल्यवान सुझाव, मार्गद   ान के बिना इस पुस्तिका को पूरा करना असम्भव था।

हम इस संस्थान के सभी वैज्ञानिकगण (डॉ. पी.पी. रोहिल्ला, डॉ. बी.एल. जांगिड़, डॉ. एम.एस. मीना, डॉ. एच.एन. मीना), प्र   ाासनिक एवं वित्त अधिकारीगण (श्री नरपत सिंह गहलोत, श्री प्रका   ा विमल, श्री राजेन्द्र बेन्दा, श्री मुके   ा कुमार त्रिपाठी), तकनीकी अधिकारी (श्री पी.के. सतपथी, श्री रामनिवास) एवं प्रोजेक्ट स्टाफ (डॉ. (सुश्री) सरोज चौधरी, श्री भवानी सिंह ईंदा, श्री प्रीतम, श्री अभिषेक, श्री पार्थ पाण्डेय, श्री भीम सैन, श्री ओम प्रकाश कॉंटवा, श्री दिलीप मातवा, श्री महेन्द्र कुमार सैन, सुश्री अनुराधा चौधरी, सुश्री रेखा मीणा) एवं अन्य सभी जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस पुस्तिका के अवतरण में सहयोग एवं सानिध्य दिया है उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

अंत में प्रमुख रूप से हम कृषि विज्ञान केन्द्र के उन सभी प्रमुखों एवं उनके सहकर्मियों तथा कृषक महिलाओं को उनके अतुलनीय सहयोग एवं सानिध्य एवं इस पुस्तिका में अवतरित सफल गाथाओं के वास्तविक रूप में संकलित करने के अवस्मरणीय कार्य के लिए हम सहृदय से धन्यवाद देते हैं और आभार प्रकट करते हैं।

हमने इस पुस्तिका को त्रुटिरहित करने का भरकस प्रयत्न किया है फिर भी सुधी पाठकों से सानुरोध है कि पुस्तिका में अवलोकित त्रुटियों एवं अपने सुझावों से हमें अव   यमेव अवगत कराने का कष्ट करें जिससे भविष्य में तदनुसार सुधार सम्भव हो सके।

(संपादक मण्डल)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से विकास की राह पर	1
2.	मशरूम अचार बनाकर उद्यमी बनी महिला कृषक	3
3.	सब्जी प्रसंस्करण से महिला कृषक बनी एक सफल उद्यमी	5
4.	प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से विकास की राह पर	7
5.	महिला कृषक ने बनाया मशरूम उत्पादन को एक सफल उद्यम	9
6.	प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से विकास की राह पर	11
7.	जैविक कृषि प्रणाली की डगर-समृद्धि की ओर	13
8.	समन्वित कृषि प्रणाली ने खोले आमदनी के द्वार	15
9.	समन्वित कृषि प्रणाली के संग उन्नत किस्मों ने दिखाया प्रगति का पथ	17
10.	जैविक पोषण वाटिका बनी उत्तम स्वास्थ्य का आधार	19
11.	प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से विकास की राह पर	21
12.	पोषण वाटिका व मूल्य संवर्धन से महिला की बनी पहचान	23
13.	जैविक खेती से बनी महिला कृषक की पहचान	25
14.	हौंसले की मंजुला किसान बनी प्रेरणा स्रोत	27
15.	देशी गौवंश एवं दुग्ध उत्पादन ने बदली जीवन की तस्वीर	29
16.	आय सृजन का स्रोत : फल-सब्जी मूल्य संवर्धन एवं परिरक्षण	31
17.	बागवानी आधरित कृषि प्रणाली को अपना कर महिला कृषक बनी उद्यमी	33
18.	समन्वित खेती बनी महिला सशक्तिकरण का आधार	35
19.	एम.बी.ए. पास कविता ने वर्मीकम्पोस्टिंग को बनाया उद्यम	37
20.	शुष्क क्षेत्र में बागवानी द्वारा महिला कृषक की प्रगति की राह बनी आसान	39
21.	जैविक गेहूँ उत्पादन नें बढ़ायी आमदनी	41
22.	प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से विकास की राह पर	43

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
23.	पशुपालन बना आय का भरपूर स्रोत	45
24.	पोषण वाटिका एवं मूल्य संवर्धन बना पोषण एवं आय का आधार	47
25.	जैविक खेती से बदली खेती की तस्वीर एवं महिला कृषक की तकदीर	49
26.	सिलाई बना महिला कृषक के विकास का पथ	51
27.	समन्वित कृषि प्रणाली से महिला कृषक ने पायी समृद्धि	53
28.	बागवानी-पशुपालन से किया रोजगार सृजन	55
29.	मूल्य संवर्धन बना महिला कृषक की आय का आधार	57
30.	पोषण वाटिका-सन्तुलित आहार का आधार	59
31.	समन्वित कृषि प्रणाली ने खोले महिला कृषक के लिए समृद्धि के द्वार	61
32.	मशरूम उत्पादन से स्वावलम्बन की ओर	63
33.	सब्जी-फल मूल्य संवर्धन एवं हस्त शिल्पकारी ने दिया स्वरोजगार	65
34.	खाद्य प्रसंस्करण सें महिला स्वयं सेवा समूह बने सफल उद्यमी	68
35.	बागवानी में टंपकन सिंचाई बनी महिला कृषक के लिए एक वरदान	71
36.	विकास के रंग जैविक खेती के संग	73
37.	जैविक कृषि बनी महिला कृषक के विकास का पथ	76
38.	जैविक सब्जी उत्पादन से बढ़ी खुशहाली	78
39.	घरेलू महिला से सफल डेयरी उद्यमी की ड़गर पर	80
40.	डेयरी-सह किचन गार्डनिंग ने बनाया आत्मनिर्भर	83
41.	कपास का संकर बीज उत्पादन बना महिला कृषक की सम्पन्नता का साधन	85
42.	अंतरफसलीय जैविक खेती से बनी सफल महिला कृषक	87

1 कृषि विज्ञान केन्द्र - अजमेर

प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से विकास की राह पर

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती सुनीता माली**
पति	:	श्री नन्द राम माली
आयु	:	35 वर्ष
शिक्षा	:	8 वीं पास
पता	:	गाँव– देवनगर, पुष्कर, अजमेर
फोन नं.	:	9413042657
सफलता का क्षेत्र	:	मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण
प्रेरणा का स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, अजमेर (राज.)

पृष्ठ भूमि

ग्रामीण महिला भी हर एक क्षेत्र में पुरुषों से कन्धे से कन्धा मिलाकर घर परिवार को आर्थिक सम्बल प्रदान कर रही हैं। अजमेर जिले के छोटे से गांव देवनगर की श्रीमती सुनिता माली ने अपने आपको साबित भी किया है। वे पति के खेती कार्य में सहयोग कर घर की आय को बढ़ाकर आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान कर रही हैं। पति द्वारा खेतों में उत्पादित आंवला, जामुन एवं गुलाब से अच्छा बाजार मूल्य नहीं मिलने पर श्रीमती सुनिता माली ने उनका प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन कर विक्रय करने का बीड़ा उठाया। इसी कड़ी में कृषि विज्ञान केन्द्र, अजमेर के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष से संपर्क कर आंवला, गुलाब के परीरक्षण, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर प्रि क्षण एवं सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर आंवला, जामुन एवं गुलाब के विभिन्न उत्पादों में महारत हासिल की।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, अजमेर द्वारा प्रि क्षण व तकनीकी सहयोग के साथ ही एफ.पी.ओ. गठन हेतु प्रेरित करने पर पुष्कर ग्रामीण कृषि युवा एवं एम्पलोयमेंट किसान उत्पादक कम्पनी नामक एफ.पी.ओ. का गठन किया। इस हेतु नाबार्ड का भी तकनीकी एवं वित्तीय सहयोग रहा।

सफलता का विवरण

क्षेत्र के आंवला, जामुन एवं गुलाब उत्पादक किसान परिवारों को आर्थिक मजबूती प्रदान करने हेतु एफ.पी.ओ. में निदे क की अग्रणी भूमिका में 510 कृषकों को एफ.पी.ओ के सदस्य बनाकर उनके उत्पाद क्रय कर उनका मूल्य संवर्धन कर विपणन कर इन सदस्यों को बोनस प्रदान करवाया। एफ.पी.ओ. गठन कर कम लागत में आदान व्यवस्था की जिससे सदस्यों की उत्पादन लागत कम हुई।

कृषि विज्ञान केन्द्र अजमेर द्वारा सभी सदस्यों को प्रि क्षण के माध्यम से आंवला एवं गुलाब की उन्नत उत्पादन हेतु तकनीकी जानकारी प्रदान करवायी। वर्ष 2021–22 में पुष्कर ग्रामीण कृषि युवा एवं एम्पलोयमेंट किसान उत्पादक कम्पनी का कारोबार कुल रु 10849905.00 रहा।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1.	गुलकन्द बनाना	2842780.00	3235930.00	393150.00
2.	गुलाब जल	1641532.00	1805338.00	163806.00
3.	आंवला मुरब्बा, केन्डी, पाउडर	2436000.00	2542960.00	106960.00
4.	शरबत (गुलाब, आंवला, जामुन)	3060540.00	3136842.00	76302.00
5.	जामुन शेंड	110546.00	128835.00	18289.00
	कुल	**10091398.00**	**10849905.00**	**758507.00**

सफलता का असर

श्रीमती सुनीता माली के प्रयास से गुलाब एवं आंवला उत्पादक किसानों को औसतन रु 15.00 प्रति किलोग्राम का भाव अधिक मिला। पुष्कर ग्रमीण कृषि युवा एवं एम्पलोयमेंट किसान उत्पादक कम्पनी समूह के 510 सदस्यों की आमदनी में इजाफा हुआ व परोक्ष रुप से 8 गांव के लगभग 2000 आंवला एवं गुलाब उत्पादक किसानों को अपने उत्पादों का अच्छा मूल्य मिला। श्रीमती माली के श्रेयकर कार्यों को पहचान देते हुए दयानन्द महाविद्यालय, अजमेर द्वारा महिला दिवस पर इन्हें महिला गौरव सम्मान एवं प्रतिष्ठित होंडा कम्पनी द्वारा कृषि क्षेत्र में कृषि उद्यमी सम्मान से नवाजा गया।

क्षेत्र में योगदान

क्षेत्र की पहचान आंवला, गुलाब के विभिन्न उत्पादों जैसे सादा गुलकंद, शहद गुलकंद, चटपटा गुलकंद, केसर गुलकंद, पान गुलकंद, गुलाब जल, गुलाब शरबत, गुलाब चिप्स, गुलाब चाय, आंवला मुरब्बा, आंवला कैंडी, आंवला जूस, जामुन चिप्स, केसर शरबत, खसखस शरबत इत्यादि को एफ.पी.ओ. के माध्यम से प्रसिद्धि मिली। इसी कड़ी में नाबार्ड एवं कृषि विज्ञान केन्द्र अजमेर के सहयोग से समूह एवं समूह के उत्पादों को व्यापक स्तर पर पहचान दिलाने हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र अजमेर पर विक्रय केन्द्र स्थापित किया गया।

संकलनकर्ता
डॉ. डी.एस. भाटी एवं डॉ. रमाकान्त शर्मा
कृषि विज्ञान केन्द्र, अजमेर (राज.)

2 कृषि विज्ञान केन्द्र - अलवर-I

मशरूम अचार बनाकर उद्यमी बनी महिला कृषक

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती सुनीता देवी**
पति का नाम	:	श्री सूरज भान
उम्र	:	40 वर्ष
शिक्षा	:	8वीं
पता	:	ग्राम–भयामपुरा, तहसील–बानसूर जिला–अलवर (राजस्थान)
सफलताका क्षेत्र	:	मशरुम प्रसंस्करण / अचार बनाना
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, अलवर– I (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती सुनीता देवी लॉकडाउन में पति के टेण्ट का रोजगार खत्म होने के कारण घर पर पति के साथ म ारुम की खेती में हाथ बटाने लगी। पति श्री सूरज भान की अनुपस्थिति में म ारुम की देखभाल करने की जिम्मेदारी धीरे–धीरे अपने कंधों पर कब ले ली इसका पता ही नहीं लगा और जब लॉकडाउन में ताजी म ारुम की बिक्री कम व नहीं होने पर इसके अचार बनाने को सोचने लगी। इसके लिए श्रीमती सुनीता देवी ने केन्द्र के वि ोषज्ञों से मिलकर अचार बनाने के बारे में जानकारी प्राप्त की। अचार बनाना सीखने के बाद वर्ष 2020 में सुनीता देवी ने 200 किलोग्राम म ारुम से 1 क्विंटल म ारुम का अचार तैयार किया जिसमें 25500 रुपये खर्च हुए। अचार को 350–400 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव से आसपास के गांव में बेचा जिससे कुल आमदनी 35000 रुपये प्राप्त हुई। इस तरह श्रीमती सुनीता देवी को 9500 रुपये भाुद्ध लाभ हुआ। अब श्रीमती सुनीता देवी अपने पति के साथ म ारुम उत्पादन व अचार बनानें का काम केन्द्र के वि ोषज्ञों के सहयोग से कर रही हैं।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, गूंता, बानसूर, अलवर के द्वारा क्षेत्र के किसानों, युवाओं, महिला किसानों व अन्य सभी के लिए कृषि, बागवानी व प ाुपालन के अलावा स्वरोजगार हेतु म ारुम व सब्जी प्रसंस्करण इत्यादि विषयों पर कार्ययोजना के अनुसार प्रि ाक्षण देते रहते हैं। लेकिन कोविड–19 के कारण दे ा में हुए लॉकडाउन के दौरान भी केन्द्र के वि ोषज्ञों द्वारा टेलीफोन, व्हाट्सएप संदे ा, वीडियो कॉल के माध्यम से या जरुरत के हिसाब उनके घर पर जाकर बताते रहते हैं। श्रीमती सुनीता देवी व अपने पति के साथ भी जरुरत के अनुसार केन्द्र पर भी आ जाते हैं। इस तरह से श्रीमती देवी प्रति वर्ष म ारुम आचार बनाकर बेच रही हैं। केन्द्र के पौध संरक्षण वि ोषज्ञ डॉ. सुनील कुमार के परामर्श पर म ारुम उत्पादन करने से बचे कम्पोस्ट खाद को खेतों में डालकर सब्जी की खेती भी कर रही हैं। इस तरह ये अपने पति के साथ मिलकर प्रति वर्ष लगभग 3–4 लाख रुपये कमाई कर रही हैं।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र, गूंता, बानसूर से जानकारी प्राप्त करने के बाद श्रीमती सुनीता लगातार 3 वर्षों से म ारुम अचार बनाने, म ारुम उत्पादन के अलावा, जाड़े में फूलगोभी, पत्ता गोभी एवं ब्रोकली सब्जी व जायद में तरबूज व खरबूज की खेती 0.25 हेक्टेयर में

करके 75–80 हजार रूपये प्रति वर्ष अतिरिक्त आय हो रही है जबकि पहले इसी जमीन से मात्र 20–25 हजार रूपये प्रति वर्ष आय हो रही थी। केन्द्र की सलाह पर श्रीमती सुनीता जी अपने म ारुम अचार, ऑस्टर म ारुम पाउडर व अपने छोटी सी जोत पर वैज्ञानिक तरीके से खेती कर अच्छी कमाई कर रही हैं।

आमदनी

उद्यम / गतिविधि	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	आमदनी (रू)
1. मिर्च	11750.00	47250.00	35500.00
1. खीरा	22200.00	63000.00	40800.00
3. ब्रोकली, गोभी व पत्ता गोभी	22500.00	92000.00	69500.00
4. मूल्य संवर्धन (मशरुम अचार व पाउडर)	90500.00	157500.00	75000.00
कुल	**146950.00**	**359750.00**	**220800.00**

सफलता का असर

श्रीमती सुनीता देवी अपनी कृषि गतिविधियों एवं अन्य कृषि कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के लिए दूसरी कृषक महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और वे अब एक प्रगति ील महिला किसान के रूप में क्षेत्र में जानी जाती है। श्रीमती सुनीता देवी के अचार लोग घर से ही ले जाते हैं या अग्रिम बुकिंग कर बनवाते हैं। श्रीमती देवी जी ने अपने पति के साथ मिलकर 2021 के किसान मेले में स्टॉल लगाने पर श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि वि वविद्यालय, जोबनेर नें प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इनका नाम अब क्षेत्र के लोगों में एक प्रेरणा स्रोत के रुप में जाना जाता है।

क्षेत्र में योगदान

बनसूर एवं आसपास के क्षेत्रों में लगभग 80 प्रति त किसान श्रीमती सुनीता देवी के प्रयासों के कारण अचार बनाने का अनुसरण कर रहे हैं। म ारुम अचार बनाने के काम के प्रति इनके समर्पण एवं विभिन्न क्षेत्रों में सक्रियता के कारण इनको अचार बेचने में कोई दिक्कत नहीं होती क्योंकि उनके उत्पाद आसपास के महिला समूह के द्वारा खरीद लिए जाते हैं। वर्ष 2021 के किसान मेले में पति के साथ स्टॉल लगाने पर इनको श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि वि वविद्यालय जोबनेर ने प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। श्रीमती देवी कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित पोषण दिवस व अन्य किसान मेले में भी स्टॉल लगाती रहती हैं जिससे इन्हें क्षेत्र में बहुत लोग जानने लगे हैं। इन सब से ऊपर, आज इनके पास एक बड़ा ग्राहक आधार है जो नियमित रूप से इनके जीवकोपार्जन व बेहतर जिन्दगी में मददगार साबित हो रहा है। श्रीमती सुनीता जी की क्षेत्र के दूसरी महिला कृषकों के लिए एक उद्यम / व्यवसाय के रूप में काम करने की प्रेरणा स्रोत हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. सुशील कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
डॉ. सुनील कुमार, पौध संरक्षण विशेषज्ञ
केवीके गूंता बानसूर, अलवर, (राज.)

3 कृषि विज्ञान केन्द्र - अलवर-II

सब्जी प्रसंस्करण से महिला कृषक बनी एक सफल उद्यमी

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती रेशमी देवी**
पति का नाम	:	श्री पप्पूराम
उम्र	:	45 वर्ष
शिक्षा	:	तीसरी (3)
पता	:	ग्राम–भयामपुरा, तहसील–बानसूर जिला–अलवर (राजस्थान)
सफलता का क्षेत्र	:	सब्जी प्रसंस्करण / अचार बनाना
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, अलवर– ।। (राज.)

पृष्ठभूमि

लॉकडउन में पति के रोजगार खत्म होने के कारण घर की स्थिति धीरे–धीरे खराब होने लगी तो सोचा कि अगर हम घर पर बैठे रहे तो हमें भूखे सोना पड़ सकता है। फिर इन्हें कृषि विज्ञान केन्द्र के बारे में जानकारी मिली। श्रीमती रे मी देवी केन्द्र के वि षज्ञों से मिलकर अचार बनाने के बारे में जानकारी प्राप्त की। काम सीखने के बाद वर्ष 2020 में रे मी देवी ने 1 क्विंटल नींबू का मीठा व 50 किलोग्राम मिर्च का अचार बनाया जिसमें 14200 रुपये खर्च हुए। अचार को उन्होंने आसपास के गांवों में बेचा जिससे 21600 रुपये प्राप्त हुए। इस तरह भुद्ध आमदनी 7400 रुपये हुए। इस तरह श्रीमती रे मी देवी अपने पति के साथ एवं केन्द्र के वि षज्ञों के सहयोग से काम को बढ़ाती चली गई।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, गूंता, बानसूर, अलवर के द्वारा क्षेत्र के किसानों, युवाओं, महिला किसानों व अन्य सभी के लिए कृषि, बागवानी व प ुपालन के आलावा स्वरोजगार हेतु म ारुम व सब्जी प्रसंस्करण इत्यादि विषयों पर कार्ययोजना के अनुसार प्रि ाक्षण देते रहते हैं। लेकिन कोविड–19 के कारण दे ा में हुए लॉकडाउन के दौरान भी केन्द्र के वि षज्ञों द्वारा टेलीफोन, व्हाट्सएप संदे ा, वीडियो कॉल के माध्यम से या जरुरत के हिसाब अनके घर पर जाकर बताते रहते थे। श्रीमती रे मी देवी व उनके पति भी अपने जरुरत के अनुसार केन्द्र पर भी आ जाते थे। इस तरह से श्रीमती रे मी देवी आज के समय में प्रति वर्ष 32–35 क्विंटल (नींबू, आम, गाजर, लेसुआ व मिर्च) अचार बनाकर बेच रही हैं जिससे उनको लगभग प्रति वर्ष 1.5 लाख से 2.0 लाख रूपये की भुद्ध आय हो रही है।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र, गूंता, बानसूर से जानकारी प्राप्त करने के बाद श्रीमती रे मी जी लगातार 3 वर्षों से खेती बाड़ी के साथ

अचार बनाने का काम कर रही हैं और प्रति वर्ष मौसमी फल—सब्जियां (नींबू, आम, गाजर, लेसुआ, आंवला, कच्ची हल्दी, करेला, लहसुन व मिर्च आदि) का 32—35 क्विंटल अचार बनाकर बेच रही हैं जिससे उनको लगभग प्रति वर्ष 1.5 लाख से 2.0 लाख रूपये की भुद्ध आय हो रही है। केन्द्र की सलाह पर इन्होंने अपने अचार का नाम भी रखा है – "बालाजी अचार भण्डार", खेड़ा (यामपुरा)।

उद्यम / गतिविधि	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध आमदनी (रू)
1. बाजरा	5600.00	22770.00	17170.00
2. गेहूँ	15900.00	34340.00	18440.00
3. गाय	48100.00	100800.00	52700.00
4. मूल्य संवर्धन (अचार)	213000.00	360000.00	147000.00
कुल	**282600.00**	**517910.00**	**235310.00**

सफलता का असर

श्रीमती रे   मी देवी अपनी कृषि गतिविधियों एवं अन्य कृषि कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के वजह से अन्य कृषक महिलाओं की प्रेरणा स्रोत हैं और वे अब एक प्रगति   ील महिला किसान के रूप में जानी पहचानी जाती हैं। इनके अचार लोग उनके घर से ही ले जाते हैं या अग्रिम बुकिंग कर बनवाते हैं। ये बालाजी अचार भण्डार खेड़ा (यामपुरा) के नाम से कृषि मेले में स्टॉल भी लगाती हैं। साथ ही वह अब क्षेत्र के लोगों के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रुप में जानी जाती हैं।

क्षेत्र में योगदान

बनसूर एवं आसपास के क्षेत्रों में लगभग 80 प्रति   ात किसान श्रीमती रे   मी देवी के प्रयासों के कारण अचार बनाने का अनुसरण कर रहे हैं। अचार बनाने के काम के प्रति इनके समर्पण एवं विभिन्न क्षेत्रों में सक्रियता के कारण अचार बेचने में कोई दिक्कत नहीं होती एवं आसपास के महिला समूह के द्वारा भी खरीद लिए जाते हैं। इन्हें केन्द्र के द्वारा पोषण दिवस (2021) के अवसर पर सम्मानित भी किया जा चुका है। इन सब से ऊपर, आज रे   मी देवी के पास एक बड़ा ग्राहक आधार है जो नियमित रूप से इनके जीवनोपार्जन व बेहतर जिन्दगी में मददगार साबित हो रहा है जोकि क्षेत्र के दूसरी महिला कृषकों का अचार बनाने के उद्यम को व्यवसाय के रूप में काम करने की प्रेरणा देता है।

संकलनकर्ता
डॉ. सुशील कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष

4 कृषि विज्ञान केन्द्र - बांसवाड़ा

प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से विकास की राह पर

कृषक का विवरण

नाम	:	***श्रीमती देवकला बुनकर***
पति का नाम	:	श्री सुरे ा बुनकर
आयु	:	32 वर्ष
शिक्षा	:	10वीं
पता	:	बुनकर मौहल्ला , गांव–बोरवट जिला–बांसवाड़ा (राजस्थान)
फोन नंबर	:	9602605080
सफलता का क्षेत्र	:	सिलाई–कढ़ाई
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, बांसवाड़ा (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती देवकला को भाुरू से ही सिलाई में रूचि थी साथ ही वह 10 वीं पास थीं। वह लम्बे समय से कृषि विज्ञान केन्द्र, बांसवाड़ा से सिलाई व प्रसंस्करण के प्रि ाक्षण ले रही थीं लेकिन अब तक कोई कार्य भाुरू नहीं किया था क्योंकि बच्चे छोटे होने के कारण वह घर से बाहर जाकर काम नहीं कर पा रही थीं। संयुक्त परिवार होने की वजह से घर के काम में ही पूरा दिन निकल जाया करता था।

तकनीकी हस्तक्षेप

इसी संदर्भ में श्रीमती देवकला कृषि विज्ञान केन्द्र, बांसवाड़ा की डॉ. रि म दवे से मिलीं और अपनी समस्या से अवगत कराया तो उन्होंने श्रीमती बुनकर को मार्गद र्ान देते हुए घर से ही व्यवसाय प्रारम्भ करने की सलाह दी व सिलाई–कढ़ाई का व्यवसायिक प्रि ाक्षण देकर इन्हें इस कार्य में निपुण बनाया।

सफलता का विवरण

प्रारम्भ में श्रीमती देवकला ने सिलाई कार्य भाुरू किया व उन पैसों से सिलाई म ाीन में मोटर लगवा कर काम किया। धीरे–धीरे उन्होंने घर के बाहर साड़ी स्टोर खोल दिया और उनका साड़ी स्टोर तेजी से चलने लगा। जो ग्राहक साडी खरीदते हैं उसका फॉल लगाना, ब्लाउज सिलना व पेटीकोट सिलने का कार्य भी दुकान में ही किया जाता है।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध लाभ (रू)
1.	सिलाई कला	2000.00	28000.00	26000.00
2.	साडी स्टोर	23000.00	60000.00	47000.00
	कुल	**25000.00**	**88000.00**	**73000.00**

सफलता का असर

अब श्रीमती देवकला आत्मवि   वासी महिला बन चुकी हैं व अन्य ग्रामीण महिलाओं के लिये प्रेरणा स्रोत हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र के सहयोग से इनका ज्ञानवर्धन तो हुआ ही साथ ही कौ   ाल विकास व प्रगति की ओर रवैया भी विकसित हुआ। अब समाज में उसकी प्रतिष्ठा एक सफल महिला उद्यमी के रूप में है और वह सक्रिय रूप से परिवार कि आर्थिक स्थिति में सहयोग कर रही हैं।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती देवकला बुनकर ने आस पास के गांवों की सभी महिलाओं को सिलाई सिखाकर आत्मनिर्भर बनने हेतु प्रोत्साहित किया है। वह अपने स्टोर के साथ अन्य महिलाओं को भी किसी ना किसी काम में जोडने के लिये हमे   ाा प्रयासरत रहती हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. भैरूसिंह भाटी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी
डॉ. रश्मि दवे, तकनीकी सहायक
कृषि विज्ञान केन्द्र, बांसवाड़ा (राज.)

5 **कृषि विज्ञान केन्द्र - अंता-बारां**

महिला कृषक ने बनाया मशरुम उत्पादन को एक सफल उद्यम

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती अन्तिमा महावर**
पति का नाम	:	श्री हेमराज महावर
उम्र	:	24 वर्ष
षिक्षा	:	स्नातक
पता	:	ग्राम–बरडिया, विकास/तहसील–अन्ता जिला–बारां (राजस्थान)
सफलता का क्षेत्र	:	म ारूम
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, अन्ता–बारां (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती अन्तिमा एक ग्रामीण महिला हैं। अपनी स्नातक उपाधि पूर्ण होने के बाद नौकरी के लिए उन्होंने काफी प्रयास किये, लेकिन सफलता नहीं मिली। उनके ससुराल पक्ष में सभी पुरूष मजदूरी का कार्य करते हैं। श्रीमती अन्तिमा के घर में खेती हेतु भी कम जमीन (0.5 हे.) उपलब्ध थी। अतः वह एक ऐसा रोजगार करना चाहती थीं, जिसमें जमीन की आव यकता कम हो और आमदनी अधिक हो सके। इस संदर्भ में उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, अन्ता–बारां की वैज्ञानिक सुश्री गीतिका भार्मा एवं एन.टी.पी.सी., अन्ता के अधिकारी सुश्री संजोद से सम्पर्क किया और इन संस्थानों से उन्होंने म ारूम उत्पादन प्रि ाक्षण में भाग लिया। प्रि ाक्षण के दौरान म ारूम उत्पादन की समुचित जानकारी प्राप्त कर ज्ञान अर्जित किया साथ ही में म ारूम उत्पादन में प्रयोगात्मक प्रि ाक्षण भी प्राप्त कर दक्षता हासिल की।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, अन्ता–बारां में श्रीमती अन्तिमा को कृषि एवं म ारूम उत्पादन संबंधित विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकों पर प्रि ाक्षित कर दक्षित किया। तत्प चात् श्रीमती अन्तिमा ने कृषि विज्ञान केन्द्र, के विषय वि ोषज्ञों एवं एन.टी.पी.सी., अन्ता के अधिकारी के तकनीकी पर्यवेक्षण एवं मार्गद िन में वर्ष 2022 से म ारूम खेती करनी भाुरू की। अब वे म ारूम का उत्पादन कर रही हैं।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र, अन्ता–बारां एवं एन.टी.पी.सी., अन्ता के लाभकारी प्रि ाक्षण से ज्ञान एवं दक्षता हासिल करके, श्रीमती अन्तिमा ने ऑयस्टर म ारूम का उत्पादन शुरू किया, जिसे उन्होंने एन.टी.पी.सी., अन्ता मार्ट एवं सामान्य बाजार में भिजवाना भाुरू किया। इस प्रकार म ारूम उत्पादन से रू. 53080, 5 बकरी इकाई से रू. 9100, कपडे की सिलाई से 6400 व जैविक सब्जी उत्पादन से रू. 47620 आमदनी प्राप्त करके अपने घर का खर्चा चलाती हैं। उनकी कुल आमदनी रू 116200 प्रतिवर्ष प्राप्त होने से घर में

खु ाहाली रहती है तथा अपने परिवार का भरण–पोषण जैविक सब्जी उत्पादन से भी कर लेती हैं।

गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध लाभ (रू)
मशरूम	15480.00	68560.00	53080.00
बकरी (5)	4700.00	13800.00	9100.00
सिलाई	3600.00	10,000.00	6400.00
जैविक सब्जी उत्पादन (0.1 हे.)	4380.00	52000.00	47620.00
कुल	**28160.00**	**52000.00**	**116200.00**

सफलता का असर

श्रीमती अन्तिमा अपनी कृषि में नये विचार एवं नई सोच के साथ अन्य कृषि कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। अन्य कृषक महिलाओं के लिए श्रीमती अन्तिमा प्रेरणा स्रोत हैं और वे अब एक प्रगति ील महिला किसान के रूप में जानी पहचानी जाती हैं।

क्षेत्र में योगदान

बरडिया के स्वयं सहायता समूह की महिलायें श्रीमती अन्तिमा के प्रयासों के कारण म ारूम उत्पादन का कार्य करना चाहती हैं। म ारूम की खेती के प्रति इनकी रूचि एवं समर्पण से विभिन्न क्षेत्रों में सक्रियता के लिए इन्हें कृषि विज्ञान मेला 2022 में प्र ांसा पत्र से सम्मानित किया गया है।

श्रीमती अन्तिमा म ारूम खेती को एक सफल व्यवसाय के रूप में करने के लिए कई महिला किसानों की एक प्रेरणा स्रोत हैं साथ ही वह जैविक खेती के साथ विकास के पथ का एक आद ी उदाहरण हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. गीतिका शर्मा
वस्तु वि ोषज्ञ, (गृह विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, अन्ता–बारां (राज.)

6 कृषि विज्ञान केन्द्र - बाड़मेर-I

प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से विकास की राह पर

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती अन्नू कंवर**
पति का नाम	:	श्री भीखदान
आयु	:	40 वर्ष
शिक्षा	:	8 वीं पास
पता	:	गांव अलसाणियों की ढाणी, भिंयाड, ि ाव जिला–बाड़मेर 344701 (राजस्थान)
फोन नंबर	:	707320899
सफलता का क्षेत्र	:	बागवानी
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र बाड़मेर–I (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती अन्नू कंवर पत्नी श्री भीखदान गाँव भियाड की एक साधारण ग्रहणी हैं। श्रीमती अन्नू कंवर घर के कार्य के साथ–साथ पारम्परिक खेती का कार्य भी करती थीं। लेकिन 14 एकड भूमि से उनको लगभग 2–3 लाख की आमदनी प्राप्त हो रही थी। पारम्परिक खेती से वह संतुष्ट नहीं थीं। इस कारण मुनाफा कम होता देख खेती में बदलाव को लेकर सोच में पड़ गईं। उन्हीं दिनों में उन्होंने अखबार में पढा कि कृषि विज्ञान केन्द्र में अनार उत्पादन संघ के सयोग से मेले का आयोजन हो रहा हैं जिसमें अनार उत्पादक कृषकों के साथ भारतीय अनार अनुसंधान केन्द्र, सोलापुर के बड़े–बड़े वैज्ञानिक भाग लेंगे जिसमें अनार उत्पादन से लेकर विपणन तक चर्चा की जायेगी। श्रीमती अन्नू कंवर ने भी अपने पति श्री भीखदान के साथ इस अनार मेले में भाग लेने का मानस बनाया तथा कार्यक्रम के दौरान उपस्थित होकर अनार उत्पादक किसानों एवं वैज्ञानिकों से अनार की तकनीकी जानकारी प्राप्त कर अनार बगीचा लगाने का निर्णय लिया। साथ ही गाँव के किसानों से अलग हटकर कार्य करने का कठोर संकल्प लिया। अनार बगीचा लगाने का मूर्त रूप देने का कार्य ुरू करते हुए लगभग 10.5 एकड जमीन में अनार की सिंदूरी एवं भगवा किस्म का बगीचा लगाना भुरू किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से हमेशा सम्पर्क रखकर इन्होंने अपने अनार उत्पादन पर पूरा ध्यान दिया। तीन वर्ष प चात् वर्ष 2018 में इनके पौधों पर उचित गुणवत्ता वाली अनार की बम्पर पैदावार हुई जिससे श्रीमती कंवर को आठ लाख रूपये की भुद्ध आय प्राप्त हुई। इस वर्ष 2021–22 में उन्होंने अनार उत्पादन एवं खेती से 11.30 लाख की भुद्ध आय प्राप्त हुई है।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, बाड़मेर–I के वैज्ञानिकों द्वारा श्रीमती अन्नू कंवर को प्रि क्षण, समय–समय पर तकनीकी जानकारी एवं उन्नत बीज इत्यादि का सहयोग प्राप्त होता रहता है।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध लाभ (रू)
1.	बाजरा	6700.00	9900.00	3200.00
2.	जीरा	13500.00	40500.00	27000.00
3.	अनार	780100.00	1900400.00	1100000.00
	कुल	**800300.00**	**1950800.00**	**1130200.00**

सफलता का असर

कृषक श्रीमती अन्नू कंवर को पारम्परिक खेती से 3 लाख की भुाद्ध आमदनी होती थी। इनके सामने कई समस्याएं आईं जैसे कम उत्पादन, उन्नत किस्मों के बीज का नहीं मिलना, खेती की जानकारी नहीं होना, नई कृषि तकनीकी के अभाव के कारण। परन्तु कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आने सें उन्नत किस्मों के बीज, फसल विविधीकरण इत्यादि से आज श्रीमती अन्नू कंवर को 11.30 लाख की भुाद्ध वार्षिक आय प्राप्त हो रही है।

क्षेत्र में योगदान

कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा दिये गये तकनीकी ज्ञान से सम्पर्क में आने पर श्रीमती कंवर की तकदीर बदल गई इस सफलता को देखकर आसपास के गांव के लगभग 20 कृषक प्रेरित होकर आज अपने खेत पर बागवानी भुरु किये। जिससे उनकी वार्षिक आय में वृद्धि हुई है।

संकलनकर्ता
डॉ. विनय कुमार
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केन्द्र, बाड़मेर–I (राज.)

7 कृषि विज्ञान केन्द्र - भीलवाड़ा-I

जैविक कृषि प्रणाली की डगर–समृद्धि की ओर

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती लीला देवी ओझा**
पति का नाम	:	श्री सुभाष ओझा
आयु	:	47 वर्ष
शिक्षा	:	12वीं (विज्ञान वर्ग)
पता	:	ग्राम पोस्ट–चावण्ड़िया, तहसील–कोटड़ी, जिला–भीलवाड़ा (राजस्थान)
फोन नम्बर	:	9829157514
सफलता का क्षेत्र	:	जैविक खेती
प्रेरणा स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, भीलवाड़ा (राज.)

पृष्ठभूमि

पहला सुख निरोगी काया की उक्ति को चरितार्थ करने वाली कृषक महिला हैं श्रीमती लीला देवी ओझा। उत्तम स्वास्थ्य एवं अधिक लाभ प्राप्त करने का उद्दे य तथा शिक्षित महिला होने के नाते श्रीमती ओझा ने कोरोना काल में जैविक खेती अपनाकर सब्जी उत्पादन कर समाज सेवा एवं अधिक आमदनी प्राप्त करने की राह पकड़ी और खेती को लाभप्रद बनाने के रास्ते पर चल पड़ी। इस सपने को साकार करने के लिए उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, भीलवाड़ा के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. सी एम. यादव और भास्य वैज्ञानिक डॉ. के.सी. नागर से सम्पर्क किया तत्प चात् उन्होंने जैविक आधारित सब्जी उत्पादन, फसल उत्पादन एवं प ुपालन संबंधित विभिन्न प्रि क्षणों में सहभागिता द्वारा क्षमता विकास, सब्जियों की उन्नत किस्म के बीज, वर्मी कम्पोस्ट इकाई एवं गोबर गैस संयन्त्र की स्थापना, सब्जियों में वेस्ट डिकम्पोजर का उपयोग, छोटी पौध ााला एवं सब्जियों की पौध का बेचान, पोषण वाटिका में बूँद–बूँद सिंचाई प्रणाली की आधुनिक एवं लाभकारी कृषि तकनीकियों की समुचित जानकारी प्राप्त कर ज्ञान अर्जित किया साथ ही जैविक कृषि तकनीकियों में गहन, व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक प्रि क्षण प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त वह कृषि भाोध पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से भी अपने ज्ञान को समय–समय पर अद्यतित करती रहीं और जैविक कृषि में अपने ज्ञान एवं कौ ल में दक्षता प्राप्त की।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, भीलवाड़ा ने श्रीमती लीला देवी ओझा को जैविक आधारित सब्जी उत्पादन, फसल उत्पादन एवं प ुपालन से संबंधित विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकियों जैसे कृषि में वर्मी कम्पोस्ट एवं वेस्ट डिकम्पोजर का उपयोग पर प्रि क्षित कर जैविक कृषि में पारंगत किया। तत्प चात् श्रीमती ओझा ने कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के तकनीकी पर्यवेक्षण एवं मार्गद न में वर्ष 2020 से 4.5 बीघा कृषि भूमि पर जैविक सब्जी एवं अनाज उत्पादन लेना प्रारम्भ किया। अब वे अपने खेत में जैविक अनाज, जैविक सब्जी उत्पादन एवं जैविक प ुपालन कर रही हैं।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र, भीलवाड़ा की आधुनिक एवं लाभकारी जैविक कृषि तकनीकियों से ज्ञान एवं दक्षता हासिल करके, श्रीमती लीला देवी ने जैविक गेहूँ, चना, भिन्डी, मटर, मिर्च, बैंगन, टमाटर, प्याज इत्यादि का उत्पादन भाुरू किया और कोविड 19 महामारी

लॉकडाउन के दौरान अपने क्षेत्र के निकटतम गाँवों और जिला मुख्यालय पर जैविक उत्पादों की बिक्री कर लगभग 2–3 लाख रूपये का लाभ अर्जित किया। श्रीमती ओझा वर्तमान में भी लगभग 4–5 लाख रूपये का लाभ प्राप्त कर रही हैं।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध लाभ (रू)
1.	जैविक सब्जी उत्पादन	85000.00	252000.00	167000.00
2.	जैविक अनाज उत्पादन – गेहूँ, चना	35000.00	160000.00	125000.00
3.	वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन	24000.00	130000.00	106000.00
4.	वेस्ट डीकम्पोजर उत्पादन	10000.00	95000.00	85000.00
	कुल	**154000.00**	**637000.00**	**483000.00**

सफलता का असर

श्रीमती लीला देवी ओझा जैविक खेती, कृषि में नवाचार एवं कृषि कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के लिए अन्य कृषक महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और वे अब एक प्रगति ाील महिला किसान के रूप में जानी पहचानी जाती हैं। श्रीमती लीला देवी को जैविक खेती में नवीनतम तकनीकी के समावे ा हेतु जिला स्तर पर आत्मा एवं कृषि विभाग द्वारा सम्मानित किया जा चुका है साथ ही जिले में आयोजित होने वाले किसान मेलों, किसान गोष्ठियों एवं कृषि कार्यक्रमों में वि ोषज्ञ, वार्त्ताकार एवं अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया जाता है।

क्षेत्र में योगदान

चावण्ड़िया गांव एवं आसपास के क्षेत्रों में लगभग 70 प्रति ात किसान श्रीमती ओझा के प्रयासों के कारण जैविक खेती को अपना रहे हैं। जैविक खेती के प्रति इनके समर्पण एवं विभिन्न क्षेत्रों में सक्रियता के लिए इन्हें कई स्थानीय एवं जिलास्तरीय प्र ास्ति / प्र ांसा पत्र मिले हैं। आज श्रीमती ओझा के पास एक जैविक बाजार है जिसमें नियमित रूप से इनके खेत का जैविक उत्पाद जैसे जैविक गेहूँ, चना, मटर, टमाटर, भिंडी, मिर्च, प्याज, का विक्रय होता है।

श्रीमती लीला देवी कृषि को एक उद्यम / व्यवसाय के रूप में करने के लिऐ कई महिला किसानों की एक प्रेरणा स्रोत हैं साथ ही वह जैविक खेती के साथ विकास के पथ का एक आद र्ा उदाहरण हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. सी.एम. यादव
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केन्द्र, भीलवाड़ा–I (राज.)

8 कृषि विज्ञान केन्द्र - भीलवाड़ा-II

समन्वित कृषि प्रणाली ने खोले आमदनी के द्वार

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती लाली देवी मीणा**
पति का नाम	:	श्री मनोज मीणा
आयु	:	33 वर्ष
शिक्षा	:	8वीं
पता	:	ग्राम–गणे ापुरा पोस्ट–गांगीथला, तहसील–जहाजपुर, जिला–भीलवाड़ा (राजस्थान)
फोन नम्बर	:	9509373904
सफलता का क्षेत्र	:	समन्वित कृषि प्रणाली
प्रेरणा स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, अरनिया गोड़ा, भााहपुरा–भीलवाड़ा II (राज.)

पृष्ठभूमि

समन्वित कृषि से आय को दोगुना कर दिखाने वाली कृषक महिला हैं श्रीमती लाली देवी मीणा। श्रीमती लाली देवी ने कृषि के साथ–साथ अतिरिक्त आय के लिए बकरी एवं मुर्गीपालन को अपनाया है। इन्होंने ने अपनी मेहनत और सूझबूझ से ना केवल खेतों की सूरत बदली है, बल्कि सकल आय को भी दोगुना कर बताया है। श्रीमती लाली देवी ने कृषि विज्ञान केंद्र, अरनिया गोड़ा, भााहपुरा, भीलवाड़ा द्वितीय से सम्पर्क स्थापित कर गेहूँ, जौ, चना, मुर्गीपालन एवं बकरी पालन संबंधित विभिन्न प्रि ाक्षणों में भाग लेकर क्षमता विकास, उन्नत बीज, बीजोपचार, खरपतवार प्रबन्धन, मुर्गी की उन्नत सन्तति, सिरोही बकरी की आधुनिक एवं लाभकारी तकनीकियों की समुचित जानकारी प्राप्त कर ज्ञान अर्जित किया। साथ ही समन्वित कृषि प्रणाली में गहन, व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक प्रि ाक्षण प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त वह केन्द्र की विभिन्न प्रसार गतिविधियों में भाग लेकर भी कृषि में नवाचार कर रही हैं।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केंद्र, अरनिया गोड़ा, भााहपुरा, भीलवाड़ा–II ने श्रीमती मीणा को समन्वित कृषि प्रणाली के अन्तर्गत बकरी पालन, फसल उत्पादन एवं मुर्गी पालन से संबंधित विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकियों जैसे कृषि में उन्नत किस्म के बीज, बीजोपचार, वैज्ञानिक तरीके से मुर्गीपालन एवं उन्नत बकरी पालन, बकरियों में नस्ल सुधार पर प्रि ाक्षण देकर समन्वित कृषि में दक्ष किया। इस प्रकार श्रीमती लाली देवी ने कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के तकनीकी पर्यवेक्षण एवं मार्गद िन में वर्ष 2019–20 से 2.5 बीघा कृषि भूमि पर गेहूँ, चना एवं जौ का उत्पादन लेना प्रारम्भ किया साथ ही वैज्ञानिक तरीके से मुर्गीपालन एवं बकरीपालन भी कर रही हैं जिससे अतिरिक्त आमदनी एवं उद्यमिता का विकास हुआ है।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र, अरनिया गोड़ा, भााहपुरा, भीलवाड़ा द्वितीय की नवीनतम एवं लाभकारी जैविक कृषि तकनीकियों में ज्ञान एवं दक्षता हासिल करके श्रीमती लाली देवी ने गेहूँ (राज 4079), चना (जीएनजी 1958), बकरी पालन (सिरोही), मुर्गी पालन (प्रतापधन,

कड़कनाथ एवं अंकले वर) का उत्पादन लेना प्रारंभ किया। इस प्रकार समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने से श्रीमती मीणा अपने निकटतम गाँवों में उन्नत बीज, मुर्गी के चूजे, एवं सिरोही बकरियों को बेच कर 3–3.5 लाख रूपये का लाभ प्राप्त कर रही हैं।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध लाभ (रू)
1.	बीज उत्पादन–चना	16500.00	110000.00	93500.00
2.	मुर्गी पालन–प्रतापधन, कड़कनाथ, अंकलेश्वर	32500.00	125000.00	92500.00
3.	बकरीपालन–सिरोही	130000.00	245000.00	115000.00
	कुल	**179000.00**	**480000.00**	**301000.00**

सफलता का असर

श्रीमती लाली देवी मीणा समन्वित कृषि मॉडल में नवाचार एवं कृषि कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के लिए अन्य कृषक महिलाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं साथ ही वह एक प्रगति ील महिला किसान के रूप में जानी पहचानी जाती हैं। श्रीमती लाली का समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को आस–पास के गाँवों के लगभग 80–90 कृषकों एवं कृषक महिलाओं ने अपनाया है तथा अंतर जिला प्रगति ील किसानों, अधिकारियों, डी.एल.ओ. एवं जन नेताओं ने श्रीमती लाली देवी के खेत का भ्रमण किया। लाली देवी जिले में आयोजित होने वाले किसान मेलों, किसान गोष्ठियों एवं कृषि कार्यक्रमों में वि ेषज्ञ, वार्ताकार एवं अतिथि के रूप में आमन्त्रित की जाती हैं।

क्षेत्र में योगदान

गणे ापुरा, जहाजपुर पंचायत समिति एवं आसपास के क्षेत्रों में लगभग 40 प्रति ात किसान श्रीमती लाली देवी मीणा के प्रयासों के कारण समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल को अपना रहे हैं। समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने से श्रीमती लाली देवी ने अपने क्षेत्र में एक अलग ही पहचान बनाई है। आज श्रीमती लाली देवी के पास उन्नत किस्म के बीज, उन्नत मुर्गी संतति एवं सिरोही प्रजाति की बकरियाँ उपलब्ध है जिनको खरीदकर आस–पास के किसान कृषि में नवाचार कर रहे हैं। श्रीमती लाली देवी मीणा समन्वित कृषि मॉडल अपनाने के कारण कई महिला किसानों की एक प्रेरणा स्त्रोत हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. सी.एम. यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केन्द्र, भीलवाड़ा–II (राज.)

9 कृषि विज्ञान केन्द्र - बीकानेर-II

समन्वित कृषि प्रणाली के संग उन्नत किस्मों ने दिखाया प्रगति का पथ

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती राजा देवी**
पति का नाम	:	श्री किसना राम
उम्र	:	55 वर्ष
शिक्षा	:	2
पता	:	ग्राम–धीरदान, विकास/तहसीलः लूनकरनसर जिला–बीकानेर (राजस्थान)
सफलता का क्षेत्र	:	समन्वित कृषि प्रणाली और उन्नत किस्मों का प्रयोग
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, बीकानेर–।। (राज.)

पृष्ठभूमि

लूनकरनसर तहसील के धीरदान गाँव की प्रगतिशील कृषक महिला श्रीमती राजा देवी कृषि के क्षेत्र में नवाचारों को अपनाने में अग्रणी हैं। साथ ही वे महिलाओं को संगठित कर समूह संचालन कार्य भी कुशलतापूर्वक कर रही हैं। श्रीमती राजा देवी "सरस्वती महिला स्वयं सहायता समूह" की अध्यक्षा हैं जिसमें 10 महिला सदस्य हैं तथा प्रत्येक महिला 100/– रुपये प्रतिमाह की बचत कर रही हैं।

तकनीकी हस्तक्षेप

श्रीमती राजा देवी, धीरदान गाँव में लगभग 50 बीघा भूमि में कृषि कार्य करती हैं जो कि ट्यूबवेल सिंचित है। खरीफ मौसम में मूंगफली और कपास तथा रबी मौसम में गेंहू और सरसों प्रमुख फसलें हैं। वर्ष 2016 तक वे अधिकतर दे ी और अमेरिकी कपास का ही प्रयोग करती थीं, कीट एवं व्याधि ज्यादा लगने के कारण लागत भी अधिक आती थी। लम्बी अवधि की फसल होने के कारण उर्वरक व सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती थी तथा प्रति हेक्टेयर उत्पादकता की औसत भी 12–16 क्विंटल तक होती थी।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केंद्र, बीकानेर–।। के गठन के साथ ही कपास की नरमा किस्म की अधिक लवणीय जल सहने के गुण का उपयोग करके किसान भाई बहनों को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से नरमा कपास का प्रचार प्रसार किया गया। जिससे लाभान्वित होकर श्रीमती राजा देवी ने भी कपास की नरमा किस्म का प्रयोग करना प्रारम्भ किया। कीट एवं व्याधियों के प्रति प्रतिरोधकता ज्यादा होने के कारण नरमा की यह किस्म अधिक लाभकारी है। इसमें देशी व अमेरिकन किस्मों के मुकाबले उर्वरक व सिंचाई की आवश्यकता भी कम होती है और प्रति हेक्टेयर उत्पादकता औसतन 22 –25 क्विंटल/हेक्टेयर तक होती है। नरमा का विक्रय मूल्य लगभग 5500.00 रुपये प्रति क्विंटल रहता है जिससे इन्होंने बेहतर आमदनी प्राप्त की। वर्ष 2018–19 में कृषि विज्ञान केंद्र के प्रयासों से इन्होंने सरसों की गिरिराज किस्म का उत्पादन लगभग 20 बीघा भूमि में किया जिसमें 6 क्विंटल प्रति बीघा तक उत्पादन प्राप्त किया और 4 लाख रुपये तक शुद्ध मुनाफा भी प्राप्त किया।

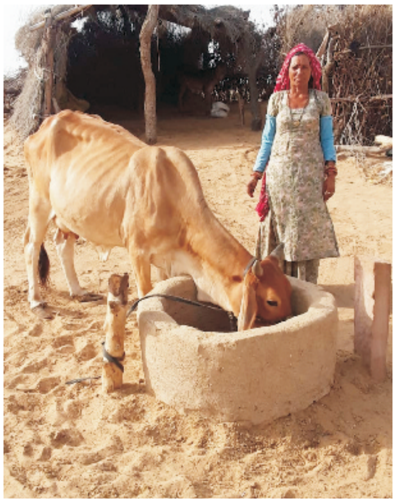

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा सदैव समन्वित कृषि प्रणाली का प्रसार किया जाता रहा है। श्रीमती राजा देवी ने भी पशुधन के महत्व को समझा और वर्ष 2016 में 04 गायों से पशु पालन की शुरुआत की। आज इनके पास 12 गायें हैं जिनसे प्रतिदिन लगभग 50 लीटर दुग्ध उत्पादन होता है जिसे वे गाँव की सामूहिक डेरी में विक्रय करती हैं, और इनको प्रतिवर्ष 4–5 लाख रुपये आमदनी होती हैं।

आमदनी

क्र.सं.	उद्यम/गतिविधि	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध आमदनी (रू)
1.	कपास	268000.00	1248000.00	980000.00
2.	मूंगफली	98000.00	371850.00	273850.00
3.	गेहूँ	120000.00	264650.00	144650.00
4.	सरसों	177000.00	479880.00	302880.00
5.	गाय/पशुपालन	238420.00	762280.00	503860.00
	कुल	**901420.00**	**3126660.00**	**2205240.00**

सफलता का असर

श्रीमती राजा देवी निरंतर कृषि विज्ञान केंद्र के संपर्क में रहते हुए बाजरा, जौ, सरसों की भी उन्नत किस्मों की जानकारी लेती रहती हैं। साथ ही, अब वे केंचुआ खाद इकाई की स्थापना करने के लिए भी दृढ संकल्प हैं, जिससे घर पर एक जैविक और शुद्ध पोषण वाटिका भी स्थापित हो सके। कृषि में नवाचारों को करने से बढ़ी आमदनी को देखते हुए इनके स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के बीच यह एक मिसाल के रूप में उभरी हैं और उनके लिए एक प्रेरणा स्रोत बनी हैं।

क्षेत्र में योगदान

कृषि में नवाचारों को अपनाकर श्रीमती राजा देवी अपने स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के बीच एक मिसाल के रूप में उभरी हैं। समूह की अध्यक्ष होने के नाते इन्होंने अपने समूह की अन्य महिलाओं को भी पशुपालन और उन्नत किस्मों के प्रयोग के लिए प्रेरित किया। इनके प्रयासों और नवाचारों से प्रभावित होकर इनके समूह की अन्य महिलाएं भी पशुपालन का कार्य कर रही हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. नवल किशोर, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केन्द्र, बाड़मेर–II (राज.)

10 कृषि विज्ञान केन्द्र - चित्तौड़गढ़

जैविक पोषण वाटिका बनी उत्तम स्वास्थ्य का आधार

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती सीमा वैष्णव**
पति का नाम	:	श्री सुरेश वैष्णव
आयु	:	35 वर्ष
शिक्षा	:	12वीं (कला वर्ग)
पता	:	सहनवा, तहसील–चित्तौड़गढ़ जिला– चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
फोन नंबर	:	9119201746
सफलता का क्षेत्र	:	जैविक खेती
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केंद्र चित्तौड़गढ़

पृष्ठभूमि

श्रीमती सीमा वैष्णव 2 साल पहले तक एक साधारण कृषक महिला थीं। 2019–2020 की शुरुआत में जब कोरोना काल का प्रकोप शुरू हुआ तब उन्होंने देखा कि कमजोर प्रतिरोधक क्षमता के चलते उनके कई जानकार तथा रिश्तेदार कोरोना बीमारी की भेंट चढ़ गए। उन्होंने जाना कि कृषि में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न रसायनिक कीटनाशक तथा रसायनिक खाद मानव की प्रतिरोधक क्षमता को नुकसान पहुँचा रहे हैं तथा कैंसर, रक्तचाप, मधुमेह जैसी खतरनाक बीमारियों को बढ़ावा दे रहे हैं।

इसी के चलते श्रीमती वैष्णव ने कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डा. रतन लाल सोलंकी तथा कार्यक्रम सहायक सुश्री दीपा इंदौरिया से संपर्क किया तथा जैविक कृषि, पोषण वाटिका, केंचुआ खाद इत्यादि पर जानकारी लेकर कार्य करना शुरू कर दिया। साथ ही उन्होंने जब विभिन्न प्रि क्षणों में भाग लिया तथा प्रि क्षण व्याख्यानों के अंतर्गत सुना कि कमजोर प्रतिरोधक क्षमता के कारण तथा गलत कृषि प्रणाली (रासायनिक कीटना कों तथा उर्वरक का अंधाधुन्ध प्रयोग) की वजह से मानवीय जीवन किस तरह से संकट में आ गया है। कृषि विज्ञान केन्द्र से जैविक कृषि तकनीकी में गहन व्यावहारिक तथा प्रयोगात्मक प्रि क्षण प्राप्त किये तथा जैविक खेती के बारे में जानकारी प्राप्त करके श्रीमती वैष्णव ने प्रण लिया कि वह वर्तमान में चल रही रसायनयुक्त कृषि प्रणाली को विभिन्न प्रकार के रसायनिक खाद ,पेस्टिसाइड तथा दवाओं से मुक्त करेंगी।

तकनीकी हस्तेक्षप

श्रीमती सीमा वैष्णव ने कृषि विज्ञान केन्द्र, चित्तौड़गढ़ में होने वाले जैविक खेती आधारित विभिन्न प्रशिक्षण में भाग लिया तथा गांव में पोषण अभियान के तहत लगभग 150 घरों में पोषण वाटिका कृषि विज्ञान केंद्र की मदद से स्थापित करवाई जिसमें फल व सब्जियों का उत्पादन जैविक तरीकों से किया जाता है।

सफलता का विवरण

वर्तमान में श्रीमती वैष्णव के साथ जुड़ी हुई अन्य महिलाएं जो जैविक तरीकों से फल सब्जी का उत्पादन कर रही हैं वह अपने उत्पाद चित्तौड़ जिले में चलाए जा रहे जैविक उत्पाद केंद्र को निर्यात कर रही हैं। साथ ही केंचुआ खाद एकक द्वारा भी आय अर्जित

कर रही हैं। जैविक फल सब्जी उत्पादन से उन्हे 1.0–1.5 लाख रूपये तथा जैविक खाद की बिक्री द्वारा 80000– 94000 रूपये सालाना आय प्राप्त हो रही है।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रू.)	कुल आमदनी (रू.)	शुद्ध लाभ (रू.)
1.	केंचुआ खाद उत्पादन	26000.00	120000.00	94000.00
2.	जैविक सब्जी व फल उत्पादन	12500.00	74500.00	62000.00
3.	जैविक दाल (उडद व चना) उत्पादन	17000.00	55000.00	38000.00
	कुल	**55500.00**	**249500.00**	**194000.00**

सफलता का असर

जुलाई 2020 के बाद से श्रीमती वैष्णव की कड़ी मेहनत के पश्चात् सफलता का दौर प्रारंभ हुआ जिसके अंतर्गत श्रीमती वैष्णव को उनके जैविक खेती के आह्वान हेतु आकाशवाणी चित्तौड़गढ़ में रेडियो वार्ता हेतु भी आमंत्रित किया गया साथ ही जिले के कृषि संबधित विभिन्न विभागों द्वारा प्रगतिशील किसान महिला के तौर पर भी आमंत्रित किया गया ताकि जिले के अन्य किसान भी जैविक खेती को अपनाकर उत्तम स्वास्थ्य की तरफ कदम बढ़ा सकें इसका असर यह हुआ कि गाँव की अन्य महिलाएं भी जैविक खेती की ओर अग्रसित हुईं। अब श्रीमती वैष्णव जिले में आयोजित होने वाले विभिन्न कृषि कार्यक्रमों वार्ताकार के रूप में आमंत्रित की जाने लगी हैं।

क्षेत्र में योगदान

वर्तमान में श्रीमती वैष्णव गांव तथा गांव के आसपास के क्षेत्रों में भी जैविक तरीकों से सब्जी एवं फलोत्पादन तथा पोषण वाटिका के लिए किसानों को लगातार प्रोत्साहित कर रही हैं जिससे आज गांव के करीब 300 घरों में पोषण वाटिका है जिनमें पूर्णतया जैविक तरीके से सब्जी–फल उगाये जाते हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. रतन लाल सोलंकी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केंद्र, चित्तौड़गढ़ (राज.)

11 कृषि विज्ञान केन्द्र - चुरु-I

प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से विकास की राह पर

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती राजू देवी**
पति का नाम	:	श्री सुरेश कुमार जाँगिड़
उम्र	:	32
शिक्षा	:	12वीं
पता	:	ग्राम–रंगाईसर, तहसील–सरदारशहर जिला–चुरू, (राजस्थान)
सफलता का क्षेत्र	:	मसाला उद्योग
प्रेरणा स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर, चुरू (राज.)

पृष्ठभूमि

चुरू जनपद राजस्थान के रेगिस्तान क्षेत्र में स्थित है। सरदारशहर चुरू जनपद की प्रमुख तहसील है। सरदारशहर तहसील के गांव रंगाईसर निवासी श्रीमती राजू देवी बचपन से ही कृषि कार्य से जुड़ी हैं परन्तु खेती योग्य जमीन गांव से दूर बिल्यु बोगेरा (45 किमी.) पर स्थित है। अतः बारानी खेती भी उनके परिवार के लिए करना संभव नहीं था। श्रीमती राजू जी अपने परिवार को आर्थिक संबल देने के लिए कृषि से संबंधित लघु उद्योग स्थापित करने के लिए प्रयासरत हो गई। इस संदर्भ में उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर में सम्पर्क किया तत्पश्चात उन्होंने प्रसंस्करण से संबंधित प्रशिक्षणों में भाग लेकर आधुनिक एवं लाभकारी तकनीकों की समुचित जानकारी प्राप्त कर ज्ञान अर्जित किया। साथ ही मसाला उद्योग तकनीकों में गहन व्यवहारिक एवं प्रयोगात्मक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा श्रीमती राजू देवी को मसाला उद्योग तकनीकी के साथ–साथ पोषाहार वाटिका एवं पशुपालन संबंधित वैज्ञानिक तकनीकों पर भी प्रशिक्षित किया गया। श्रीमती राजू देवी ने तकनीकी पर्यवेक्षक एवं मार्गदर्शन में स्वयं सहायक समूह के साथ मिलकर निरन्तर मूल्यसंवर्धन और प्रसंस्करण से संबंधित प्रशिक्षणों में भाग लिया।

मसालों की शुद्धता की पहचान, सुखाने की विधि, पीसने की विधि तथा पैकिंग करने की तकनीकी के बारे में गहनता से वैज्ञानिकों के साथ विचार विमर्श किया एवं गांव में ''श्री विश्वकर्मा मसाला लघु उद्योग'' के नाम से व्यवसाय शुरू किया।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर एवं राजीविका से ज्ञान एवं दक्षता हासिल करके श्रीमती राजू देवी आज ग्रामीण स्तर पर मसाला उद्योग स्थापित कर शुद्ध लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर, हल्दी पाउडर तथा जीरे की बिक्री कर रही हैं। साथ ही घरेलू स्तर पर पोषाहार वाटिका लगाकर ग्रामीण महिलाओं को हरी सब्जियों एवं ताजा फलों के महत्व को समझा रही हैं।

आमदनी

उद्यम / गतिविधि	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध आमदनी
मसाला पाउडर	72206.00	184526.00	112320.00

सफलता का असर

श्रीमती राजू देवी अपनी कृषि गतिविधियों एवं सक्रिय भागीदारी के लिए अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और अब ग्रामीण स्तर पर उनकी अलग पहचान है। उनके अथक प्रयासों को वर्ष 2019 में डी डी किसान न्यूज चैनल द्वारा चित्रांकित किया गया तथा बेस्ट फार्म वुमन के लिए उनका नामांकन हुआ। श्रीमती राजू देवी को महिला दिवस के अवसर पर राजीविका एवं प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया। उन्होंने विभिन्न प्रकार के किसान मेलों में अपनी स्टॉल लगाकर राज्य स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं राजीविका द्वारा जयपुर, जोधपुर, उदयपुर एवं चुरू में लगाये गये किसान मेलों में भी उनका उत्कृष्ठ योगदान रहा। साथ ही वह अब एक प्रेरणा स्रोत एवं परामर्शदाता की तरह ग्रामीण महिलाओं को सशक्त करने का काम कर रही हैं।

क्षेत्र में योगदान

लघु उद्योग स्थापित करने में श्रीमती राजू देवी सर्मपण एवं विभिन्न क्षेत्रों (पशुपालन, पोषाहार वाटिका एवं आजीविका) में सक्रियता के लिए इन्हें कई स्थानीय एवं जिलास्तरीय प्रशस्ति पत्र मिले हैं। श्रीमती राजू देवी मसाला उद्योग को व्यवसाय के रूप में करने के लिए कई महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। इनकी प्रेरणा से क्षेत्र की अन्य महिलाएं भी स्वरोजगार के तरीके अपना रही हैं तथा कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा ले रही हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. रमन जोधा
विषय विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर, चुरू (राज.)

12 कृषि विज्ञान केन्द्र - चुरु-II

पोषण वाटिका व मूल्य संवर्धन से महिला की बनी पहचान

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती शारदा देवी**
पति का नाम	:	श्री किशन जांगिड़
आयु	:	42 वर्ष
शिक्षा	:	5वीं
पता	:	डिंगली, चुरू (राजस्थान)
फोन नंबर	:	8529679887
सफलता का क्षेत्र	:	पोषण वाटिका एवं मूल्य संवर्धन
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, चुरू (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती शारदा देवी का मुख्य व्यवसाय खेती है। श्रीमती शारदा अपने पति के साथ मेहनत मजदूरी कर खेती से कम ही आयोपार्जन कर पाती थीं। कृषि विज्ञान केंद्र से तकनीकी सहायता प्राप्त करके इनके परिवार की दशा एवं दिशा में सकारात्मक बदलाव आया है।

तकनीकी हस्तक्षेप

श्रीमती शारदा के खेत में सदा पारम्परिक तरीके से खेती होती आई है। कृषि विज्ञान केंद्र, चुरू में इनको पोषण वाटिका तैयार करने, उनके दैनिक जीवन में उपयोग तथा फलदार पौधों के रख रखाव व नर्सरी तैयार करने की नवीनतम तकनीकी जानकारियां संस्थागत प्रशिक्षण के माध्यम द्वारा हुई। नर्सरी तथा फलदार पौधों के रखरखाव का प्रशिक्षण प्राप्त कर उन्होंने 0.3 हेक्टेयर क्षेत्र में पोषण वाटिका तैयार की, जिसमें विभिन्न मौसमी सब्जियां व उनकी पौध तैयार की। इसके साथ ही वह कृषि विज्ञान केंद्र से प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन प्राप्त करके स्थानीय खाद्य पदार्थों के मूल्य संवर्धन जिसमें ग्वारपाठा का आचार, जूस, तुम्बे का अचार, नीम्बू का शरबत आदि तैयार करती हैं। इससे उनके लघु उद्योग को बढ़ावा मिला है। इसी के साथ वह जैविक कीटनाशक– नीम का स्प्रे आदि तैयार कर भी उन्हें किसानों को बेचती हैं।

सफलता का विवरण

श्रीमती शारदा इस प्रकार मूल्य संवर्धित उत्पादों तथा नीमास्त्र से 8000 से 10000 रूपये तक की अतिरिक्त लाभ अर्जित करती हैं।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रू.)	कुल आमदनी (रू.)	शुद्ध लाभ (रू.)
1.	खेती	70000.00	250000.00	180000.00
2.	मूल्य संवर्धन	25000.00	80000.00	50000.00
3.	जैविक कीटनाशक (नीमास्त्र)	4000.00	30000.00	26000.00
	कुल	**99000.00**	**360000.00**	**256000.00**

सफलता का असर

श्रीमती भारदा का कहना है कि कृषि विज्ञान केंद्र से मार्गदर्शन लेकर उनके जीवन को एक नई दिशा मिली है और उनकी आर्थिक समस्याएं काफी कम हुई हैं और अब वह बचत भी कर पाती हैं। अनाज की खेती के साथ सब्जियों की खेती करने से उनके पारिवारिक पोषण स्तर में भी सुधार हुआ है ।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती भारदा देवी, गाँव की अन्य महिलाओं के लिए एक मिसाल बनी गई हैं तथा श्रीमती शारदा देवी गाँव की महिलाओं को कृषि विज्ञान केंद्र से विभिन्न प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए सलाह देती हैं। वह बताती हैं कि भविष्य में भी इस प्रकार गाँव की महिलाएं उचित मार्गदर्शन प्राप्त करके अपने बलबूते पर पहचान बना सकती हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. अदिति गुप्ता
विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान, खाद्य एवं पोषण)
कृषि विज्ञान केंद्र, चाँदगोठी, चुरू (राज.)

13 कृषि विज्ञान केन्द्र - दौसा

जैविक खेती से बनी महिला कृषक की पहचान

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती रुबी पारीक**
पति का नाम	:	श्री ओम प्रका ा पारीक
उम्र	:	36 वर्ष
शिक्षा	:	दसवीं
पता	:	ग्राम–खटवा, विकास/तहसील–लालसोट जिला–दौसा (राजस्थान)
सफलता का क्षेत्र	:	जैविक कृषि
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, दौसा एवं राज्य कृषि विभाग दौसा (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती रूबी पारीक बचपन में कृषि कार्य का ककहारा भी नहीं जानती थीं, लेकिन भाादी होने एवं ससुराल आने के बाद फसलों के बारे में जानने लगीं। शुरुआत में उनके परिवार को खेती से न तो फायदा होता था और न ही नुकसान इसलिए श्रीमती पारीक एक शिक्षित महिला होने के नाते खेती को लाभकर बनाने के रास्ते तलाशने लगी। इस संदर्भ में उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, दौसा के वैज्ञानिक डॉ बी.एल. जाट से सम्पर्क किया और तत्प चात् उन्होंने कृषि संबंधित विभिन्न प्रि ाक्षणों में प्रतिभागी होकर आधुनिक एवं लाभकारी कृषि तकनीकियों की समुचित जानकारी प्राप्त कर ज्ञान अर्जित किया साथ ही जैविक कृषि तकनीकियों में गहन व्यवहारिक एवं प्रायोगात्मक प्रि ाक्षण प्राप्त किया। इसके अलावा वह कृषि से जुडे पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से भी अपने ज्ञान को समय–समय पर अर्जित करती रहीं और अंतोगत्वा उन्होंने जैविक कृषि में अपने ज्ञान एवं कौ ाल में प्रवीणता हासिल कर ली।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, दौसा नें श्रीमती रूबी पारीक को जैविक कृषि से संबंधित विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकियों पर प्रि ाक्षित कर उनको जैविक कृषि में दक्षित किया। तत्प चात् श्रीमती पारीक ने कृषि विज्ञान केन्द्र, के विषय वि ोषज्ञों एवं राज्य कृषि विभाग के कृषि अधिकारियों के तकनीकी पर्यवेक्षण एवं मार्गद ान में वर्ष 2006 से 4 बीघा कृषि भूमि पर जैविक खेती करनी भाुरू की। अब वे अपने खेत में जैविक उत्पाद, जैविक अनाज, जैविक सब्जियां, जैविक मसाला आदि फसलों का उत्पादन कर रही हैं।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र की आधुनिक एवं लाभकारी जैविक कृषि तकनीकियों से ज्ञान एवं दक्षता हासिल करके, श्रीमती रूबी ने जैविक गेहूँ एवं जैविक सब्जियों का उत्पादन भाुरू किया जिसकी वजह से उनको जैविक खेती के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर 2016–17 में कृषि विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्रीमती पारीक को यह पुरस्कार केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह एवं प्रदे ा की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने प्र ास्ति पत्र एवं एक लाख रूपये देकर सम्मानित किया। श्रीमती पारीक वर्मी कम्पोस्ट, जीवामृत एवं अजोला उत्पादन के लिए क्षेत्र की महिलाओं को भी प्रोत्साहित कर रही हैं,

उनके द्वारा लालसोट क्षेत्र में 425 किसानों को जैविक खेती से जोडा जिससे लगभग 200 हेक्टेयर भूमि पर लगभग 500 क्विंटल जैविक गेहूँ का उत्पादन होने लगा जिससे किसानों की आय में भी वृद्धि होने लगी। इस प्रकार जैविक खेती को बढावा देने के लिए श्रीमती रूबी को 2017–18 में राष्ट्रीय अवार्ड (कृषि प्रेरणा सम्मान) से भी सम्मानित किया गया।

आमदनी

गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रू.)	कुल आमदनी (रू.)	शुद्ध लाभ (रू.)
केंचुआ खाद	800000.00	1600000.00	800000.00
जैविक खेती	150000.00	300000.00	150000.00
अजोला	50000.00	150000.00	100000.00
कुल	**1000000.00**	**2050000.00**	**1050000.00**

सफलता का असर

श्रीमती रूबी पारीक अपनी कृषि गतिविधियों एवं अन्य कृषि कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के लिए अन्य कृषक महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और वे अब एक प्रगति ील महिला किसान के रूप में जानी पहचानी जाती हैं। अब श्रीमती पारीक को रेडियो वार्त्ता (किसान वाणी) एवं विभिन्न कृषि संबंधित प्रि ाक्षण कार्यक्रमों में वि ोषज्ञ वार्त्ताकार एवं अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता है। साथ ही वह अब एक प्रेरणा स्रोत, द्वारपाल, रायनेता, पराम िदाता और पूरे दे ा में जैविक खेती के पाठों को प्रचारित करने के लिए एक राजदूत के रूप में कार्य करती हैं।

क्षेत्र में योगदान

लालसोट एवं आसपास के क्षेत्रों में लगभग 40 प्रति ात किसान श्रीमती रूबी जी के प्रयासों के कारण जैविक खेती का अनुसरण कर रहे हैं। जैविक खेती के प्रति इनके समर्पण एवं विभिन्न क्षेत्रों में सक्रियता के लिए इन्हें कई स्थानीय एवं जिलास्तरीय प्र ास्ति / प्र ांसा पत्र मिले हैं। इन सबसे ऊपर, आज इनके पास एक बड़ा ग्राहक आधार है जो नियमित रूप से इनके खेत का जैविक उत्पाद जैसे जैविक गेहूँ, केंचुआ खाद, केंचुआ, अजोला, जीवामृत इत्यादि खरीदता है।

श्रीमती रूबी पारीक जैविक खेती को एक उद्यम / व्यवसाय के रूप में करने के लिए कई महिला किसानों की एक प्रेरणा स्त्रोत हैं साथ ही वह जैविक खेती के साथ विकास के पथ का एक आद ी उदाहरण हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. बी.एल. जाट
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केन्द्र, दौसा (राज.)

14 कृषि विज्ञान केन्द्र - डूंगरपुर

हौंसले की मंजुला किसान बनी प्रेरणा स्रोत

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती मंजुला**
पति का नाम	:	श्री राजु पटेल
उम्र	:	36 वर्ष
षिक्षा	:	8वीं
पता	:	गाँव–इन्द्रखेत, तहसील व जिला–डूंगरपुर (राजस्थान)
सफलता का क्षेत्र	:	सब्जी उत्पादन
प्रेरण स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र व प ुपालन विभाग डूँगरपुर (राज.)

पृष्ठ भूमि

श्रीमती मंजुला बचपन से ही खेती में रूचि रखती हैं और वह अपने पति के साथ खेती में सहयोग करती हैं। परन्तु खेती से अपने परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा नहीं कर पा रही थीं। इसलिए वर्ष 2016 में कृषि विज्ञान केन्द्र, डूँगरपुर पर आयोजित प्रि क्षण में भाग लेकर पहली बार में फसलों के साथ साथ 1.5 एकड़ में मल्चिंग के साथ सब्जियों की खेती भाुरू की। साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र, डूँगरपुर से प ुपालन व सब्जी उत्पादन तकनीकों पर प्रि क्षण भी प्राप्त किये तथा दो मुर्रा भैंस के साथ डेयरी की भाुरूआत की।

तकनीकी हस्तक्षेप

श्रीमती मंजुला को कृषि विज्ञान केन्द्र, डूँगरपुर तथा प ुपालन विभाग, डूँगरपूर द्वारा फसल, सब्जी उत्पादन व प ुपालन प्रबंधन तकनीकियों में दक्षित किया साथ ही केन्द्र के व्हाट्सएप ग्रुप से जोड़कर जानकारियां प्रदान की। कृषि विभाग से बून्द–बून्द सिंचाई एवं फव्वारा पद्धतियाँ खेत में स्थापित की। अब वे अपने खेत पर 5 मुर्रा नस्ल की भैंस के साथ डेयरी इकाई, 2 एकड़ में फसल व 4 एकड़ में सब्जी उत्पादन कर रही हैं।

सफलता का विवरण

श्रीमती मंजुला ने कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि विभाग की नवीनतम व लाभकारी कृषि तकनीकियों जैसे उन्नत किस्म के बीज, प्लास्टिक मल्चिंग व सूक्ष्म सिंचाई की विधियां जैसे बून्द–बून्द सिंचाई द्वारा सब्जी उत्पादन, उन्नत डेयरी, वर्मीकम्पोस्ट की स्थापना, उन्नत कृषि उपकरण, रेज बेड़ नर्सरी, सब्जियों की ग्रेडिंग, पैकिंग व मार्केटिंग विधियां अपनायी, जिससे अब वे लगभग 9.20 लाख रू. प्राप्त कर रही हैं। जिसमें सब्जी उत्पादन से 6.65 लाख रूपये से अधिक का कुल लाभ प्राप्त कर रही हैं।

आमदनी

उद्यम / गतिविधि	कुल लागत (रू.)	कुल आमदनी (रू.)	शुद्ध आमदनी (रू.)
फसल उत्पादन	33100.00	85600.00	52500.00
सब्जी उत्पादन	125000.00	665000.00	540000.00
डेयरी इकाई	69500.00	170000.00	100500.00
कुल	**227600.00**	**920600.00**	**693000.00**

सफलता का असर

श्रीमती मंजुला द्वारा अपनाएं गये आयामों से प्रभावित होकर गाँव के आस–पास की 15–20 महिला कृषक भी सब्जियों की खेती करने लगी हैं। श्रीमती मंजुला अपनी कृषि गतिविधियों एवं अन्य कृषि कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के लिए अन्य कृषक महिलाओं की प्रेरणा स्रोत हैं।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती मंजुला के गाँव व आस–पास के क्षेत्रों के कृषक इनका अनुसरण कर रहे हैं। इनके नवाचारों की सफलताएं कई समाचार पत्रों में प्रकाि ात हुई हैं। इन्हें स्थानीय एवं वि वविद्यालय स्तर के प्र ंसा पत्र भी मिले हैं। डूंगरपुर सब्जी मण्डी में इन्होंने सब्जी की बिक्री कर अपनी पहचान बनाई है।

संकलनकर्ता

डॉ. सी.एम. बलाई, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी

डॉ. बी.एल. रोत, विषय वि ोषज्ञ (पौध संरक्षण)

कृषि विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर (राज.)

15 कृषि विज्ञान केन्द्र - हनुमानगढ़-I

देशी गौवंश एवं दुग्ध उत्पादन ने बदली जीवन की तस्वीर

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती सुमन**
पति का नाम	:	श्री वीरेन्द्र सिंह
आयु	:	35 वर्ष
शिक्षा	:	5वीं पास
पता	:	गांव–बोलावाली, तहसील–संगरिया, जिला–हनुमानगढ़ (राजस्थान)
फोन नंबर	:	7615905534
सफलता का क्षेत्र	:	पशुपालन
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, हनुमानगढ़–I (राज.)

पृष्ठभूमि

कहते हैं अगर हौंसले बुलन्द हों तो सारी मुश्किलें उसके सामने घुटने टेक देती हैं। श्रीमती सुमन की कहानी भी इसी हौंसले की निशानी है। स्वयं के आत्मविश्वास व कठिन परिश्रम से महज कक्षा 5 तक पढ़ी एक गरीब परिवार की महिला अपनी मेहनत के बल पर सफलता की ओर बढ़ रही हैं। श्रीमती सुमन एक संयुक्त परिवार की सदस्य हैं। जिसके पास केवल 3.25 हेक्टेयर भूमि है। 10 सदस्यों के परिवार का भरण–पोषण तथा अन्य सामाजिक कार्यों की भरपाई फसल उत्पादन से नहीं हो रही थी। अतः सुमन ने पशुपालन को एक सहायक व्यवसाय बनाने की सोची। इसी सोच को धरातल पर लाने के लिये सर्वप्रथम पशुओं की संख्या में बढ़ोतरी की व नस्ल सुधार को ध्यान में रखकर साहीवाल नस्ल की गायों का चयन किया।

तकनीकी हस्तक्षेप

श्रीमती सुमन ने कृषि विज्ञान केन्द्र, हनुमानगढ़–I से विभिन्न लघु व दीर्घावधि के प्रशिक्षणों में भाग लिया। प्रशिक्षण में बताई गई नई तकनीकियों से प्रेरित होकर डेयरी फार्म शुरु करने की सोची और नाम रखा ''श्री कृष्णा डेयरी फार्म''। उन्होंने शुरुआती वर्ष 2014–15 में छः स्थानीय/अवर्गीकृत किस्मों के पशु रखे जिनसे प्राप्त दूध दूधिये को बेचती थीं। इन पशुओं से प्राप्त बच्चों को बडा होने पर बेच कर अतिरिक्त आय प्राप्त करनी शुरू की। कृषि विज्ञान केन्द्र के मार्गद न से श्रीमती सुमन ने स्थानीय प ुओं से हो रही आमदनी व दूध से बचे पैसों को मिलाकर अच्छी नस्ल की गाय–भैंस खरीदने ुरू किये और स्थानीय पशुओं की नस्ल सुधार पर जोर दिया। वर्तमान में इनके पास कुल 29 पशु जिसमें 7 मुर्रा नस्ल तथा 16 साहीवाल नस्ल की गायें हैं।

सफलता विवरण

प्रि क्षण से प्राप्त जानकारी से प ुओं की नस्ल सुधार के साथ दूध की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ। जिससे दूध की कीमत अधिक मिलने लगी। शुरूआत में जहाँ 20–25 लीटर दूध का उत्पादन होता था वहीं तकनीकी ज्ञान में वृद्धि, नस्ल सुधार व पशु संख्या में वृद्धि होने से 125 लीटर प्रतिदिन दूध का उत्पादन होने लगा। श्रीमती सुमन की ''श्री कृष्णा डेयरी'' को एक नई सफलता अभी हाल

में ही प्राप्त हुई। वह सफलता यह है कि गंगमूल डेयरी, हनुमानगढ़ द्वारा उनकी डेयरी को दुग्ध संहग्रण केन्द्र स्वीकृत किया गया है, जिससे दूध का मूल्य रुपये 35 प्रति लीटर मिलने लगा है।

आमदनी (प्रति वर्ष)

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1.	फसल उत्पादन	24967.00	695443.00	490476.00
2.	दुग्ध उत्पादन	612615.00	1205250.00	592635.00
	कुल	**637582.00**	**1900693.00**	**1083111.00**

सफलता का असर

डेयरी व्यवसाय से श्रीमती सुमन की आमदनी प्रति वर्ष लगभग 6 लाख रुपये होती है जिससे उनके आर्थिक स्तर में सुधार हुआ है। इस बदलाव को देखते हुये क्षेत्र की अन्य महिलायें इनसे प्रेरणा प्राप्त कर रही हैं। खेती व पशु पालन एक दूसरे के पूरक होने के कारण खेत में लगातार गोबर की खाद डालने से भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ी है तथा इनकी खेती में प्रति इकाई उत्पादन गांव के अन्य किसानों की तुलना में अधिक है जिससे वे अब एक प्रगतिशील कृषक महिला के रूप में जानी जाती हैं। पशुपालन के प्रति इनके सर्मपण एवं सक्रियता के लिये हनुमानगढ़ के जिला कलेक्टर ने इन्हें प्र ास्ति–पत्र देकर सम्मानित किया है।

क्षेत्र में योगदान

बोलावाली गांव एवं आसपास के क्षेत्रों से लगभग 18 महिलायें इनसे प्रेरणा लेकर डेयरी को अपना रही हैं। श्रीमती सुमन की यह कर्मण्यता क्षेत्र की महिलाओं को यही संदे ा देता है कि "पशु पालन के प्रति सकारात्मक सोच, दृढ़ इच्छा भाक्ति और कृषि की नवीनतम तकनीक व नवाचार के उपयोग से खेती व सम्बन्धित व्यवसायों से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है तथा कौ ाल विकास प्रि ाक्षण प्राप्त करके तकनीकी को उपलब्ध संसाधनों व परिस्थितियों में अपनाकर किसान अपनी आय को दुगनी कर सकते हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. सन्तोष झाझडिया
विषय वस्तु वि ोषज्ञ (गृह विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, हनुमानगढ़–I (राज.)

16 कृषि विज्ञान केन्द्र - जयपुर-I

आय सृजन का स्रोत : फल–सब्जी मूल्य संवर्धन एवं परिरक्षण

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती नेहा सैनी**
पति का नाम	:	श्री मनोज सैनी
उम्र	:	27 वर्ष
शिक्षा	:	आठवीं पास
पता	:	ग्राम–म्हारकलां, विकास/तहसील–चौमूँ जिला–जयपुर (राजस्थान)
फोन नम्बर	:	9929174190
सफलता का क्षेत्र	:	फल तथा सब्जी परिरक्षण
प्रेरणा स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, जयपुर–1 (राज.)

पृष्ठभूमि

हमारे भोजन में फल व सब्जियों का बड़ा महत्व है। कृषि विज्ञान केन्द्र, चौमूँ ने क्षमतावान क्षेत्र की पहचान कर वर्ष 1996 से ही आंवले की खेती को प्रोत्साहित किया। इसमें नर्सरी प्रबंधन, समन्वित पोषण और कीट प्रबंधन जैसी अनुकूल प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से चौमूँ क्षेत्र में सब्जियों के उत्पादन को बढ़ावा दिया। लेकिन खाद्य प्रसंस्करण में सुविधाओं की कमी के कारण किसान अपनी फसल कम दामों पर बेचने को मजबूर थे और कभी–कभी तो इसका दाम 2–3 रू. प्रति किलोग्राम ही मिलता था, इसको मद्देनजर रखते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र ने इसमें पहल की, ताकि कुल उपज का लगभग 35 प्रतिशत भाग घरेलू उत्पादों के रूप में संरक्षित किया जा सके। इस बात को ध्यान में रखते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र ने 1996 से निरन्तर ''फल तथा सब्जी परिरक्षण'' पर प्रशिक्षण आयोजित करता आ रहा है, जिसमें बहुत सी महिलायें आयीं और इस कार्य को निपुणता के साथ सीखा तथा अपने परिवार के लिए अचार, चटनी, मुरब्बा, शर्बत आदि बनाना प्रारम्भ किया। ऐसे ही एक प्रशिक्षण के दौरान श्रीमती नेहा सैनी भी कृषि विज्ञान केन्द्र में आयी और प्रशिक्षण प्राप्त किया और वही से शुरू हुआ, उनकी सफलता का सफर। श्रीमती नेहा सैनी के पास एक एकड़ खेती की जमीन थी, जिसमें उन्होंने आंवले के पौधे लगा रखे थे, जिसके प्रबंधन का कार्य वह करती थी, परन्तु उनकी आय परिवार की आजीविका हेतु पर्याप्त नहीं थी। कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आने के बाद, उन्होंने फल तथा सब्जी परिरक्षण के अंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने ज्ञान एवं कौशल में प्रवीणता हासिल कर ली।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, चौमूँ में कृषि एवं पशुपालन के साथ–साथ विशेष रूप से फल तथा सब्जी परिरक्षण से संबंधित विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकियों पर दक्षता हासिल की। तत्पश्चात् श्रीमती नेहा ने फल तथा सब्जी परिरक्षण इकाई वर्ष 2020 में प्रारम्भ की, जिसमें वह आंवला मुरब्बा, आंवला कैण्डी तथा विभिन्न प्रकार के अचार बनाने प्रारम्भ किये।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आर्या योजना के अन्तर्गत आयोजित 'फल तथा सब्जी परिरक्षण' विषय में प्रशिक्षण प्राप्त कर श्रीमती सैनी ने आंवला के विभिन्न उत्पाद जैसे आंवला मुरब्बा, आंवला कैण्डी, आंवाल अचार, आंवला लड्डू, आंवला बर्फी, आंवला पाचक,

आंवला गटागट तथा अन्य प्रकार के अचार इत्यादि का उत्पादन शुरू किया और अब वह लगभग 6–10 लाख रू. प्रतिवर्ष की आय अर्जित कर रही हैं। उन्होंने अपने इस कार्य में 10 अन्य महिलाओं को भी जोड़ कर उन्हें रोजगार प्रदान कर सशक्त बनाया।

आमदनी

उद्यम / गतिविधि	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध आमदनी (रू)
आंवला मुरब्बा	120000.00	200000.00	80000.00
आंवला कैण्डी	115000.00	200000.00	85000.00
विभिन्न प्रकार के अचार	210000.00	300000.00	90000.00
कुल	**445000.00**	**700000.00**	**255000.00**

सफलता का असर

श्रीमती नेहा सैनी के फल तथा सब्जी परिरक्षण इकाई की सफलता को देखते हुए अन्य कृषक महिलाओं के लिए से एक प्रेरणा का स्रोत बन गयी हैं। अब वह एक प्रगतिशील महिला कृषक के रूप में जानी पहचानी जाती हैं। इनके उक्त कार्यों से प्रभावित होकर राजस्थान डीडी–1 एवं दूसरे अन्य चैनलों ने भी इनकी सफलता की कहानी को प्रसारित किया है। इनका कहना है कि यदि व्यक्ति दृढ़ निश्चय कर ले तो सफलता उससे दूर नहीं।

क्षेत्र में योगदान

चौमूँ एवं आस–पास के क्षेत्र में लगभग 80 प्रतिशत कृषक महिलायें श्रीमती नेहा सैनी के प्रयासों को देखकर उनके कार्यों का अनुसरण कर रही है। श्रीमती नेहा सैनी को उनके उक्त उत्कृष्ठ कार्यों के लिए समय–समय पर उनको कृषि विज्ञान केन्द्र तथा स्थानीय एवं जिला स्तरीय संस्थाओं ने प्रशस्ति–पत्र भी प्रदान किये हैं। उन्होंने एफ.एस.एस.ए.आई. (FSSAI) के अन्तर्गत अपने सभी उत्पादों का पंजीकरण भी करवा रखा है जिससे वह अपनी गुणवत्ता कायम रखते हुए उचित दामों पर बेच सके।

संकलनकर्ता
डॉ. स्मिता भटनागर
विषय विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, जयपुर–I (राज.)

17 कृषि विज्ञान केन्द्र - जयपुर-II

बागवानी आधरित कृषि प्रणाली को अपना कर महिला कृषक बनी उद्यमी

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती सरोज यादव**
पति का नाम	:	श्री ओमप्रका ा यादव
उम्र	:	33 वर्ष
शिक्षा	:	एम.ए. बीएड.
पता	:	ग्राम/पोस्ट–सुजात नगर, तहसील–पावटा जिला–जयपुर (राजस्थान)
सफलता का क्षेत्र	:	बागवानी आधारित समन्वित कृषि प्रणाली
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटपुतली, जयपुर–।। राज्य उद्यान एवं कृषि विभाग, जयपुर (राज.)

पृष्ठभूमि

ि ाक्षित कृषक महिला श्रीमती सरोज यादव बचपन से ही कृषि कार्य से जुड़ी हैं। शुरुआत में उनके परिवार को खेती से न तो फायदा होता था और न ही नुकसान इसलिए श्रीमती सरोज एक शिक्षित महिला होने के नाते खेती को लाभकर बनाने के रास्ते तलाशने लगीं। इस संदर्भ में उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, कोटपुतली, जयपुर–।। में सम्पर्क किया और कृषक प्रि ाक्षण में भाग लिया। तत्प चात् उन्होंने बागवानी, कृषि एवं प ाुपालन संबंधित विभिन्न प्रि ाक्षणों में प्रतिभाग कर आधुनिक एवं लाभकारी कृषि तकनीकियों की समुचित जानकारी प्राप्त कर ज्ञान अर्जित किया साथ ही बागवानी नर्सरी पर 7 दिवसीय व्यवसायिक प्रि ाक्षण प्राप्त किया। इसके अलावा वे कृषि भोाध पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से भी समय–समय पर अपना ज्ञानवर्धन करती रहीं और बागवानी, मधुमक्खीपालन, कृषि एवं प ाुपालन में अपने ज्ञान एवं कौ ाल में प्रवीणता हासिल कर ली।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटपुतली, जयपुर–।। ने श्रीमती सरोज को बागवानी, बैमोसमी सब्जियां, केंचुआ खाद उत्पादन, कृषि एवं प ाुपालन के साथ–साथ मधुमक्खी पालन से सम्बन्धित विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकियों पर प्रि ाक्षित कर उनको कृषि, प ाुपालन वि ोषकर बागवानी में दक्षित किया। तत्प चात् श्रीमती सरोज ने कृषि विज्ञान केन्द्र के विषय वि ोषज्ञों एवं उद्यान एवं कृषि विभाग के कृषि अधिकारी के तकनीकी पर्यवेक्षण एवं मार्गद िन में वर्ष 2018 से 6.25 एकड़ कृषि भूमि पर खेती करनी भाुरू की। अब वे अपने खेत में बागवानी नर्सरी, मधुमक्खीपालन, केंचुआ खाद उत्पादन, बैमोसमी सब्जियों एवं फलों का उत्पादन कर रही हैं।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र, उद्यान एवं कृषि विभाग की आधुनिक एवं लाभकारी जैविक कृषि तकनीकियों से ज्ञान एवं दक्षता हासिल करके, श्रीमती सरोज ने बागवानी नर्सरी, मधुमक्खीपालन, केंचुआ खाद उत्पादन, अगेती टमाटर, पपीता, गेहूँ एवं बाजरा इत्यादि का उत्पादन भाुरू किया और अब वे लगभग 8 लाख रूपये का लाभ प्राप्त कर रही हैं जिसमें से लगभग 2.5 लाख रूपये से अधिक का लाभ बागवानी नर्सरी, तथा 2 लाख रूपये से अधिक का लाभ मधुमक्खी पालन से कर रही हैं।

आमदनी

उद्यम / गतिविधि	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध आमदनी (रू)
1. बाजरा	12627.00	25157.00	12530.00
2. गेंहू	1362.00	47082.00	45720.00
3. पपीता	82130.00	214730.00	132600.00
4. टमाटर	44740.00	129560.00	84820.00
5. बागवानी नर्सरी	70100.00	360500.00	290400.00
6. मधुमक्खी पालन	192400.00	340000.00	147600.00
7. केचुआ खाद उत्पादन	1800.00	35300.00	33500.00
8. गाय	110000.00	158320.00	48320.00
कुल	**515159.00**	**1310649.00**	**795490.00**

सफलता का असर

श्रीमती सरोज अपनी बागवानी एवं कृषि गतिविधियों एवं अन्य कृषि कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के लिए अन्य कृषक महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और वे एक प्रगति ील महिला किसान के रूप में जानी पहचानी जाती हैं। अब श्रीमती सरोज को रेडियो वार्ता (कोटपूतली डायरी) एवं विभिन्न कृषि संबंधित प्र िक्षण कार्यक्रमों में प्रगति ील महिला किसान के रूप मे आमंत्रित किया जाता है। साथ ही वह एक प्रेरणा स्रोत, द्वारपाल, रायनेता, पराम ीदाता के रूप में कार्य करती हैं।

क्षेत्र में योगदान

कोटपुतली एवं आसपास के क्षेत्रों में लगभग 80 प्रति ात किसान श्रीमती सरोज के प्रयासों के कारण बागवानी नर्सरी, मधुमक्खीपालन एवं केंचुआ खाद उत्पादन का अनुसरण कर रहे हैं। बागवानी एवं कृषि के प्रति इनके समर्पण एवं विभिन्न क्षेत्रों में सक्रियता के लिए इन्हें कई स्थानीय एवं जिलास्तरीय प्र ास्ति / प्र ंसा पत्र मिले हैं।

श्रीमती सरोज बागवानी एवं कृषि गतिविधियों को एक उद्यम / व्यवसाय के रूप में करने के लिए कई महिला किसानों की एक प्रेरणा स्रोत हैं साथ ही वह बागवानी के साथ विकास के पथ का एक आद ी उदाहरण हैं।

संकलनकर्ता
ले. कर्नल डॉ. सुपर्ण सिंह शेखावत, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
डॉ. योगेन्द्र कुमार मीणा, विषय वि ोषज्ञ (उद्यान)
डॉ. संतोष देवी सामोता, विषय वि ोषज्ञ (प्रसार ि ाक्षा)
कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटपुतली, जयपुर–II (राज.)

18 कृषि विज्ञान केन्द्र - जालोर

समन्वित खेती बनी महिला सशक्तिकरण का आधार

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती सुवा देवी**
पति का नाम	:	श्री नाथा राम
शिक्षा	:	अशिक्षित
पता	:	ग्राम–उम्मेदाबाद, पंचायत समिति–सायला जिला–जालोर (राजस्थान)
फोन नंबर	:	9950821934
सफलता का क्षेत्र	:	समन्वित कृषि प्रणाली
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, जालोर (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती सुवा देवी एक होनहार किसान महिला हैं। अशिक्षित होने के कारण वह खेती के अलावा अन्य कार्य कर पाने में असमर्थ थीं परन्तु खेती एवं पशुपालन से सम्बंधित कार्यों में दक्ष थीं। खेती में अत्यधिक मुनाफा न होने के कारण वह कृषि विज्ञान केंद्र, जालोर से जुडी तथा नवाचारों एवं कृषि तकनीकी सम्बन्धी प्रशिक्षण लिया।

तकनीकी हस्तक्षेप

श्रीमती सुवा देवी एवं उनके पति श्री नाथाराम जी कृषि विज्ञान केंद्र,जालोर से करीब 7 वर्ष से जुड़े हुए हैं। वे प्रथम पंक्ति प्रदर्शन (NFSM तिलहन), सब्जी उत्पादन, संस्थागत एवं असंस्थागत प्रशिक्षण, मूल्य संवर्धन, गृह विज्ञान, प्रक्षेत्र दिवस एवं केंद्र द्वारा आयोजित किसान गोष्ठियों आदि में भाग लेकर विभिन्न तकनीकों तथा नवाचारों को अपनाने के साथ–साथ खेती में नवाचार करके न केवल खेती को लाभदायक बनाया बल्कि क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बनीं।

सफलता का विवरण

श्रीमती सुवा देवी कृषि विज्ञान केंद्र, जालोर द्वारा कृषि, बागवानी एवं पशुपालन से सम्बन्धित प्रशिक्षण में दक्षता हासिल कर 5 लाख रुपये तक की आय प्रतिवर्ष ले रही हैं तथा कृषि में अन्य नवाचार को भी लगातार अपनाने का प्रयास कर रही हैं।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1	सरसों	45000.00	120000.00	75000.00
2.	सब्जियां	65300.00	170000.00	104700.00
3.	पशुपालन	81000.00	150000.00	69000.00
4.	बाजरा	24300.00	62800.00	38500.00
	कुल	**215600.00**	**502800.00**	**287200.00**

सफलता का असर

उम्मेदाबाद गाँव में ज्यादातर महिलाएं अशिक्षित हैं एवं जानकारी के अभाव में घर से बहार ही नहीं जाती। ऐसे में श्रीमती सुवा देवी जी उन महिलाओं को घर के बहार खेती से सम्बन्धित प्रशिक्षण में भाग लेने हेतु जागरूक करती हैं जिससे कि वे भी खेती में नवाचारों से जुड़कर लाभ कमा सकें।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती सुवा देवी एवं उनके पति श्री नाथाराम जी के खेत में उत्पादित सब्जियों को किसान सीधे उनसे सही दाम में खरीद लेते हैं तथा अन्य सब्जियाँ वे उम्मेदाबाद मंडी में बेचते हैं जिससे कि स्थानीय लोगों को खरीद हेतु जैविक सब्जियां सुलभ हो सकें एवं उन्हें सही दाम में ताजी सब्जियां मिल सकें। खेती एवं सब्जी उत्पादन में श्रीमती सुवा जी की सफलता को देखते हुए कई किसान महिलाएं उनसे सलाह लेने आती हैं। अब श्रीमती सुवा जी अपने आस पास की महिलाओं के लिए खेती में नवाचार करने हेतु एक प्रेरणा स्रोत हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. नेहा गहलोत
विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)
कृषि विज्ञान केंद्र जालोर (राज.)

19 कृषि विज्ञान केन्द्र - झुंझुनूँ

एम.बी.ए. पास कविता ने वर्मीकम्पोस्टिंग को बनाया उद्यम

कृषक का विवरण

नाम	:	**सुश्री कविता जाखड़**
पिता का नाम	:	श्री सुरेन्द्र जाखड़
आयु	:	25 वर्ष
शिक्षा	:	एमबीए
पता	:	एफ–19 इण्डस्ट्रीयल एरिया रिको झुंझनूँ–333001 (राजस्थान)
फोन नंबर	:	8619272688
सफलता का क्षेत्र	:	वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन
प्रेरणा का स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूँ (राज.)

पृष्ठभूमि

सुश्री कविता जाखड़ ने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद मुंबई के प्रतिष्ठित महाविद्यालय से एम.बी.ए. किया। व्यवसाय प्रबंधन में परास्नातक करने के बाद अचानक पूरे देश में कोविड–19 के चलते लॉकडाउन लग गया जिस कारण कविता को अपने गाँव खुड़ाना आना पड़ा। घर पर रहकर कविता का कृषि से संबंधी कोई व्यवसाय करने का विचार आया। काफी रिसर्च करने के बाद कविता ने वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन इकाई लगाने की सोची लेकिन इसके बारे में इन्हें कोई तकनीकी जानकारी नहीं थी।

तकनीकी हस्तक्षेप

सुश्री कविता ने तकनीकी जानकारी प्राप्त करने के किए कृषि विज्ञान केंद्र, झुंझुनूं में संपर्क किया। कविता ने कृषि विज्ञान केंद्र पर स्थित वर्मीकम्पोस्ट इकाई का भ्रमण किया व इसके लिए आवश्यक मूलभूत आवश्यकताओं के बारे में जाना। इनकी लगन देख कृषि विज्ञान केंद्र, झुंझुनूं के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. दयानन्द ने इन्हें वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन से सम्बन्धित सभी तकनीकी जानकारी दी व पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

सफलता का विवरण

सुश्री कविता ने कृषि विज्ञान केंद्र झुंझुनूं से तकनीकी जानकारी लेने के बाद "खादवाला ओर्गेनिक्स" के नाम से अपनी वर्मीकम्पोस्ट इकाई की स्थापना की। इसके लिए कविता ने अपने रिटायर्ड फौजी पिता श्री सुरेन्द्र जाखड़ की मदद से एक टिन शेड तैयार किया तथा उसमें वर्मी बैड बनाये। गौशाला से कच्चा गोबर खरीदना शुरू किया तथा कृषि विज्ञान केंद्र झुंझुनूं से उत्तम क्वालिटी के केंचुएं खरीदकर उत्पादन शुरू किया। समय–समय पर कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष से सलाह लेती रहीं जिस से मात्र 90 दिन में खाद तैयार होने लगी। डॉ. दयानन्द की सलाह अनुसार वर्मीकम्पोस्ट में ट्राइकोडर्मा पाउडर मिलाना भी शुरू किया जिससे फफूंद जनित मृदा रोगों से फसलों को बचाया जा सके।

झुंझुनूं पत्रिका

खुडाना गांव की रहने वाली है कविता, मां का मिल रहा सहयोग

अंग्रेजी में पढ़ी, दिल्ली से स्नातक, मुम्बई से एमबीए

अब बेच रही गोबर, बचा रही 1 लाख

आमदनी

सुश्री कविता जाखड़ ने तैयार खाद को प्रिंटेड बैग्स में पैक करके बेचना भुरू किया। और अब वह इस खाद को मांग के अनुसार सीकर, झुंझुनूं, जयपुर व दिल्ली में भेजती हैं। वह वर्मीकम्पोस्ट 5–10 रुपये प्रति किलोग्राम व केंचुएं 300 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से बेच रही हैं। वर्तमान में कविता वर्मीकम्पोस्ट खाद व केंचुएं बेचकर लगभग 1 लाख प्रति महीने आमदनी कमा रही हैं।

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1	वर्मीकम्पोस्ट इकाई	6.65 लाख	12.50 लाख	5.85 लाख

सफलता का असर

अखबार में सुश्री जाखड़ की सफलता की कहानी पढ़कर पढे–लिखे युवा वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन से संबंधित जानकारी हेतु कृषि विज्ञान केंद्र, झुंझुनूं से सम्पर्क कर रहे हैं।

क्षेत्र में योगदान

सुश्री कविता ने अपनी इकाई में 3 व्यक्तियों को स्थायी रोजगार दे रखा है तथा इसके अलावा कविता कृषि विज्ञान केंद्र के कार्यक्रमों में भाग लेकर, डिजिटल माध्यम से व पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से वर्मीकम्पोस्ट का जैविक खेती मे महत्व के बारे लगातार बताती रहती हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. दयानन्द
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केंद्र झुंझुनूं (राज.)

20 कृषि विज्ञान केन्द्र - जोधपुर-I

शुष्क क्षेत्र में बागवानी द्वारा महिला कृषक की प्रगति की राह बनी आसान

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती विमला सिहाग**
पति का नाम	:	श्री चन्द्रशेखर सिहाग
आयु	:	48
शिक्षा	:	दसवीं
पता	:	बोरानाडा, जोधपुर (राजस्थान)
फोन नंबर	:	9460993202
सफलता का क्षेत्र	:	भाुष्क बागवानी
प्रेरणा का स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र जोधपुर–। (राज.)

पृष्ठभूमि

जोधपुर की बेर क्वीन के नाम से पहचाने जाने वाली प्रगतिशील महिला कृषक श्रीमती विमला सिहाग ने खेती में नए प्रयोगों को अपना कर कृषि में एक नया मुकाम हासिल किया है। श्रीमती विमला जी अपने चौपासनी स्थित फार्म हॉउस में 3 हेक्टेयर जमीन पर जैविक पद्धति द्वारा बेर, गूंदा, आंवला व सब्जियों की उन्नत खेती कर रही हैं।

तकनीकी हस्तक्षेप

श्रीमती विमला जी कृषि विज्ञान केन्द्र, जोधपुर से प्रशिक्षण प्राप्त कर वर्ष 2012 में लगभग 1 हेक्टयेर जमीन पर काजरी बेर की उन्नत किस्में सेव, गोला, उमरान व टिकडी के कुछ पौधे लगाये इसके बाद स्वयं ने देसी बेर में इन किस्मों की ग्राफ्टिंग कर खेती से प्रथम वर्ष में ही 1 लाख रुपये की आय प्राप्त की। वर्तमान में उनके फार्म पर बेर के लगभग 230 पेड़ लगे हुए हैं। जिसमें इस वर्ष औसतन 80 किलो प्रति पेड़ उपज प्राप्त की है।

सफलता का विवरण

श्रीमती सिहाग ने अपने खेत में राय गुन्दी के पौधों पर कलम चढ़ा कर गुंदों के उन्नत किस्म के पेड़ तैयार किये, जो अधिक पैदावार देने में सक्षम हैं। पिछले चार सालों से अपने खेत पर टमाटर, मिर्च व बैंगन की फसल भी लेने लगी हैं जिससे प्रति वर्ष 3 से 4 लाख रूपये की अतिरिक्त आय प्राप्त हो रही है। उनके इस कार्य में उनका पूरा परिवार भी सहयोग करता है।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1.	बेर	200000.00	480000.00	280000.00
2.	गूंदा	50000.00	120000.00	70000.00
3.	मौसमी सब्जियाँ	120000.00	240000.00	120000.00
	कुल	**370000.00**	**840000.00**	**470000.00**

सफलता का असर

श्रीमती विमला जी को काजरी व राजस्थान सरकार की ओर से समय–समय पर कृषि के क्षेत्र में उनके नवाचारों व प्रयासों के लिए विभिन्न पुरुस्कारों से नवाजा गया है। इजरायल की कृषि तकनीक जानने गए राज्य सरकार के प्रतिनिधि मंडल में एक मात्र महिला किसान के रूप में इनका चयन भी इनकी योग्यता व अनुभव की सफलता की कहानी कहता है।

क्षेत्र में योगदान

जिस प्रकार श्रीमती विमला जी ने अपने पड़ोसी के बेर के बगीचों से प्रभावित होकर स्वयं भी खेती में नवाचारों को अपनाया ठीक उसी तरह से आस पास के गांवों से लगभग 11 महिला एवं 32 पुरुष किसानों ने उनसे प्रेरणा लेकर बेर के बगीचे लगाये हैं। इसके अलावा भी श्रीमती सिहाग के फार्म पर आने वाले सभी किसानों व आगुंतकों को काजरी द्वारा सीखी गई पौध संवर्धन की तकनीकियों को बड़े उत्साह व प्रेम से सिखाती हैं। साथ ही ये पिछले दस सालों से कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुर–। काजरी से सक्रिय रूप में जुड़ी हुई हैं। कृषि विज्ञान केंद्र व काजरी के कृषक मित्र की भूमिका में परिसर में होने वाली विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में महिलाओं में जागरूकता व उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करने का अहम् कार्य कर रही हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. पूनम कालश
विषय विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)
कृषि विज्ञान केंद्र, काजरी, जोधपुर (राज.)

21 कृषि विज्ञान केन्द्र - करौली

जैविक गेहूँ उत्पादन नें बढ़ायी आमदनी

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती मौसम बाई मीणा**
पति का नाम	:	श्री लाखीराम
उम्र	:	32 वर्ष
शिक्षा	:	5वीं
पता	:	ग्राम–धांधूरेत, तहसील–सपोटरा जिला–करौली (राजस्थान)
सफलता का क्षेत्र	:	जैविक खेती
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, करौली (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती मौसमबाई के पास अपने परिवार के पालन–पोषण हेतु 2.0 हेक्टेयर भूमि है। पत्थरीली, ऊबड़–खाबड, अनुपजाऊ भूमि, पानी का अभाव तथा वर्षा जल का बहाव डांग क्षेत्र की मुख्य समस्याएं हैं। उक्त समस्याओं के साथ पारम्परिक तरीकों से धान (छिटकवां विधि) व गेहूँ की खेती कर आजीविका चलाना श्रीमती मौसमबाई के लिए एक मु कल कार्य था। श्रीमती मौसम बाई वर्षा जल संग्रहण कर आधुनिक तरीकों से खेती कर आजीविका चलाने के रास्ते तला ा रही थीं। इसी क्रम में वाटर भोड ट्रस्ट स्वयं सेवी संस्था के सहयोग से कृषि विज्ञान केन्द्र, करौली के सम्पर्क में आयीं एवं उन्हें अपनी कृषि से संबधित समस्याओं से अवगत कराया।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, करौली के वैज्ञानिकों ने समस्या का विश्लेषण कर उसके अनुरूप संस्थागत तथा असंस्थागत प्रशिक्षणों के माध्यम से उन्हें कृषि एवं संबंधित व्यवसाय वि ोषकर जैविक खेती वर्मीकम्पोस्टिंग इत्यादि में दक्ष किया तथा परम्परागत कृषि विकास योजना के तहत 0.5 हेक्टेयर क्षेत्र में जैविक गेहूँ उत्पादन व 0.25 हेक्टेयर क्षेत्र में SRI विधि द्वारा धान उत्पादन हेतु प्रथम पंक्ति प्रदर्शन लगाये। साथ ही इनके यहाँ वर्मीकम्पोस्ट पिट भी बनवाये गये। इसके अलावा वाटर भोड ट्रस्ट स्वयं सेवी संस्था द्वारा वर्षा जल संग्रहण हेतु खेत के चारों ओर पगारे एवं चेकडेम भी बनाये गये।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र की आधुनिक व लाभकारी जैविक कृषि तकनीकों के माध्यम से श्रीमती मौसम बाई ने 1 हेक्टेयर भूमि में जैविक गेहूँ का उत्पादन कर 67000 रू. तथा 1 हेक्टेयर भूमि में एस.आर.आई. विधि द्वारा धान उत्पादन कर 64600 रूपये प्रति हेक्टेयर भुद्ध मुनाफा कमाया।

आमदनी

उद्यम/गतिविधि	कुल लागात (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध आमदनी (रू)
जैविक गेहूं की खेती	37750.00	104750.00	67000.00
SRI विधि द्वारा धान उत्पादन	26000.00	90600.00	64600.00
कुल	**63750.00**	**195350.00**	**131600.00**

सफलता का असर

श्रीमती मौसम बाई अपनी कृषि गतिविधियों तथा अन्य कृषि कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के लिये डांग क्षेत्र की अन्य महिलाओं के लिये प्रेरणा स्रोत हैं। वर्तमान में श्रीमती मौसमबाई अपने व आस–पास के गांवों की अन्य महिलाओं को जैविक खेती तथा एस.आर.आई. विधि द्वारा धान उत्पादन हेतु प्रशिक्षित कर रही हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. शंकर लाल कस्वां
विषय विशेषज्ञ (शस्य विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, करौली (राज.)

22 कृषि विज्ञान केन्द्र - नागौर-I

प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से विकास की राह पर

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती पाना देवी**
पति का नाम	:	रामचन्द
आयु	:	52 वर्ष
शिक्षा	:	साक्षर
पता	:	झाड़ेली, नागौर (राजस्थान)
फोन नंबर	:	9982413310
सफलता का क्षेत्र	:	बकरी पालन
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र नागौर–। (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती पाना देवी एक श्रमिक वर्ग से जुड़ी महिला जिनके पास आजीविका का कोई निि चत स्रोत नहीं हैं, जो दिन भर गांव में काम कर अपनी आजीविका चलाती थी। श्रीमती पाना देवी के पास 5 बीघा असिंचित जमीन है, असिचिंत होने के कारण कोई विशेष आमदनी नहीं होती थी।

तकनीकी हस्तक्षेप

श्रीमती पाना देवी कृषि विज्ञान केन्द्र, नागौर–। के साथ जुड़कर पोषण वाटिका, स्वरोजगार, खेती एवं पशुपालन से सम्बधित प्रशिक्षणों में भाग लिया जिससे प्रशिक्षण के साथ उनका उत्साहवर्धन हुआ। इसके परिणाम स्वरूप उन्होंने ने अपना विकास का रास्ता चुन लिया।

सफलता का विवरण

इस दौरान श्रीमती पाना देवी ने आजीविका को संवर्धन करने के लिए प्रयास शुरू किये। कृषि विज्ञान केन्द्र, नागौर–। के वैज्ञानिकों की सलाह से इन्होंने दो बकरियाँ खरीदी और बकरी पालन को आमदनी का स्रोत बनाने लगी। साथ ही बकरियों की संख्या बढ़ाने लगी। वर्तमान में इनके पास 12 बकरियां हैं, जिससे आमदनी होती है। केन्द्र ने इनकी आजीविका सुधार के लिए प्रयास जारी रखे। इसी प्रयास में श्रीमती पाना देवी ने एक छोटी सी परचून की दुकान शुरू की एवं इसका सफल संचालन किया। आज दुकान से प्रति माह 5 से 6 हजार की आय होती है। अब इन्हें खेती, दुकान व बकरी से आय होने लगी है और इस आय से वे परिवार की आजीविका चला रही हैं। इसके अलावा वे पोषण वाटिका लगाकर सब्जियों पर होने वाले खर्च को भी बचा रही हैं।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध लाभ (रू)
1.	12 बकरियां	22000.00	118000.00	96000.00
2.	मूंग (0.8 हेक्टर)	20100.00	53250.00	33150.00
3.	दुकान	30000.00	90000.00	60000.00
	कुल	**72100.00**	**261250.00**	**189150.00**

सफलता का असर

श्रीमती पाना देवी कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रि क्षणों एवं खेती–बाड़ी में सक्रिय होने के कारण अन्य ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। वह आस–पास की अन्य किसान एवं किसान महिलाओं को खेती–बाड़ी से सम्बन्धित सलाह भी देती हैं।

क्षेत्र में योगदान

झाड़ेली ग्राम में श्रीमती पाना देवी स्वयं सहायता समूह की सचिव होने के नाते अन्य ग्रामीण महिलाओं को भी आय सृजन करने एवं उनके जीवन स्तर को बेहतर करने में सहायता कर रही हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. भावना शर्मा
विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)
कृषि विज्ञान केंद्र, नागौर–I (राज.)

23 कृषि विज्ञान केन्द्र - नागौर-II

पशुपालन बना आय का भरपूर स्रोत

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती मनोहर कँवर**
पति का नाम	:	श्री बलवीर सिंह
उम्र	:	34 वर्ष
शिक्षा	:	5वीं
पता	:	ग्राम–डाबड़ा, विकास / तहसील–डीडवाना जिला–नागौर (राजस्थान)
सफलता का क्षेत्र	:	पशुपालन एवं सिलाई
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, नागौर–।। एवं कृषि विभाग, नागौर (राजस्थान)

पृष्ठभूमि

श्रीमती मनोहर कँवर प्रारम्भ से ही कृषि कार्य से जुड़ी हुई हैं परन्तु उनके पास जमीन कम होने के कारण उन्हें खेती के साथ–साथ पशुपालन का सहारा लेना पड़ा। शुरुआत में उनके परिवार को पशुपालन से फायदा नहीं होता था इसलिए श्रीमती मनोहर कँवर एक शिक्षित महिला होने के नाते पशुपालन को लाभकर बनाने के रास्ते तलाशने लगी। इस संदर्भ में उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, नागौर के वैज्ञानिक एवं कृषि विभाग के कृषि अधिकारी से सम्पर्क किया और तत्प चात् उन्होंने कृषि एवं प ुपालन संबंधित विभिन्न प्रि क्षणों में भाग लेकर आधुनिक एवं लाभकारी कृषि तकनीकियों की समुचित जानकारी प्राप्त कर ज्ञान अर्जित किया साथ ही सिलाई का व्यवहारिक एवं प्रायोगात्मक प्रि क्षण भी प्राप्त किया।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, नागौर में श्रीमती मनोहर कँवर को कृषि एवं प ुपालन के साथ–साथ जैविक कृषि से सम्बन्धित विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकियों पर प्रि क्षित कर उनको प ुपालन में दक्षित किया। तत्प चात् श्रीमती मनोहर कँवर ने कृषि विज्ञान केन्द्र, के विषय विशेषज्ञों एवं कृषि विभाग के कृषि अधिकारी के तकनीकी पर्यवेक्षण एवं मार्गद िन में वर्ष 2019 से खेती के साथ ही 4 संकर नस्ल की गाय, 12 भेड़ एवं 7 बकरियों का पालन शुरू किया और खाली समय में सिलाई का काम करने लगी।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि विभाग की आधुनिक एवं लाभकारी कृषि एवं प ुपालन तकनीकियों से ज्ञान एवं दक्षता हासिल करके, प्रशिक्षण उपरान्त सीखी गई पशुपालन सम्बन्धित वैज्ञानिक तकनीकियों को अपनाने के उपरान्त श्रीमती कँवर ने अपने दुधारू पशुओं की सेहत में सुधार और दूध में बढ़ोतरी पाई। अब वे सालाना लगभग 5–6 लाख रूपये का लाभ प्राप्त कर रही हैं जिनमें पशुपालन से उन्हें अधिक आय प्राप्त हो रही है। श्रीमती कँवर को प्रशिक्षण में जैविक खाद बनाने की भी सलाह दी गई थी जिसे वे अब शुरू कर सकती हैं।

आमदनी

उद्यम/गतिविधि	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध आमदनी (रू)
1. पशुपालन	160000.00	375000.00	215000.00
2. बकरी पालन	80000.00	200000.00	120000.00
3. भेड़ पालन	100000.00	300000.00	200000.00
4. सिलाई	10000.00	60000.00	50000.00
कुल	**350000.00**	**935000.00**	**585000.00**

सफलता का असर

श्रीमती कँवर अपनी कृषि गतिविधियों एवं अन्य कृषि कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के लिए अन्य कृषक महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और वे अब एक प्रगति ील महिला किसान के रूप में जानी पहचानी जाती है। अब वे आसपास की महिलाओं को भी पशुपालन एवं सिलाई का प्रशिक्षण देती हैं।

क्षेत्र में योगदान

डाबड़ा एवं आसपास के क्षेत्रों में लगभग 30 प्रति त महिला किसान श्रीमती कँवर के प्रयासों के कारण पशुपालन एवं सिलाई का अनुसरण कर रहे हैं। श्रीमती कँवर, एक उद्यमी के रूप में कई महिला किसानों की एक प्रेरणा स्रोत हैं और साथ ही वह पशुपालन के साथ सिलाई के पथ का एक आद ा उदाहरण है।

संकलनकर्ता
डॉ. अर्जुन सिंह जाट
वरिष्ठ वैज्ञानिक (शस्य विज्ञान) एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केन्द्र, नागौर–II (राज.)

24 कृषि विज्ञान केन्द्र - पाली

पोषण वाटिका एवं मूल्य संवर्धन बना पोषण एवं आय का आधार

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती कूकी देवी**
पति का नाम	:	श्री प्रेमचंद
उम्र	:	47 वर्ष
शिक्षा	:	प्राथमिक
पता	:	तहसील–पाली, जिला–पाली (राजस्थान)
सफलता का क्षेत्र	:	पोषण वाटिका, मूल्य संवर्धन एवं परिरक्षण
प्रेरणा का स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, काजरी, पाली (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती कूकी देवी के पास कृषि हेतु जमीन उपलब्ध नहीं थी उनका परिवार आय के लिए पूर्णतया दैनिक मजदूरी पर ही निर्भर था। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब होती जा रही थी। कोरोना काल में मजदूरी के अवसर भी खत्म हो जाने के कारण वे आय के अन्य स्रोत के विषय में प्रयास करने लगी। उनके पास अपना स्वयं का कोई नया व्यवसाय शुरू करने हेतु भी धन नहीं था। तभी वे कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली के विषय वस्तु विशषज्ञों के संपर्क में आयीं। उनसे उन्होंने पोषण वाटिका और मूल्य संवर्धन एवं खाद्य परिरक्षण के विषय में सुना। उनके घर के पीछे आधा बीघा जमीन खाली पड़ी थी, जिसका वह कुछ भी उपयोग नहीं कर रही थीं। उसमें सिर्फ व्यर्थ का कूड़ा करकट एवं कबाड़ पड़ा था। कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा पोषण वाटिका पर विस्तृत प्रशिक्षण प्राप्त कर श्रीमती कूकी जी ने उस व्यर्थ जमीन की सफाई कर पोषण वाटिका लगाने का निर्णय लिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने मूल्य संवर्धन एवं परिरक्षण पर भी कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित सात दिवसीय व्यवसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रशिक्षण के दौरान ही उन्होंने इससे संबंधित अपना उद्योग शुरू करने का भी निश्चय किया।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली से सम्पर्क में आने के बाद उन्होंने पोषण वाटिका लगाना एवं उसका किस प्रकार रख रखाव किया जाये, विषय के सभी प्रशिक्षण प्राप्त किये। कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा इन्हें सब्जियों के बीज की किट और पौध तथा फलों के पौधे भी उपलब्ध करवाये गए। प्रदर्शन विधि द्वारा उनके घर के पीछे पोषण वटिका के लिए भूमि तैयार की एवं रेखांकन किया। आज श्रीमती कूकी जी इसमें पारंगत हो चुकी हैं। वे साल में सब्जियों की तीन फसल (रबी, खरीफ एवं जायद) लेती है। इससे न केवल उनके घर में सब्जी की आपूर्ति होती है बल्कि वे अतिरिक्त सब्जियों को बेच कर आमदनी भी प्राप्त कर रही हैं। वे अपनी पोषण वाटिका में जैविक खाद एवं जैविक कीट नाशकों का ही प्रयोग करती हैं जिससे उनकी पोषण वाटिका की सब्जियाँ अधिक पौष्टिक एवं गुणवत्ता से भरपूर हैं। श्रीमती कूकी देवी ने 7 दिनों के व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया, जिसमें खिचिया, रबोडी, बड़ी, पापड़ आदि जैसे विभिन्न मूल्यसंवर्धित उत्पाद बनाना सीखा। इस प्रशिक्षण में, वह खिचिया और रबोडी बनाने में बहुत कुशल हो गई। उन्होंने इस प्रशिक्षण में यह भी सीखा और जाना कि उद्यम कैसे शुरू किया जाए, ऋण प्रदान करने वाले संगठन कौन–कौन से हैं, आदि। इसके पश्चात् उन्होंने विशेष रूप से मूल्यसंवार्धित खिचिया और रबोडी तैयार करने की गतिविधि शुरू की। प्रशिक्षण घटक ने उन्हें उत्साह के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया। आज उनके उत्पाद ने क्षेत्र में अच्छा नाम कमाया है और लोग उनके उत्पाद को खरीदना पसंद करते हैं। स्थानीय खरीदार सीधे उनके घर से उत्पाद खरीदने आते हैं। मार्केटिंग उनके अपने गाँव से शुरू हुई थी जो अब स्थानीय मेलों, त्यौहारों, प्रदर्शनियों और बाजारों तक फैल गई है।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली से प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहयोग प्राप्त कर आज श्रीमती कूकी जी ने सफल पोषण वाटिका विकसित कर ली है। इससे न केवल उनके घर में सब्जी की आपूर्ति होती है बल्कि वे अतिरिक्त सब्जियों को बेच कर आमदनी भी प्राप्त कर रही है। अब उन्हें लगभग बाजार से सब्जियाँ नहीं खरीदनी पड़ती जिससे उन्हें 8000–8500 रुपये तक की सालाना बचत हो रही है एवं अतिरिक्त सब्जियों को बेचकर वे औसत 14,000 रुपये तक सालाना कमा रही हैं। मूल्य संवर्धित उत्पाद बनाकर वे सालाना 57,600 रुपये प्राप्त कर रही हैं। इस प्रकार उन्हें कुल 69,600 रुपये वार्षिक आय प्राप्त हो रही है।

उद्यम / गतिविधि	कुल लागत (रु.)	कुल आमदनी (रु.)	शुद्ध आमदनी (रु.)
1. पोषण वाटिका	2000.00	14000.00	12000.00
2. मूल्य संवर्धित उत्पाद	14580.00	72180.00	57600.00
कुल	**16580.00**	**86180.00**	**69600.00**

सफलता का असर

इस प्रकार श्रीमती कूकी देवी ने पोषण वाटिका लगाकर अपने परिवार के स्वास्थ्य, आर्थिक एवं सामाजिक स्तर में सुधार लाकर एक मिशाल कायम की है जो कि सराहनीय है। अपना स्वयं का उद्यम शुरू कर वे गाँव की अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनी है। अब गाँव की अन्य महिलाएं भी उनसे विचार विमर्श करती हैं तथा पोषण वाटिका एवं स्वयं का उद्यम शुरू करने के लिये राय लेती हैं। उनसे प्रेरित होकर कई महिलाओं ने पोषण वाटिका लगा कर जैविक फल एवं सब्जियों का उत्पादन शुरु किया है।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती कूकी देवी से प्रेरित होकर गाँव की अन्य महिलाएं भी पोषण वाटिका को रूचि से लगा रही हैं एवं अपने परिवार को ताजी सब्जियाँ उपलब्ध करवा कर उनके स्वास्थ्य स्तर को सुधार रही है। उन्होंने स्थानीय रूप से निर्मित उत्पादों के सफल उत्पादन और विपणन के कारण जिले की किसान महिलाएं इन गतिविधियों को अपनाने के लिए आगे आ रही हैं। श्रीमती कूकी देवी ने बहुत सी महिलाओं को मूल्य संवर्धन पर अपना उद्यम शुरू करने के लिए प्रशिक्षित किया है। कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रयास के साथ श्रीमती कूकी देवी के उत्साह ने महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता की इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जिसने ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर और अधिक आत्मविश्वासी बना दिया है। इस समूह की उपलब्धियों से प्रेरित होकर, अधिक से अधिक महिलाएँ इस गतिविधि की ओर आकर्षित हुई हैं और कृषि विज्ञान केन्द्र भी लगातार महिलाओं को आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण प्रदान करके उनकी सेवा कर रही है।

संकलनकर्ता
डॉ. धीरज सिंह, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली (राज.)

25 कृषि विज्ञान केन्द्र - प्रतापगढ़

जैविक खेती से बदली खेती की तस्वीर एवं महिला कृषक की तकदीर

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती सोना देवी**
पति का नाम	:	श्री घन याम जी शर्मा
आयु	:	38 वर्ष
शिक्षा	:	10वीं पास
पता	:	गांव कुलमीपुरा, तहसील एवं जिला प्रतापगढ़ (राजस्थान)
फोन नंबर	:	8824265662
सफलता का क्षेत्र	:	जैविक खेती
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, प्रतापगढ़ (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती सोना देवी बचपन से खेती–बाड़ी से जुड़ी हुई हैं। इनके पति मंदिर के पुजारी का काम करते हैं। इनके पास 3 बीघा भूमि ही खेती योग्य हैं। शुरुआत में इनके पास एक ही गाय थी। जिससे इनकी आय बहुत ही कम थी और घर का खर्चा पूरा नहीं होता था। तब यह राजस्थान ग्रामीण आजीविका कार्यक्रम (राजीविका) के माध्यम से केन्द्र के सम्पर्क में आई और जैविक खेती के करने के बारें में अपनी इच्छा जताई। साथ ही यह राजीविका के अन्तर्गत महिला समूह से जुड़ी।

तकनीकी हस्तक्षेप

श्रीमती सोना ने जैविक खेती के साथ–साथ पशुपालन भी अपनाने का विचार किया, जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र, प्रतापगढ़ के साथ–साथ राज्य कृषि विभाग के अधिकारियों से तकनीकी मार्गद न प्राप्त किया। सर्वप्रथम इन्होंने जैविक सब्जियां उगाना प्रारम्भ किया। इसके साथ ही इन्होनें पशुपालन में भी गहरी रुचि दिखाई और जैविक सब्जियों और दूध से अपनी आजीविका अर्जन करना प्रारम्भ किया।

सफलता का विवरण

आधुनिक एवं लाभकारी जैविक तकनीकी को अपनाकर श्रीमती सोना देवी ने सब्जियां, प्याज, लहसुन आदि का उत्पादन प्रारम्भ किया। साथ ही इन्होंने समूह से लोन लेकर गाय खरीदी और अपने खेत का सुधार भी करवाया। जिससे उनका उत्पादन बढ़ने लगा। इसके साथ ही उनको दूध से भी अतिरिक्त आय प्रारम्भ होने लगी। गोबर से इन्होंने वर्मीकम्पोस्ट खाद बनाना प्रारम्भ किया और इसे अपने खेत में उपयोग करने लगी। जैविक सब्जी होने के कारण इनको सब्जियों के दाम भी अधिक मिलने लगे। आज इनके पास 9 गायें हैं जिससे प्रतिदिन 70 लीटर दूध का उत्पादन हो रहा हैं। और यह प्रति माह 35 से 40 हजार रुपये का शुद्ध मुनाफा कमा रही हैं।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु.)	कुल आमदनी (रु.)	शुद्ध आमदनी (रु.)
1.	जैविक खेती (सब्जियां)	60000.00	240000.00	180000.00
2.	पशुपालन	250000.00	550000.00	300000.00
	कुल	**310000.00**	**790000.00**	**480000.00**

सफलता का असर

इनकी सफलता से प्रोत्साहित होकर समूह की कई अन्य महिलाएं भी जैविक खेती एवं पशुपालन को अपनाकर अपनी आजीविका बढ़ा रही हैं।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती सोना देवी जी आजीविका के साथ भी जुड़ी हुई हैं और वे अन्य महिलाओं को जैविक सब्जी उत्पादन एवं पशुपालन के बारे में जागरुक कर रही हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. योगेश कनोजिया
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी
कृषि विज्ञान केन्द्र, प्रतापगढ़ (राज.)

26 कृषि विज्ञान केन्द्र - सवाई माधोपुर

सिलाई बना महिला कृषक के विकास का पथ

कृषक का विवरण

कृषक का नाम	:	**श्रीमती नसीम बानो**
पति का नाम	:	श्री सेफ
उम्र	:	37 वर्ष
पता	:	गाँव–करमोदा, जिला–सवाई माधोपुर (राजस्थान)
शैक्षणिक योग्यता	:	9वीं
सफलता का क्षेत्र	:	सिलाई
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, सवाई मधोपुर (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती नसीम बानो पत्नी श्री सेफ जी पढी लिखी गृहणी हैं, इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, सवाई माधोपुर द्वारा आयोजित सिलाई के 7 दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण में भाग लिया तथा सिलाई की सभी तकनीकियाँ सीखी। इस प्रि क्षण में आज कल सबसे ज्यादा उपयोग में लिए जाने वाले पहनावे सलवार सूट व ब्लाउज की सिलाई करना सिखाया गया। प्रि क्षण के उपरान्त श्रीमती नसीम बानो ने अपना व्यवसाय शुरू कर लिया है। इसके अलावा उन्होने कृषि शोध पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से भी अपने ज्ञान को समय–समय पर अद्यतित करती रहीं और अब इन्होंने जैविक कृषि में अपने ज्ञान एवं कौशल में भी प्रवीणता हासिल कर ली है।

तकनीकी हस्तक्षेप

श्रीमती नसीम ने कृषि विज्ञान केन्द्र, सवाई माधोपुर द्वारा आयोजित सिलाई के 7 दिवसीय प्रि क्षण में भाग लिया तथा सिलाई की सभी तकनीकियाँ बारीकी से सीखी। इस प्रि क्षण में आज कल सबसे ज्यादा उपयोग में लिए जाने वाले पहनावे सलवार सूट व ब्लाउज की सिलाई करना सिखाया गया। प्रि क्षण के उपरान्त श्रीमती नसीम बानो सूट आदि की सिलाई में निपुण हो गयी और अब इन्होंने सिलाई को अपना व्यवसाय बना लिया है। वर्तमान में अपने मौहल्ले की सभी की औरतों के सूट सिलने का कार्य करती हैं और अब सिलाई करने से इनकी मासिक आय लगभग 30000 हजार रूपये प्रतिमाह हो जाती हैं।

सफलता का विवरण

श्रीमती नसीम बानो ने अपने सिलाई के व्यवसाय के प्रचार–प्रसार में एक पैसा भी खर्च नहीं किया। समय के साथ इनके कार्य और दक्षता की गांव के लोग भी सराहना करने लगे। इस व्यवसाय से घर बैठे ही वह 1000 रूपये प्रतिदिन कमा लेती हैं। ये इस व्यवसाय में अपनी सफलता का श्रेय कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों को देती हैं तथा समय–समय पर कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित प्रि क्षणों में भाग भी लेती रहती हैं। शुरुआत में वह दो तीन कपड़े ही एक सप्ताह में सिल पाती थीं। इनकी सिलाई के कार्य में सफाई के साथ एक कु ाल कारीगर की झलक दिखाई देती है।

आमदनी

उद्यम / गतिविधि	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	सकल आमदनी (रू)
सिलाई	10000 प्रतिमाह	30000 प्रतिमाह	20000 प्रतिमाह
कुल	**120000.00**	**360000.00**	**240000.00**

सफलता का असर

श्रीमती नसीम बानो उन सफलतम महिलाओं में शुमार हैं जिन्होंने निरन्तर अपनी मेहनत और दृढ़ इच्छा ाक्ति के बल पर आगे बढ़कर व अपनी कर्मठता से अपने व्यवसाय को चमकाया है। उनके सिले हुए सूट लोगों में लोकप्रिय होते जा रहे हैं। यदि कुछ करने की तमन्ना हो तो रास्ते अपने आप बनते चले जाते हैं। श्रीमती नसीम ने उन महिलाओं के लिए एक रास्ता खोल दिया है जो इस क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहती है। इनकी इच्छा भाक्ति एवं लगनता ने साबित कर दिया कि इस वि व में असम्भव कुछ भी नहीं है। यह आप स्वयं पर निर्भर करता है कि आप स्वयं किस तरह सोचते हैं।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती नसीम बानो कई महिला किसानों की एक प्रेरणा स्रोत हैं साथ ही सिलाई व खेती के साथ विकास के पथ का एक आदर्श उदाहरण हैं। श्रीमती बानो ने सिलाई के क्षेत्र में कार्य करने के लिए आस–पास की कई महिलाओं के लिए रास्ता खोल दिया है।

संकलनकर्ता
डॉ. चमनदीप कौर, विषय विशेषज्ञ गृह विज्ञान
डॉ. सुरेश बैरवा, विषय विशेषज्ञ उद्यान विज्ञान
डॉ. भरत लाल मीना, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केंद्र सवाई माधोपुर (राज.)

27 कृषि विज्ञान केन्द्र - श्रीगंगानगर

समन्वित कृषि प्रणाली से महिला कृषक ने पायी समृद्धि

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती गुरजीत कौर**
पति का नाम	:	श्री मनिंदर सिंह
आयु	:	39 वर्ष
शिक्षा	:	बी.ए.
पता	:	गाँव–3 सी सी, ग्राम पंचायत–16 बी बी, तहसील–पदमपुर, जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
फोन नंबर	:	8955349295
सफलता का क्षेत्र	:	समन्वित कृषि प्रणाली
प्रेरणा स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केंद्र, श्रीगंगानगर (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती गुरजीत कौर, एक समर्पित और अभिनव महिला किसान हैं उनके परिवार के पास 15.82 एकड़ जमीन है। वे अपने खेत में चार वर्ष पहले परम्परागत खेती करते थे तथा फसलों की स्थानीय किस्मों की बुवाई करते थे। उनके पास एक भैंस व एक गाय थी जो कि वैज्ञानिक प्रबंधन के अभाव में कम दूध देती थी। खेती के स्थानीय तरीकों को अपनाने के कारण वे अपनी खेती से ज्यादा मुनाफ़ा नहीं कमा पा रहे थे। चूंकि श्रीमती गुरजीत एक शिक्षित महिला थीं इसलिए वे खेती को लाभप्रद बनाने के अवसर खोजने लगीं। इस संदर्भ में उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, श्रीगंगानगर के वैज्ञानिकों से संपर्क किया और कृषि एवं पशुपालन से संबन्धित विभिन्न प्रशिक्षणों में जानकारी प्राप्त की। तत्पश्चात् उन्होने कृषि विज्ञान केंद्र से जुड़कर समन्वित कृषि प्रणाली को अपनाकर निरंतर एवं अधिक आय प्राप्त करने हेतु प्रयास शुरू किये।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, श्री गंगानगर द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में श्रीमती गुरजीत नें एकाग्रचित हो कर भाग लिया और उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र के मार्गदर्शन में मूँग एवं चने की उन्नत किस्म एवं तकनीक के प्रथम पंक्ति प्रदर्शन लगाए। साथ ही फल–सब्जी व फसल उत्पादन तकनीकों, पोषण वाटिकाएं उन्नत डेयरी व्यवसाय, मुर्गी पालन, बकरी पालन इत्यादि पर भी प्रशिक्षण प्राप्त कर समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने का निर्णय लिया। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक उनका हर कदम पर साथ देकर एवं मार्गदर्शन कर हौंसला बढ़ाते रहे उनके सतत तकनीकी पर्यवेक्षण एवं सहयोग से श्रीमती गुरजीत कौर दक्षता हासिल कर आगे बढ़ती रहीं।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र, श्री गंगानगर से प्राप्त उन्नत तकनीकी जानकारी के फलस्वरूप इन्होंने समन्वित कृषि प्रणाली के तहत विभिन्न फसलों एवं सब्जियों के उन्नत किस्म के बीज का चुनाव, पोषण वाटिका की स्थापना एवं उन्नत कृषि उपकरण, वैज्ञानिक विधि द्वारा दुधारू पशुओं का रखरखाव के साथ मुर्गी पालन इत्यादि तकनीकों से एक समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल तैयार किया और अपनी सफलता की तरफ एक कदम बढ़ाया। श्रीमती गुरजीत कौर ने प्रति इकाई क्षेत्र में अधिक मुनाफा कमाने हेतु समन्वित कृषि प्रणाली में

नवाचार किये जिसमें उन्होंने उन्नत नस्ल की 5 मुर्रा भैंस एवं 5 संकर गाय, 10 बकरी व 100 चाबरोन संकर नस्ल के साथ मुर्गी पालन के साथ फल–सब्जी व फसल उत्पादन तकनीक को अपनाकर समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल स्थापित किया।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1.	मूंग (15.2 एकड़)	98836.00	428766.00	329930.00
2.	चना (15.2 एकड़)	170449.00	529034.00	358584.00
3.	फ़लसब्जी (0.62 एकड़)	9498.00	161020.00	151521.00
4.	संकर गाय (संख्या–5)	70000.00	530000.00	460000.00
5.	बकरी (संख्या–10)	15000.00	120000.00	105000.00
6.	भैंस (संख्या–5)	75000.00	316800.00	241800.00
7.	मुर्गी पालन (संख्या–100)	6500.00	72000.00	65500.00
	कुल	**166500.00**	**1038800.00**	**872300.00**

सफलता का असर

समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल के साथ श्रीमती गुरजीत कौर वर्तमान में रुपये 872300 शुद्ध लाभ अर्जित कर रही हैं एवं ग्रामीण महिलाओं में प्रेरणा स्रोत व सफलता का प्रतिमान स्थापित कर रही हैं। वर्तमान में उन्होने फसलोत्पादन के साथ साथ सब्जी उत्पादन भी प्रारम्भ किया जिससे सब्जियाँ बेचकर वर्ष भर आमदनी के साथ स्वच्छ, ताजा व पौष्टिक सब्जियाँ प्राप्त कर रही हैं। मुर्गीपालन व बकरी पालन द्वारा भी वे अतिरिक्त आय प्राप्त कर रही हैं। पहले श्रीमती गुरजीत वर्ष में दो से तीन बार फसल बेच कर एक मुश्त आय प्राप्त करती थी। अब वे समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल के माध्यम से वर्ष भर आय अर्जित कर रही हैं।

क्षेत्र में योगदान

कृषि विज्ञान केंद्र की वैज्ञानिक सलाहकार समिति में एक प्रगतिशील कृषक महिला एवं उन्नत पशुपालक के रूप में भाग लेकर समिति के सदस्यों को इस मॉडल को जिले के विभिन्न किसानों तक पहुँचाने की अपील की तथा वर्तमान में श्रीमती कौर सम्पूर्ण ग्रामीण महिला समुदाय का गौरवशाली प्रतिनिधित्व करती नजर आती हैं। श्रीमती गुरजीत कौर अब एक प्रगतिशील कृषक महिला एवं उद्यमिता के रूप में जानी पहचानी जाती हैं तथा क्षेत्र की अन्य गांवों की महिलाओं को भी अपने साथ जोड़ कर उन्हें आर्थिक सशक्तिकरण की राह पर आगे बढ़ा रही हैं।

संकलनकर्ता

डॉ. सीमा चावला, डॉ. भूपेन्द्र सिंह*, डॉ कुलदीप प्रकाश शिंदे, डॉ. बबलू शर्मा, डॉ. शौकत अली, डॉ. हरजिन्द्र सिंह

वैज्ञानिक, *वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष

कृषि विज्ञान केन्द्र, श्री गंगानगर, प्रसार शिक्षा निदेशालय

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविधालय बीकानेर (राज.)

28 कृषि विज्ञान केन्द्र - सीकर-I

बागवानी– पशुपालन से किया रोजगार सृजन

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती सन्तोष देवी खेदड़**
पति का नाम	:	श्री रामकरण खेदड़
आयु	:	44 वर्ष
षिक्षा	:	प्राथमिक ि क्षा
पता	:	ग्राम–बेरी, पोस्ट–पिपराली, तहसील–सीकर जिला–सीकर (राजस्थान)
फोन नम्बर	:	9950101734
सफलता का क्षेत्र	:	बागवानी व प ुपालन
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, सीकर–I (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती सन्तोष देवी खेदड़ गाँव की एक सामान्य महिला है जिनके पास 2 एकड़ जमीन है बहुत सालों तक इनको परम्परागत खेती से सामान्य आमदनी होती थी, जिससे परिवार चलाना मुश्किल होता था। कुछ सालों बाद खेती का कार्य इन्होंने अपने हाथ में लेकर कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर सीकर प्रथम से सम्पर्क कर अनार की नर्सरी तथा बाग लगाने का फैसला किया।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर सीकर प्रथम ने श्रीमती संतोष देवी को विविध फसल पद्धति के साथ अनार का बगीचा लगाने की सलाह तथा प्रि क्षण दिया। जिससे इनकी वर्षभर आमदनी होने लगी। बाद में इन्होंने अनार की नर्सरी का कार्य भी आरम्भ किया जिसमें ये अनार की भगवा प्रजाति का उपयोग करती हैं। इसमें कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने तकनीकी सलाह देकर इनके कार्य को बढाया। जिसमें इन्होंने बून्द–बून्द सिंचाई पद्धति का उपयोग किया। साथ में इन्होंने समय से कटाई छटाई, निराई गुडाई, पोषण तत्वों की देखरेख के साथ बहार समय का ध्यान रखा।

सफलता का विवरण

विविध फसल पद्धति के साथ अनार का बगीचा तथा नर्सरी से श्रीमती खेदड़ की आमदनी में कई गुना इजाफा हुआ। जहाँ पहले 60 हजार रूपये सालाना की आमदनी होती थी अब तकनीकी सलाह अपनाने के बाद 9.50 लाख रूपये सालाना की आमदनी होने लगी है।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1	अनार	80000.00	340000.00	260000.00
2	नर्सरी	60000.00	550000.00	490000.00
3	पशुपालन	90000.00	235000.00	145000.00
4	दलहन फसल	65000.00	127000.00	62000.00
	कुल	**295000.00**	**1252000.00**	**957000.00**

सफलाता का असर

श्रीमती खेदड़ राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर कई पुस्कार से सम्मानित हो चुकी हैं। ये प्रतिदिन 15 से 20 व्यक्तियों को रोजगार भी देती है। श्रीमती खेदड़ आज अपने किसान समाज में एक सम्मानित महिला है।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती खेदड़ के द्वारा अपने क्षेत्र के किसानों को कार्य की मेहनत तथा लगन ीलता से लोगो को प्रेरित करने का काम किया है एवं अब वह बहुत से किसानों को बगीचे की गतिविधियों के बारे में प्रि ाक्षण भी देती हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. हरफूल सिंह
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केन्द्र, सीकर–प्रथम (राज.)

29 कृषि विज्ञान केन्द्र - टोंक

मूल्य संवर्धन बना महिला कृषक की आय का आधार

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती सुनीता बैरवा**
पति का नाम	:	श्री किशन बैरवा
उम्र	:	30 वर्ष
शिक्षा	:	12 वीं
पता	:	ग्राम–जगमोहनपुरा, तहसील–निवाई जिला–टोंक (राजस्थान)
सफलता का क्षेत्र	:	मूल्य संवर्धन
प्रेरणा स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, टोंक (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती सुनीता बैरवा की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वे बहुत की कष्ट में अपना जीवन यापन करती थीं। इनके पास आय का कोई भी उचित साधन नहीं होने के कारण परिवार का भरण–पोषण एवं बच्चों की देखभाल व पढाई कराना असम्भव हो रहा था। श्रीमती सुनीता एवं उनके पति घर खर्च चलाने के लिये दूसरों के खेतों में मजदूरी करते थे। इस गरीबी की स्थिति से बाहर निकलने के लिये श्रीमती सुनीता व इनके पति ने रोजगार की तलाश में पास के शहर निवाई में रहने का निश्चय किया जिससे इन्हें शहर में कुछ ज्यादा दिन मजदूरी मिलने का अवसर मिले। धीरे–धीरे श्रीमती सुनीता के पति मोबाइल ठीक करने की दुकान पर काम करने लगे। इसी दौरान किसी पडोसी के साथ श्रीमती बैरवा कृषि विज्ञान केन्द्र में फल एव सब्जियों के मूल्य संवर्धन पर चल रहे प्रशिक्षण में भाग लेने लायीं। प्रशिक्षण के दौरान देखने में आया की सुनीता में सीखने की चाहत और क्षमता अधिक थी और उन्होंने बहुत जल्दी फल एवं सब्जियों के मूल्य संवर्धन प्रशिक्षण में बतायी बारीकियों को अतिशीघ्र ग्रहण किया और उसमें निपुण हो गयीं। श्रीमती सुनीता ने निपुणता हासिल करने के बाद घर पर ही आँवला, नींबू, गाजर, मिर्च एवं मूली के अचार बनाना शुरू किये और घर से ही बेचने शुरू किये।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, टोंक के द्वारा फल एवं सब्जियों के मूल्य संवर्धन पर प्रशिक्षण के साथ–साथ प्रथम पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन भी किया गया। साथ ही श्रीमती सुनीता को कृषि विज्ञान केन्द्र की फल व सब्जियों की प्रदर्शन इकाई पर भ्रमण कराया गया। और उन्हें यहां खुद करके सीखने का अवसर प्रदान किया गया। लगातार प्रयासों के बाद वह फल व सब्जियों के मूल्य संवर्धन में पारंगत हो गयीं। श्रीमती सुनीता अपने कठिन परिश्रम एवं समर्पण के साथ फल एव सब्जियों के मूल्य संवर्धन में मास्टर ट्रेनर बन गयीं।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र, टोंक से फल एवं सब्जियों के मूल्य संवर्धन पर प्रशिक्षण लेने के उपरान्त श्रीमती सुनीता ने आंवला, मिर्च, नींबू, गाजर, मूली आदि के अचार बनाना शुरू किये। साथ ही साथ आंवला लड्डू इत्यादि उत्पाद बनाकर लगभग 700–800 किलोग्राम उत्पाद को लगभग 60,000–65,000 रूपये में बनाकर लगभग 1 लाख रूपये का शुद्ध लाभ प्राप्त कर रही हैं।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1	फल एवं सब्जियों का मूल्य संवर्धन	65000.00	165000.00	100000.00
	कुल	**65000.00**	**165000.00**	**100000.00**

सफलता का असर

श्रीमती सुनीता अपनी दक्षता के कारण गाँव में अन्य महिलाओं के लिये प्रेरणा स्रोत बन गयी हैं। अब वे प्रगतिशील महिला के रूप में जानी जाने लगी हैं तथा उन्हें फल व सब्जियों के मूल्य संवर्धन के प्रशिक्षण हेतु मास्टर ट्रेनर के रूप में कृषि विज्ञान केन्द्र एवं अन्य विभागों में बुलाया जाने लगा है।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती सुनीता बैरवा के द्वारा फल एवं सब्जियों के मूल्य संवर्धन से आय एवं रोजगार का सृजन करने से आसपास के क्षेत्र की अनेकों महिलाओं ने कृषि विज्ञान केन्द्र पर फल एवं सब्जियों का मूल्य संवर्धन विषय पर प्रशिक्षण लेकर आय एवं रोजगार का सृजन करके अपने परिवार को अधिक सशक्त बनाने में मदद की है। आज श्रीमती सुनीता बैरवा भी अन्य महिलाओं को प्रशिक्षण दे रही हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. डी.वी. सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
डॉ. प्रीती वर्मा, गृह विज्ञान विशेषज्ञ
कृषि विज्ञान केन्द्र, टोंक (राज.)

30 कृषि विज्ञान केन्द्र - टोंक

पोषण वाटिका–सन्तुलित आहार का आधार

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती कलावती शर्मा**
पति का नाम	:	श्री केदार शर्मा
उम्र	:	32 वर्ष
शिक्षा	:	8 वीं
पता	:	ग्राम–संग्रामपुरा, तहसील–निवाई जिला–टोंक (राजस्थान)
सफलता का क्षेत्र	:	पोषण वाटिका
प्रेरणा स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, टोंक (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती कलावती शर्मा, ग्राम संग्रामपुरा, निवाई में अपने परिवार के साथ रहती हैं। परिवार में आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण परिवार को सन्तुलित आहार नहीं मिलता था जिससे कि परिवार के अधिकांश सदस्य कुपोषण से ग्रसित थे। श्रीमती कलावती शर्मा स्वयं अनीमिया से ग्रसित थीं जिसके कारण वह अपने घर परिवार तथा खेती का कार्य ठीक से नहीं कर पाती थीं और अधिकांशतः बीमार रहती थीं।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द, टोंक द्वारा पोषण संवेदी कृषि संसाधन एवं नवोन्मेष (नारी) कार्यक्रम के अन्तर्गत गाँव संग्रामपुरा को ग्रहण किया और गाँव के प्रत्येक परिवार का पोषण स्तर सर्वे करने के उपरान्त गाँव में पोषण वाटिका की स्थापना पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, न्यूट्री थाली, सन्तुलित आहार तथा मोटे अनाजों के महत्व के बारे में जागरूकता कार्यक्रम चलाये गये। साथ ही साथ पोषण वाटिका की स्थापना हेतु मौसम के अनुसार विभिन्न सब्जियों का चयन किया गया जिससे परिवारों को सन्तुलित आहार पोषण वाटिका से प्राप्त हो सके। साथ ही साथ बायोफोर्टिफाइड किस्में जिसमें गेहूं, सरसों बाजरा, पत्तागोभी आदि की किस्मों के प्रदर्शन भी लगाये गये। फलदार वृक्षों हेतु नींबू करोंदा, पपीता, सहजन, अनार के पौधे भी पोषण वाटिका में लगवाये गये।

सफलता का विवरण

श्रीमती कलावती शर्मा ने कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा स्थापित कराये गये पोषण वाटिका प्रदर्शन कार्यक्रमों को गम्भीरता से लेते हुए अत्यधिक रूचि के साथ अपनाया और पोषण वाटिका के कैलेण्डर जिससे वर्षभर सब्जियों का उत्पादन प्राप्त हो सके उसको अपनाया तथा वर्षभर में लगभग 250 वर्गमीटर क्षेत्रफल में पोषण वाटिका से 1300 किलोग्राम सब्जियां प्राप्त कीं जबकि पूर्व में थोडी बहुत सब्जियां लगाने पर उन्हें लगभग 160 किलोग्राम सब्जियां प्राप्त होती थीं। कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा स्थापित पोषण वाटिका में सब्जी उत्पादन में लगभग 700 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा प्रति व्यक्ति सब्जियों की उपलब्धता 574 ग्राम बढ़ गयी।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि/उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1.	पोषण वाटिका	10000–12000	32500.00	20500.00
	कुल	**10000–12000**	**32500.00**	**20500.00**

सफलता का असर

श्रीमती कलावती शर्मा के द्वारा पोषण वाटिका को सफलतापूर्वक ग्रहण करने से लगभग 700 प्रतिशत सब्जियों के उत्पादन में वृद्धि और सब्जियों की प्रति व्यक्ति उपलब्धता बढ़ने के परिणाम स्वरूप उनके परिवार में वर्ष भर के उपरान्त 4.66 प्रतिशत कुपोषण में कमी तथा 14.66 प्रतिशत अनीमिया में कमी देखने को मिली है साथ ही साथ लगभग 18000–20000 रूपये प्रतिवर्ष सब्जी पर आने वाले खर्च की बचत हुई और इस बचत से श्रीमती कलावती अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने में उपयोग कर पा रही हैं। श्रीमती शर्मा की सफलता से प्रभावित होकर संग्रामपुरा गाँव तथा आसपास के गाँव की महिलाएं भी पोषण वाटिका में रूचि ले रहीं हैं तथा पोषण वाटिका को ग्रहण करके शुद्ध एवं ताजा सब्जियां खाने से अनीमिया एवं कुपोषण जैसी समस्या से परिवार को निजात दिला रही हैं।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती कलावती शर्मा के द्वारा पोषण वाटिका को सफलतापूर्वक ग्रहण करने के पश्चात् गाँव संग्रामपुरा के प्रत्येक परिवार ने पोषण वाटिका की स्थापना की है तथा बायोफोर्टिफाइड फसलों की किस्मों को अपनाया है। संग्रामपुरा गाँव के अन्य गाँवों के रिश्तेदारों तथा आसपास के अन्य गाँवों में भी श्रीमती कलावती शर्मा से प्रेरित होकर पोषण वाटिका व बायोफोर्टिफाइड फसलों की किस्मों को अपनाकर अपने परिवार को कुपोषण व अनीमिया से बचाया है तथा सब्जियों पर आने वाले दैनिक खर्चे को कम करने में सफलता हासिल की है।

संकलनकर्ता
डॉ. डी.वी. सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
डॉ. प्रीती वर्मा, गृह विज्ञान विशेषज्ञ
कृषि विज्ञान केन्द्र, टोंक (राज.)

31 कृषि विज्ञान केन्द्र - उदयपुर-I

समन्वित कृषि प्रणाली ने खोले महिला कृषक के लिए समृद्धि के द्वार

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती दुर्गा देवी**
पति का नाम	:	श्री मगन लाल मेघवाल
आयु	:	50 वर्ष
शिक्षा	:	आठवीं
पता	:	गाँव–घोड़ीमारी, पंचायत–आमीवाड़ा तहसील–झाड़ोल, जिला–उदयपुर (राजस्थान)
फोन नंबर	:	8890961300
सफलता का क्षेत्र	:	समन्वित कृषि प्रणाली एवं बकरी पालन
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, उदयपुर–I (राज.)

पृष्ठभूमि

श्रीमती दुर्गा देवी अपने परिवार को खेती एवं पशुपालन के कार्यों में सहयोग देती थीं। उनके पास अवर्गीकृत नस्ल की 2 गायें एवं 10 बकरियाँ थी। उनके पास जमीन तो थी परन्तु अधिकतर चारागाह भूमि थी जिसमें चारे के अलावा कुछ नहीं होता था। अपनी सिंचित भूमि से केवल घर के अनाज की पूर्ति हो पाती थी। पानी की समुचित व्यवस्था न होना, परंपरागत कृषि से फसलों का चयन, लम्बी अवधि की फसलों पर निर्भरता, अवर्गीकृत पशुओं से उत्पादन कम होना, फसलों एवं पशुओं के रोग की अधिकता आदि कारणों की वजह से उनका परिवार अच्छी आय नहीं प्राप्त कर पा रहा था।

तकनीकी हस्तक्षेप

श्रीमती दुर्गा देवी परिवार को सम्बल देने का प्रयास कर रही थीं। उनके पास पंचायत की राशन वितरण की डीलरशिप थी, जिससे उनको आय प्राप्त हो रही थी, परन्तु उनका मन बकरी एवं मुर्गी पालन से अधिक आय प्राप्त करने का था। आर्या परियोजना के अन्तर्गत बकरी पालन प्रशिक्षण में उनका पुत्र श्री रवि प्रकाश मेघवाल जुड़ा। व्यावसायिक प्रशिक्षण के दौरान स्वयं ने भी अपने पुत्र के साथ विद्या भवन कृषि विज्ञान केंद्र उदयपुर में 21 दिवसीय प्रशिक्षण में भागीदारी की, फिर उन्होंने बकरी पालन को मुख्य व्यवसाय बनाने की सोची। कृषि विज्ञान केन्द्र से समय–समय पर उनको पशुओं के प्रबंधन, रखरखाव एवं रोग से रोकथाम की जानकारी एवं सहयोग मिला। इसके साथ ही उन्होंने अंकलेश्वर नस्ल की मुर्गियों एवं संकर नस्ल की गायों को भी खरीदकर पालना शुरू किया।

सफलता का विवरण

जमीन के उचित उपयोग के लिए उन्होंने सरकार के सहयोग से एक एनीकट भी अपनी जमीन में बनाया इसके साथ ही चारागाह भूमि में 2,000 आँवला वृक्ष भी लगाये। वर्तमान में इनके पास पशुओं की संख्या बढ़कर 55 सिरोही नस्ल की बकरियां, 50 अंकलेश्वर नस्ल की मुर्गियां एवं 7 संकर नस्ल की गाय हो गयी हैं। कोरोना काल में उद्यान विभाग की सहायता से अपनी खाली भूमि में ग्रीन हाउस बनवाया जिसमे बेमौसमी सब्जी फसलों का उत्पादन कर रही हैं। साथ ही अन्य जमीन से भी वह सब्जी उत्पादन कर रही हैं। समन्वित कृषि प्रणाली अपनाकर वह अनाज, दलहनी व तिलहनी फसलों, सब्जियों, अंडे, बकरे, दूध आदि बेचकर अच्छा लाभ कमा रहीं हैं और भविष्य में यह लाभांश बढ़ता ही रहेगा।

आमदनी

श्रीमती दुर्गा देवी ने समन्वित कृषि प्रणाली को अपनाया जिससे उन्हें वर्षभर सब्जी अनाज एवं अच्छी आमदनी मिल रही है। वर्तमान में विभिन्न आय श्रोतों से उन्हें कुल 4 लाख रूपये की शुद्ध आय प्राप्त हो रही है जिसमें सबसे अधिक 75,000 रूपये की सालाना आय बकरी पालन से हो रही है।

क्र.सं.	गतिविधि/उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1	मक्का (2 एकड़)	11200.00	17000.00	5800.00
2	सोयाबीन (5 एकड)	42000.00	82000.00	40000.00
3	गेंहू (2 एकड)	32000.00	60000.00	28000.00
4	कंद सब्जियां (1 एकड)	40000.00	85000.00	45000.00
5	बैंगन (0.5 एकड)	22000.00	82000.00	60000.00
6	खीरा वर्गीय फसलें (0.4 एकड)	30000.00	80000.00	50000.00
7	आंवला (2000 वृक्ष)	15000.00	45000.00	30000.00
8	संकर गाय (7)	38500.00	73500.00	35000.00
9	बकरी पालन (55)	27000.00	102000.00	75000.00
10	मुर्गी पालन (50)	8000.00	40000.00	32000.00
	कुल	**265700.00**	**666500.00**	**400800.00**

सफलता का असर

श्रीमती दुर्गा देवी अपने सतत प्रयासों एवं मजबूत इरादों से न केवल अपने परिवार का अपितु अपने समाज की दशा को सुधारने का प्रयास कर रही हैं। मूलतः आदिवासी इलाके से सम्बन्ध रखने वाली श्रीमती दुर्गा देवी तमाम तरह के सामाजिक असमानतायों को पीछे छोड़ते हुए क्षेत्र में एक प्रगतिशील महिला किसान के रूप में पहचान बना चुकी हैं। आज वह कृषि गतिविधियों, उन्नत पशु पालन तकनीकों एवं विभिन्न कृषि कार्यक्रमों में सक्रिय रहतीं हैं। राष्ट्रीय पशुपालन मिशन के अंतर्गत बकरी पालन व्यवसाय के तहत यह 500 सिरोही नस्ल की बकरी पालन इकाई हेतु ऑनलाइन आवेदन प्रस्तुत कर रही हैं और इसके लिए डी.पी.आर. बनाने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र इनकी मदद कर रहा है। इन्होंने इस वर्ष अपनी जमीन में आम के पौधे भी लगाए हैं और एनीकट में मछली पालन करने का भी इनका विचार है। आज वह कई मंचों पर सम्मानित की जा चुकी हैं एवं निरंतर कृषि एवं उनसे जुड़े आयामों को सीखने के लिए तत्पर हैं।

क्षेत्र में योगदान

उनकी सफलता की कुंजी जल्द सीखने और समझने की उनकी उत्सुकता, कड़ी मेहनत और सकारात्मक दृष्टिकोण है। वह अन्य किसानों को नई तकनीकों को अपनाने में सक्रिय रूप से मार्गदर्शन करने के लिए भी प्रेरित कर रही हैं। आज उनके पास समन्वित कृषि प्रणाली का एक अच्छा मॉडल है जिसे देखने के लिए एवं उनकी कार्यप्रणाली को समझने के लिए प्रत्येक महीने कम से कम 100 लोग उनसे संपर्क करने आते हैं। श्रीमती दुर्गा देवी कृषि के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को मजबूत करने के कोशिश करती रहती हैं। इसके साथ ही वह उत्पादन के साथ–साथ विपणन और अन्य सभी आर्थिक निर्णयों में भी महिलाओं को शिक्षित करने एवं उनकी भूमिका सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत है। वह न केवल गांव के लिए वरन उन सभी महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत जो अपने परिवार को आर्थिक रूप से सम्बल देने की मंशा रखती हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. प्रफुल चंद्र भटनागर एवं श्रीमती तनुजा जुकरिया
विद्या भवन कृषि विज्ञान केंद्र, बड़गाव, उदयपुर (I)

32 कृषि विज्ञान केन्द्र - अम्बाला

मशरूम उत्पादन से स्वावलम्बन की ओर

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती बलजिन्द्र कौर**
पति का नाम	:	श्री करनैल सिंह
आयु	:	41 वर्ष
शिक्षा	:	दसवीं कक्षा
पता	:	गांव–अहमदपुर, ब्लॉक–नारायणगढ़ जिला–अम्बाला (हरियाणा)
फोन नम्बर	:	9817152756
सफलता का क्षेत्र	:	बटन म ारूम उत्पादन
प्रेरणा का स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, अम्बाला (हरियाणा)

पृष्ठभूमि

श्रीमती बलजिन्द्र कौर एक भूमिहीन महिला है। वह 10 महिलाओं के स्वयं सहायता समूह की प्रधान भी हैं। सभी सदस्यों के पास आमदनी के सीमित संसाधन है और वे ज्यादातर खेती–बाड़ी में मजदूरी करके परिवार का भरण पोषण कर रही थीं। वर्ष 2017 में कृषि विज्ञान केन्द्र, अम्बाला से जुड़कर म ारूम उत्पादन, गृह वाटिका, इत्यादि में जानकारी प्राप्त कर वर्ष 2018 से लेकर 2021 तक बटन म ारूम इकाई चला रही हैं।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, अम्बाला ने श्रीमती बलजिन्द्र कौर को स्वावलम्ब बनाने हेतु विभिन्न निम्नवत कार्यक्रमों में प्रतिभाग करवाया और उनको वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी दी तथा म ारूम उत्पादन एवं प्रबंधन में निपुण बनाया।

- म ारूम उत्पादन में 21 दिवसीय प्रि ाक्षण
- कम्पोस्ट बैग बनाना
- तकनीकी सहयोग
- क्षेत्रीय म ारूम यूनिट का भ्रमण
- बागवानी विभाग, अम्बाला, म ारूम निदे ाालय, सोलन एवं निफेटम, मुरथल से जोड़ना
- विपणन में सहयोग
- म ारूम यूनिट पर वैज्ञानिकों का दौरा एवं जानकारी प्रदान करना
- व्हाट्स एप ग्रुप/सो ाल मीडिया पर जानकारी प्रदान करना

सफलता का विवरण

वर्ष 2017 में कृषि विज्ञान केन्द्र, अम्बाला से इन्होंने बटन म ारूम उत्पादन का प्रि क्षण प्राप्त कर छोटे स्तर पर घर के खाली पड़े कमरों में बटन म ारूम उत्पादन का कार्य भाुरू किया और आज अपनी मेहनत से 200 कम्पोस्ट बैग की यूनिट से लगभग 35000 रूपये हर मौसम में कमा रही हैं।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1.	मशरूम उत्पादन (200 कम्पोस्ट बैग)	20000.00	52700.00	32700.00
	कुल	**20000.00**	**52700.00**	**32700.00**

सफलता का असर

श्रीमती बलजिन्द्र कौर के बटन म ारूम उत्पादन यूनिट की सफलता से घर की आर्थिक स्थिति, बच्चों की पढ़ाई एवं भारीर की पोषकता पर भी प्रभाव पड़ा और क्षेत्रीय महिलाओं में इनकी रोल मॉडल के रूप में एक अलग ही पहचान बनी है। जिसके परिणाम स्वरूप अन्य 10 महिलाओं ने इनके साथ जुडकर एक समूह बनाया तथा समूह की सभी सदस्यों ने वर्ष 2018 से म ारूम उत्पादन का कार्य मिलकर भाुरू किया और आज 6300 कम्पोस्ट बैग से लगभग 189 क्विंटल बटन म ारूम पैदा कर रही हैं। जिसकी लागत और आय को सभी सदस्यों में बांटकर लगभग रूपये 73257 प्रति माह प्रति महिला कमा रही हैं।

क्षेत्र में योगदान

आज इनकी सफलता देखकर आस–पास के गांव जैसे छज्जनमाजरा, बल्लोपुर एवं अकबरपुर से भी लगभग 30 महिलाओं ने कृषि विज्ञान केन्द्र से प्रि क्षण प्राप्त कर स्वयं की म ारूम उत्पादन इकाई स्थापित की है।

संकलनकर्ता
डॉ. विक्रम धीरेन्द्र सिंह
विषय वि ोषज्ञ (पौध संरक्षण)
कृषि विज्ञान केन्द्र, अम्बाला (हरियाणा)

33 कृषि विज्ञान केन्द्र - फरीदाबाद

सब्जी–फल मूल्य संवर्धन एवं हस्त शिल्पकारी ने दिया स्वरोजगार

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती रजनी**
पति का नाम	:	श्री शिवकुमार
आयु	:	31 वर्ष
शिक्षा	:	एम.ए.
पता	:	तिगांव, फरीदाबाद (हरियाणा)
फोन नंबर	:	9891970052
सफलता का क्षेत्र	:	फल व सब्जियों का मूल्य संवर्धन अभिनव कपड़े व जूट बैग
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, फरीदाबाद (हरियाणा)

पृष्ठभूमि

श्रीमती रजनी बचपन से ही आत्मनिर्भर व स्वावलम्बी बनने की इच्छुक व अभिनव कार्यों में निपुण रही हैं। एम.ए. की डिग्री लेने के बाद भी बेरोजगार रहना इन्हें मंजूर नहीं था। प्रगतिशील उद्यमी महिला श्रीमती गीता जो श्रीमती रजनी की रिश्तेदार हैं तथा कई वर्षों से कृषि विज्ञान केंद्र से जुडी हुई हैं, ने इन्हें कृषि विज्ञान केंद्र, फरीदाबाद पर ग्रामीण महिलाओं व बेरोजगार युवतियों के लिए आयोजित होने वाले व्यावसायिक प्रशिक्षणों के बारे में बताया। श्रीमती रजनी ने कुछ करने की चाह में कृषि विज्ञान केंद्र, फरीदाबाद के वैज्ञानिकों से सलाह मशवरा किया। श्रीमती रजनी पढ़ी लिखी होने के कारण फल–सब्जी परिरक्षण जैसे अचार बनाकर, बैग बनाकर व सिलाई व कढ़ाई इत्यादि द्वारा तैयार उत्पादों से कम लागत में अधिक मुनाफा कमाने के सफर पर निकल पड़ी। इसी कड़ी में इन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, फरीदाबाद के वैज्ञानिक डॉ. विजयपाल सिंह यादव व गृह विज्ञान विशेषज्ञा से परामर्श किया और अचार, बैग व अन्य उत्पादों को बड़े पैमाने पर बनाने व बेचने की इच्छा जाहिर की। शुरू के दिनों में उन्हें अचार में कवक संदूषण तथा बैग सिलाई व अन्य उत्पाद बनाने में परिष्करण संबंधी समस्याओं का सामना करना पडा, जिससे उनका उत्पाद खराब हो जाता या आकर्षित नहीं बनता था जिससे कि उन्हें अधिक लाभ नहीं मिल पाता था। तत्पश्चात् श्रीमती रजनी ने कृषि विज्ञान केंद्र, फरीदाबाद से फल व सब्जियों का परिरक्षण एवं मूल्य संवर्धन, सिलाई–कटाई व नरम खिलौने व बैग इत्यादि बनाने सम्बन्धित व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किये। जिससे उन्हें इन क्षेत्रों में आधुनिक व लाभकारी तकनीकों का ज्ञान हुआ।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने श्रीमती रजनी को फल व सब्जियों का मूल्य संवर्धन, सिलाई–कढ़ाई, हैंड बैग, लेडीज पर्स, लंच बॉक्स, कैरी बैग, जूट बैग, फोल्डर, मोबाइल हैंगिंग, हैंगिंग किट, कु ान, मैक्रम उत्पाद, जूट सजावटी सामान आदि विषयों पर व्यवसायिक प्रि ाक्षण दिये तथा सम्बन्धित विषयों में अन्य संस्थानों से प्रि ाक्षण लेने के लिए प्रेरित व मार्गद र्िन किया जिससे इन्हें आधुनिक व लाभकारी तकनीकों का ज्ञान हुआ। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों के प्रयासों से उन्होंने 1–15 फरवरी, 2018 में आयोजित सूरजकुंड ि ाल्प मेला, फरीदाबाद (हरियाणा) व दिसंबर 2019 में सरस मेला कुरूक्षेत्र (हरियाणा) में बिक्री के उद्दे य से अपने उत्पादों

का सफल प्रद र्न किया। श्रीमती रजनी के कौ ल में सुधार के लिए, कृषि विज्ञान केन्द्र, फरीदाबाद की गृह–विज्ञान वि षज्ञ व अन्य वैज्ञानिक गणों ने ग्रामीण स्वरोजगार प्रि क्षण संस्थान, फरीदाबाद, जिला बागवानी विभाग, बागवानी प्रि क्षण संस्थान, करनाल और चौधरी चरण सिंह हरियणा कृषि वि वविद्यालय, हिसार में अनेक महत्वपूर्ण स्थान जैसेः बाजरा मूल्य संवर्धन सेंटर ऑफ ,एक्सीलेंस और गृह विज्ञान महाविद्यालय के अंतर्गत कपड़ा और परिधान डिजाइनिंग और बेकरी और कन्फेक्शनरी के अनुभवात्मक ि क्षण कार्यक्रम की प्रयोग ालाओं का दौरा कराया। इसके अलावा कृषि विज्ञान केंद्र ने इनकी खाद्य व पोषण बोर्ड, फरीदाबाद, हरियाणा ग्रामीण आजीविका मि न, फरीदाबाद, डी.आर.डी., फरीदाबाद और नेहरू युवा केंद्र, फरीदाबाद जैसे अन्य विकास विभागों के साथ संबंध स्थापित करने में मदद की। कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित प्रद र्नियों के माध्यम से श्रीमती रजनी के स्वयं सहायता समूह या व्यक्तिगत स्तर पर बनाए गए उत्पादों का प्रद र्न और बिक्री में मदद भी की गयी।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दिए गए तकनीकी पर्यवेक्षण व मार्गदर्शन से श्रीमती रजनी को अपने परिवार के साथ–साथ अपने गांव में भी सफल ग्रामीण उद्यमी का प्रतिष्ठित दर्जा प्राप्त है। श्रीमती रजनी ने अपनी पारिवारिक आय बढ़ाने व गांव की दूसरी महिलाओं व युवतियों को रोजगार देने के लिए "शान" नामक एक स्वयं सहायता समूह का गठन भी किया। समूह में गांव की ग्यारह महिलाओं को चयनित किया गया। ऐसा करके वह परिवार की आजीविका के लिए अच्छी कमाई कर रही हैं। अपने इन उद्यमों के माध्यम से अन्य महिलाओं व लड़कियों के लिए रोजगार पैदा कर रही हैं। इसके अलावा श्रीमती रजनी आसपास के गांवों (लगभग 15 गांव) की महिलाओं को सम्बन्धित विषय में प्रशिक्षण देती हैं तथा स्वयं सहायता समूह बनवाने का काम भी करती हैं। श्रीमती रजनी स्वयं सहायता समूह की सहायता से जूट बैग, हैंड बैग, लेडीज पर्स, लंच बॉक्स कैरी बैग, फोल्डर, मोबाइल हैंगिंग, हैंगिंग किट, कुशन, मैक्रम उत्पाद, जूट का सजावटी सामान बनाकर तथा स्वयं द्वारा फल–सब्जी परिरक्षण जैसे अचार बनाकर, सिलाई व कढ़ाई इत्यादि द्वारा तैयार उत्पादों की बिक्री से सालाना लगभग 6 लाख रूपए की आमदनी प्राप्त करती हैं।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1.	फल–सब्जी परिरक्षण एवं मूल्य संवर्धन (अचार, चटनी, मुरब्बे बनाना)	40000.00	150000.00	110000.00
2.	सिलाई	180000.00	450000.00	270000.00
3.	जूट बैग	80000.00	220000.00	140000.00
4.	जूट व मैक्रम के सजावटी सामान	20000.00	120000.00	100000.00
	कुल	**320000.00**	**940000.00**	**620000.00**

सफलता का असर

फल व सब्जी का मूल्य संवर्धन, अभिनव बैग व अन्य उत्पाद बनाने में रूचि व इससे सम्बंधित कार्यक्रमों में बढ़चढ़ कर भागीदारी के लिए श्रीमती रजनी अन्य महिलाओं व युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। श्रीमती रजनी अब एक सफल व प्रगतिशील महिला उद्यमी के रूप में जानी जाती हैं। अब श्रीमती रजनी को कृषि विज्ञान केंद्र तथा फरीदाबाद जिले के अन्य संस्थानों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बतौर विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया जाता है। अखबार में कई बार उनकी सफलता व हौंसलों के लेख छपे हैं, जो ग्रामीण महिलाओं व युवतियों के लिए एक प्रेरणास्रोत हैं। उनसे प्रेरित होकर आसपास गांवों की महिलाएं व लड़कियां स्वरोजगार एवं कौशल विकास हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं व स्वयं सहायता समूह बनाने में बढ़चढ़ कर भागीदारी ले रही हैं।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती रजनी आसपास के (लगभग 15 गांवों) की महिलाओं को सम्बंधित विषय जैसे फल–सब्जी परिरक्षण एवं मूल्य संवर्धन, सिलाई व कढ़ाई, जूट बैग, हैंड बैग, लेडीज पर्स, लंच बॉक्स कैरी बैग, फोल्डर, मोबाइल हैंगिंग, हैंगिंग किट, कुशन, मैक्रम उत्पाद, जूट का सजावटी सामान इत्यादि में प्रशिक्षण देती हैं तथा स्वयं सहायता समूह बनवाने का काम भी करती हैं। आसपास के क्षेत्रों में लगभग 70 प्रतिशत युवा व महिलाएं उद्यमी श्रीमती रजनी के प्रयासों द्वारा स्थापित सफल उद्यम विकसित करने का अनुसरण कर रहे हैं। सफल उद्यमी बनने हेतु श्रीमती रजनी की सक्रियता व समर्पण के लिए इन्हें अनेक स्थानीय, जिला स्तरीय व राज्य स्तरीय प्रशस्ति प्रशंसा पत्र भी मिले हैं। युवाओं व महिलाओं के समक्ष आज श्रीमती रजनी एक सफल ग्रामीण उद्यमी महिला के रूप में आदर्श उदाहरण हैं।

संकलनकर्ता

डॉ. वर्षा रानी, गृह विज्ञान विशेषज्ञ

डॉ. विजयपाल सिंह यादव, वरिष्ठ समन्वयक

कृषि विज्ञान केंद्र, फरीदाबाद (हरियाणा)

34 कृषि विज्ञान केन्द्र - गुरुग्राम

खाद्य प्रसंस्करण से महिला स्वयं सेवा समूह बने सफल उद्यमी

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती पूजा शर्मा**
पति का नाम	:	श्री मनोज कुमार
उम्र	:	42 वर्ष
शिक्षा	:	इंटरमीडिएट
पता	:	ग्राम–चंदू, तहसील–फरुखनगर जिला–गुरुग्राम (हरियाणा)
सफलता का क्षेत्र	:	मूल्य संवर्धन
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केंद्र, शिकोहपुर, गुरुग्राम एवं हरियाणा राज्य आजीविका मिशन, गुरुग्राम (हरियाणा)

पृष्ठभूमि

श्रीमती पूजा शर्मा स्वयं सहायता समूह 'क्षितिज' के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं और हरियाणा के गुरुग्राम जिले के चंदू गांव में रहती हैं। जिस गाँव में वह रहती हैं वह गुरुग्राम शहर के संपर्क में है। गुरुग्राम को "मिलेनियम सिटी" के रूप में जाना जाता है और भूमि की बढ़ती दर के कारण किसानों की आय में भारी वृद्धि देखी गई जिससे उनका जीने का तरीका प्रभावित हुआ है लेकिन महिलाओं को लेकर उनकी मानसिकता में कुछ खास बदलाव नहीं आया। हरियाणा के गांवों की महिलाएं आज भी अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रही हैं। श्रीमती पूजा शर्मा ने गांव चंदू की उन महिलाओं को एक साथ लाने की पहल की जो अपनी कमाई खुद करना चाहती थीं और समाज में अपनी पहचान बनाना चाहती थीं। जिससे वे एक स्वयं सहायता समूह बनाने और एक उद्यम शुरू करने के लिए प्रेरित हुईं। इसके बाद समूह ने मार्गदर्शन के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, गुरुग्राम से संपर्क किया और सोयानट बनाने एवं खाद्य प्रसंस्करण में प्रशिक्षण प्राप्त किया और अपना उद्यम शुरू किया।

तकनीकी हस्तक्षेप

श्रीमती पूजा शर्मा एवं उनके स्वयं सहायता समूह से 9 अन्य महिलाओं ने कृषि विज्ञान केंद्र, गुरुग्राम से खाद्य प्रसंस्करण पर प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने उद्यम की शुरुआत की। वर्ष 2017 में समूह को कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आर्या परियोजना के तहत खाद्य प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग के लिए उपकरण तथा बर्तन भी दिए गए जिससे उनके उद्यम को और भी अधिक सक्षम बनाया जा सके। समूह को पूसा मेले में मुफ्त में स्टाल दी गयी जिससे उनके उत्पादों की बिक्री और प्रचार हो सके। साथ ही समूह को जरूरत पड़ने पर प्रसंस्करण, पैकेजिंग, लेबलिंग तथा FSSAI आदि से सम्बंधित जानकारी भी दी गयी।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केंद्र, गुरुग्राम से तकनीकी प्रशिक्षण लेने के उपरान्त श्रीमती शर्मा ने हरियाणा आजीविका मिशन से जुड़कर वित्तीय सहायता प्राप्त की और समूह ने मार्च, 2018 में "जिंग एन जेस्ट" (ZingNZest) नाम से एक कंपनी शुरू की, जिसमें श्रीमती पूजा को समन्वयक का पद दिया गया। अपने उत्पादों के विपणन के लिए कंपनी ने पूरे वर्ष नियमित बिक्री के लिए खाद्य श्रृंखला स्टोर और सरकारी कार्यालयों से सम्पर्क किया। कंपनी ने इस दिशा में भी सफलता हासिल की है और आज उनके बिस्कुट को शीर्ष हॉस्पिटैलिटी चेन और स्टोर्स जैसे एयरोसिटी, दिल्ली में अन्नामाया फूड कोर्ट, 24x7, दिल्ली और एनसीआर क्षेत्रों में रिलायंस और लॉमर्श स्टोर्स में जगह मिली है। कंपनी की बेहतर मार्केटिंग रणनीति ने बिक्री की मात्रा को कई गुना बढ़ा दिया है और इससे लगभग 12–15 लाख रुपये की आय प्राप्त हो रही है। हरियाणा सरकार ने भी गुरुग्राम में राज्य विभाग की आधिकारिक बैठकों के दौरान उनके स्नैक्स की आपूर्ति के उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया है। हैफेड (हरियाणा स्टेट को–ऑपरेटिव सप्लाई एंड मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड) ने क्षितिज एस.एच.जी. को कुकीज, नमकीन, स्नैक्स और लड्डू के ऑर्डर भी दिए हैं।

आमदनी

उद्यम / गतिविधि	कुल लागत (रू)	कुल आमदनी (रू)	शुद्ध आमदनी (रू)
मूल्य संवर्धन	825000.00	1400000.00	575000.00
कुल	**825000.00**	**1400000.00**	**575000.00**

सफलता का असर

श्रीमती पूजा शर्मा अब गाँव में ही एक निजी कंपनी चला रही हैं और उत्पादों के प्रसंस्करण से लेकर प्रबंधन और विपणन तक का सारा काम गाँव की 24 महिलाओं द्वारा किया जा रहा है। पहले ये महिलाएं खेतों में मजदूर के रूप में काम करती थीं और अब कंपनी में काम करके महीने में 8–10 हजार रूपये कमा रही हैं। श्रीमती शर्मा को 2015 में हरियाणा के माननीय राज्यपाल श्री कैप्टन सिंह सोलंकी एवं हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर तथा 2016 में माननीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी द्वारा सम्मानित किया गया जिसने अन्य महिलाओं को भी समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए प्रेरित किया। श्रीमती शर्मा को ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में काम करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च, 2022 को भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा नारी शक्ति पुरस्कार–2021 दिया गया है। उन्होंने हरियाणा के इस पुरुष प्रधान समाज में अपनी अलग पहचान बनाई है।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती पूजा शर्मा उत्पादों और उनके प्रसंस्करण के बारे में उचित वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त कर रही हैं और उचित प्रशिक्षण के बाद नए उत्पादों को लॉन्च कर रही हैं। वह कुकीज बनाते समय रासायनिक रूप से उपचारित चीनी के बजाय देसी खांड, मोटे अनाज जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, जई और अन्य स्वस्थ खाद्य पदार्थों जैसे अलसी, अजवाइन आदि के उपयोग पर भी ध्यान केंद्रित करती हैं, जो कि बाजार में उपलब्ध मैदा कुकीज की तुलना में अधिक स्वास्थ्यवर्धक हैं।

श्रीमती पूजा शर्मा ने कमाई कर अपनी पारिवारिक आय में योगदान दिया जिससे गांव में उनके परिवार की स्थिति बेहतर हुई है। स्वयं सेवा समूह की कमाई ने समूह के अपने सदस्यों को उधार देने की क्षमता में वृद्धि की है और इस प्रकार समुदाय के बीच सूक्ष्म ऋण प्रणाली को बढ़ाया है। पूजा शर्मा, जिन्होंने एक स्वयं सहायता समूह से शुरुआत की थी, अब गांव की 150 महिलाओं के साथ 9 महिला स्वयं सहायता समूह बनाए हैं, जहां वे वित्तीय सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. कविता बिष्ट, गृह विज्ञान विशेषज्ञ
डॉ. अनामिका शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केंद्र, शिकोहपुर, गुरुग्राम (हरियाणा)

35 कृषि विज्ञान केन्द्र - हिसार

बागवानी में टंपकन सिंचाई बनी महिला कृषक के लिए एक वरदान

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती पूजा ढाण्ड़ा**
पति का नाम	:	श्री कुलदीप ढाण्ड़ा
आयु	:	30 वर्ष
शिक्षा	:	10+2
पता	:	गाँव–न्योली कलां, जिला–हिसार (हरियाणा)
फोन नंबर	:	9729783521
सफलता का क्षेत्र	:	अमरूद व बेर का बाग
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, हिसार (हरियाणा)

पृष्ठभूमि

श्रीमती पूजा की बचपन से ही कृषि कार्य में रूचि थी। उसके पति कुलदीप के पास सिर्फ 1–1/4 एकड़ जमीन थी और उसमें पानी भी नहीं लगता था क्योंकि उस भूमि का पानी खराब था जिससे वे केवल गेहूँ और बाजरा की फसल ही लेते थे। इस भूमि से उनका घर का गुजारा ही मुि कल से चलता था। श्रीमती पूजा एक ि ाक्षित महिला हैं उन्होंने अपने पति के साथ मिलकर योजना बनाई कि इस भूमि को बेचकर कहीं दूसरी जगह लें ताकि हमारी आमदनी अच्छी हो सकें। भाग्यव ा उनकी वह जमीन अच्छे भावों में बिक गई और उन्होंने इस पैसे से 10 एकड़ जमीन खरीदी और 5 एकड़ में अमरूद का बाग व 5 एकड़ में बेर का बाग लगाया।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, हिसार के नेतृत्व में उन्होंने उस बाग में टपका सिंचाई का प्रबन्ध किया तथा सोलर सिस्टम भी लगवाया। वह चार–पाँच साल से कृषि विज्ञान केन्द्र, सदलपुर से जुडी हुई हैं तथा लगभग 15–17 लाख की आमदनी ले रहीं हैं। उन्होंने इसके साथ–साथ चना, विभिन्न प्रकार की जैविक खेती द्वारा सब्जियां भी उगाई तथा अपने खेत पर 3–4 भैंसें भी रखीं जिससे वह दूध बेचकर अच्छा लाभ कमा रही हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र, सदलपुर से वह समय–समय पर तकनीकी ज्ञान लेती रहती हैं व फोन के माध्यम से भी वैज्ञानिकों से सलाह म ावरा लेती हैं और वैज्ञानिक उसके बाग में जाकर भी उसे तकनीकी सलाह देते हैं।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1.	बेर का बाग	200000.00	800000.00	600000.00
2.	अमरूद का बाग	200000.00	1200000.00	1000000.00
3.	चने की खेती	2000.00	50000.00	30000.00
4.	दुग्ध उत्पादन	5000.00	35000.00	30000.00
	कुल	**407000.00**	**2085000.00**	**1660000.00**

सफलता का असर

श्रीमती पूजा दूसरी ग्रामीण महिलाओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत हैं। श्रीमती ढाण्डा व उनके पति दिन रात मेहनत करके अच्छी आमदनी ले रहे हैं। वे अपनी कृषि गतिविधियों व प ुपालन के कार्यों में सक्रिय भागीदारी के लिए अन्य कृषक महिलाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं व अपनी उद्यमिता के लिए भी जानी जाती हैं।

क्षेत्र में योगदान

आसपास के सभी लोग श्रीमती पूजा की सफलता को देखकर प्रेरित होते हैं। वह कई महिला किसानों के लिए प्रेरणा की स्रोत हैं तथा दूसरी महिलाओं को भी बेर व अमरूद की तुड़ाई में रोजगार भी देती हैं। उन्होंने अपने बाग में तीन मजदूर नियमित रूप से लगा रखे हैं तथा अन्य महिलाओं को जरूरत के अनुसार से काम देती रहती हैं। मजदूर महिलाओं को मजदूरी के लिए दूर नहीं जाना पड़ता इसलिए वे भी बड़ी लगन से काम करती हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. नरेन्द्र कुमार
अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, सदलपुर, हिसार (हरियाणा)
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि वि वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

36 कृषि विज्ञान केन्द्र - झज्जर

विकास के रंग जैविक खेती के संग

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती नीलम आर्य**
पति का नाम	:	श्री परवीन
आयु	:	34 वर्ष
शिक्षा	:	एम.ए.
पता	:	गाँव–नौगाँव, जिला–झज्जर (हरियाणा)
फोन नंबर	:	9671629175
सफलता का क्षेत्र	:	जैविक खेती
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, झज्जर (हरियाणा)

पृष्टभूमि

श्रीमती नीलम आर्य बचपन से ही कृषि कार्य से जुडी हैं। पारंपरिक खेती में अधिक मुनाफा न देखते हुए उन्होंने खेती को लाभदायक बनाने के दूसरे तरीके तलाशने शुरू किये। लागत कम करके मुनाफा बढाने के लिए उन्होंने जैविक खेती का तरीका चुना। इस सन्दर्भ में वो वर्ष 2008 में कृषि विज्ञान केंद्र, झज्जर के संपर्क में आईं तथा कृषि विज्ञान केंद्र, झज्जर तथा चौ.चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा आयोजित प्राकृतिक खेती व खाद्य प्रसंस्करण द्वारा मूल्य संवर्धन पर प्रशिक्षण प्राप्त किए। उन्होंने किसान मेलों में भ्रमण किया तथा अन्य गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केंद्र, झज्जर तथा कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा सरकार ने श्रीमती नीलम को आधुनिक व लाभकारी कृषि तकनीकों में व्यावहारिक व प्रयोगात्मक ज्ञान में दक्ष किया। तत्पश्चात् उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों के तकनीकी पर्यवेक्षण एवं मार्गदर्शन में वर्ष 2009 से धीरे–धीरे अपनी 10 एकड़ जमीन पर जैविक अनाज, फल व सब्जियां, तिलहन व दलहन, औषधीय फसलों, आदि का उत्पादन शुरू कर दिया। उन्होंने 5 एकड जमीन के चारों ओर सफेदा के वृक्ष भी लगाए हैं। वह किसान क्लब व हरियाणा खेती की आजीवन सदस्य हैं जिससे उन्हें खेती से सम्बन्धित जानकारी मिलती है।

सफलता का विवरण

श्रीमती नीलम अपने परिवार के अन्य सदस्यों की सहायता से जैविक अनाज, जैविक सब्जियां, जैविक तिलहन, दलहन का उत्पादन व खाद्य प्रसंस्करण द्वारा मूल्य संवर्धन कर रही हैं। वे 2009 से जैविक गेहूं, मूंग, चना, अरहर, उरद, मसूर, राया, मक्का,

बरसीम, ज्वार, सब्जियों व फलों का उत्पादन कर रही हैं। वे खेती में रसायनरहित नयी व देसी (लोकल) किस्मों तथा समन्वित कीट प्रबंधन के लिए ताम्बे के बर्तन में खट्टी लस्सी, जीवामृत, अग्निअस्त्र, ब्रह्मास्त्र, दस्परनी अर्क, नीम द्वारा तैयार किये गए उत्पाद, फेरोमोन ट्रैप, गौ मूत्र व देशी खाद का प्रयोग कर रही हैं। समन्वित पोषण प्रबंधन हेतु वे जैव उर्वरक द्वारा बीज उपचार,गोबर की खाद,केचुएँ की खाद, ढैंचा, जीवामृत, घनजीवामृत, गौ कृपा अमृतं, नाडेप खाद, रिजोबियम, फसल अवशेष आदि का प्रयोग कर उन्होंने खेती की लागत को काफी कम कर लिया है। संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियाँ जैसे लेजर लेवलर, टपका व फव्वारे द्वारा सिंचाई, फसल अवशेष प्रबंधन व मल्चिंग को अपनाकर वे लाभकारी जैविक खेती कर रही हैं। उनके पास 2 देशी गाय व 1 मुर्राह भैंस है जिसके दूध से वे दुग्ध उत्पाद जैसे पनीर, खोया, लस्सी, दही व घी बनाकर उन्हें बेचती भी हैं। वे वर्ष 2016 से जैविक पद्धति से तैयार मूल्य संवर्धित उत्पाद जैसे आटा, बेसन, सूजी, दलिया, बिस्कुट, दालें व सरसों के तेल को आर्गेनिक काउंसिल के पार्टिसिपेटरी गारंटी सिस्टम प्रमाणीकरण के तहत आर्य नेचुरल फार्म प्रोडक्ट्स के नाम से बेच रहे हैं। अपने उत्पादों को वे सीधे विपणन तथा वाट्सअप द्वारा ऑनलाइन बेचती हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत के.सी.सी. कार्ड द्वारा मिलने वाले लाभ भी लिए हुए हैं।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1	जैविक खेती–मूंग	185500.00	144000.00	125500.00
2	गेहूं	54000.00	247500.00	193500.00
3	राया	23000.00	125400.00	102400.00
4	गाजर	21200.00	144000.00	122800.00
5	तोरी	76600.00	140000.00	63400.00
6	पशुपालन–भैंस–1	27200.00	132000.00	104800.00
7	गाय–2	98700.00	180000.00	81300.00
	कुल	**486200.00**	**1112900.00**	**793700.00**

सफलता का असर

श्रीमती नीलम अपनी कृषि गतिविधियों एवं अन्य कृषि कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के लिए अन्य कृषक महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और एक प्रगतिशील महिला किसान के रूप में जानी पहचानी जाती हैं। यूट्युब वीडियो, रेडियो वार्ता व विभिन्न कृषि सम्बन्धित कार्यक्रमों में उन्हें विशेषज्ञ वार्ताकार एवं अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता है। अब वह दूसरों किसानों के लिए एक प्रेरणा स्रोत, रायनेता, परामर्शदाता और जैविक खेती की प्रचारक के रूप में कार्य करती हैं।

क्षेत्र में योगदान

जिला झज्जर एवं आसपास के क्षेत्रों में उनसे प्रेरित होकर अनेकों किसानों ने जैविक खेती को अपनाया है। उन्होंने 10 कृषक महिलाओं का 'आर्य समूह' नामक समूह बनाया है जिन्हें जैविक खेती करने के लिए प्रशिक्षण व प्रोत्साहन दिया गया। अब उनमें से 7 महिलाएं जैविक खेती करके मुनाफा कमा रही हैं। श्रीमती नीलम की राय से 15–20 किसानों ने भी जैविक खेती को अपना लिया है तथा वे गुडगाँव में एक साँझे साधन द्वारा अपना उत्पाद बेचते हैं। करीब 2000 विद्यार्थियों ने उनके फार्म का भ्रमण किया है तथा उन्हें हानिकारक रसायनयुक्त खेती तथा रसायनरहित खाद व् कीटनाशकरहित खेती के बारे में ज्ञान दिया गया। यूट्युब वीडियो, रेडियो वार्ता आदि के द्वारा भी उन्होंने जैविक खेती का प्रचार किया है। उन्हें राष्ट्रीय, राज्य व जिला स्तर पर अनेक पुरस्कार व प्रशंसा पत्र मिले हैं। अब उनके पास एक बड़ा ग्राहक आधार है जो नियमित रूप से इनके खेत का जैविक उत्पाद खरीदता है। अतः श्रीमती नीलम एक सफल कृषि उद्यमी हैं जो दूसरे किसान भाई व बहनों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं तथा जैविक खेती को आगे बढ़ाने के लिए अग्रसर हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. उमेश कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय
कृषि विज्ञान केंद्र, झज्जर (हरियाणा)

37 कृषि विज्ञान केन्द्र - जींद

जैविक कृषि बनी महिला कृषक के विकास का पथ

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती सुमित्रा**
पति का नाम	:	श्री सुभाष
आयु	:	45 वर्ष
शिक्षा	:	स्नातक
पता	:	गाँव–अहिरका, तहसील–जींद (हरियाणा)
फोन नंबर	:	9466476616
सफलता का क्षेत्र	:	जैविक कृषि
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, जींद (हरियाणा)

पृष्ठभूमि

श्रीमती सुमित्रा बचपन से ही कृषि कार्य से जुड़ी हैं। शुरुआत में उनके परिवार को खेती से न तो फायदा होता था और न ही नुकसान इसलिए वह एक शिक्षित महिला होने के नाते खेती को लाभकारी बनाने के रास्ते तलाशने लगी। इस संदर्भ में उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, जींद के वैज्ञानिकों से सम्पर्क किया और तत्प चात् उन्होने कृषि एवं प ुपालन सम्बन्धित विभिन्न प्रि ाक्षणों में भाग लेकर आधुनिक एवं लाभकारी कृषि तकनीकियों की समुचित जानकारी प्राप्त कर ज्ञान अर्जित किया। साथ ही जैविक कृषि तकनीकियों में गहन व्यवहारिक एवं प्रयोगात्मक प्रि ाक्षण प्राप्त किया। इसके अलावा वे कृषि भाोध पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से भी अपने ज्ञान को समय–समय पर अद्यतित करती रहीं और अंतोगत्वा उन्होंने जैविक कृषि में अपने ज्ञान एवं कौ ाल में प्रवीणता हासिल कर ली।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, जींद ने श्रीमती सुमित्रा को कृषि एवं प ुपालन के साथ–साथ जैविक कृषि सें सम्बन्धित विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकियों पर प्रि ाक्षित देकर उनकी कृषि, प ुपालन वि ोषकर जैविक कृषि में दक्ष किया। तत्प चात् श्रीमती सुमित्रा ने कृषि विज्ञान केन्द्र के विषय वि ोषज्ञों एवं राज्य कृषि विभाग के कृषि अधिकारियों के तकनीकी पर्यवेक्षण एवं मार्गद िन में 5 बीघा कृषि भूमि पर जैविक खेती करनी भाुरू की। अब वे अपने खेत में जैविक अनाज, जैविक सब्जियां, जैविक मसाला आदि फसलों का उत्पादन कर रही हैं।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि विभाग की आधुनिक एवं लाभकारी जैविक कृषि तकनीकियों से ज्ञान एवं दक्षता हासिल करके, श्रीमती सुमित्रा ने जैविक अमरूद, भिन्डी, मटर, मिर्च, लहसुन, प्याज इत्यादि का उत्पादन भाुरू किया और अब वे लगभग 7–8 लाख रूपये का लाभ प्राप्त कर रही हैं जिसमें से लगभग 5–6 लाख रूपये से अधिक का लाभ जैविक सब्जियों की बिक्री एवं निर्यात तथा 4

लाख रूपये से अधिक का लाभ जैविक अमरूद उत्पादन की बिक्री से कर रही हैं।

क्र.सं.	गतिविधि/उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1.	अमरुद बाग	60800.00	259200.00	230000.00
2.	सब्जियां (रबी)	36300.00	241600.00	205300.00
3.	सब्जियां (खरीफ)	75000.00	252000.00	177000.00
4.	भैंस पालन	30600.00	87400.00	56800.00
	कुल	**202700.00**	**840200.00**	**669100.00**

सफलता का असर

श्रीमती सुमित्रा कृषि गतिविधियों एवं अन्य कृषि कार्यक्रमों में अपनी सक्रिय भागीदारी के लिए अन्य कृषक महिलाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं और वे अब एक प्रगति ील महिला किसान के रूप में जानी पहचानी जाती हैं। अब श्रीमती सुमित्रा को रेडियो वार्ता (किसान वाणी) एवं विभिन्न कृषि संबंधित प्रि ाक्षण कार्यक्रमों में वि ोषज्ञ वार्ताकार एवं अतिथि के रूप में भी आमंत्रित किया जाता है। साथ ही वह अब एक प्रेरणा स्रोत, द्वारपाल, रायनेता, पराम िदाता और पूरे दे ा में जैविक खेती के पाठ को प्रचारित करने के लिए एक राजदूत के रूप में कार्य करती हैं।

क्षेत्र में योगदान

जींद एवं आसपास के क्षेत्रों में लगभग 80 प्रति ात किसान श्रीमती सुमित्रा जी के प्रयासों के कारण जैविक खेती का अनुसरण कर रहे हैं। जैविक खेती के प्रति इनके समर्पण एवं विभिन्न क्षेत्रों में सक्रियता के लिए इन्हें कई स्थानीय एवं जिला स्तरीय प्र ास्ति/प्र ांसा पत्र मिले हैं।

श्रीमती सुमित्रा कृषि को एक उद्यम/व्यवसाय के रूप में करने के लिए कई महिला किसानों के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं साथ ही वह जैविक खेती के साथ विकास के पथ का एक आद ी उदाहरण हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. आर.डी. पँवार
जिला प्रसार वि ोषज्ञ (उद्यान विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, जींद (हरियाणा)

38 कृषि विज्ञान केन्द्र - कैथल

जैविक सब्जी उत्पादन से बढ़ी खुशहाली

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती सविता देवी**
पति का नाम	:	श्री राजे ा कुमार
आयु	:	31 वर्ष
शिक्षा	:	10वीं
पता	:	गाँव–खेड़ी सिकंदर, जिला–कैथल (हरियाणा)
फोन नंबर	:	99922–37083
सफलता का क्षेत्र	:	सब्जी उत्पादन
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल (हरियाणा)

पृष्ठभूमि

श्रीमती सविता देवी कैथल जिले के छोटे से गाँव खेड़ी सिकंदर की सीमान्त किसान हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र कैथल के सम्पर्क में आने से पहले उसका परिवार गेहूँ–धान की खेती करता था। जिससे उन्हें ज्यादा मुनाफा नहीं होता था। श्रीमती सविता देवी वर्ष 2016 में कृषि विज्ञान केन्द्र कैथल के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आयीं। वैज्ञानिकों ने उन्हें जैविक खेती अपनाने को कहा।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र कैथल ने श्रीमती सविता को जैविक खेती पर तकनीकी ज्ञान व प्र ाक्षिण दिया। तत्प चात् उन्होंने एक एकड़ क्षेत्र में जैविक सब्जियों की खेती करनी भुारू की। अब वो खीरा, टमाटर, ि ामला मिर्च इत्यादि की खेती कर रही हैं।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र कैथल से दक्षित होकर श्रीमती सविता देवी ने वर्ष 2021–22 में दो एकड़ क्षेत्र से लगभग 6 लाख रूपये की सब्जियों का उत्पादन किया।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि/उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1.	रबी सब्जी	50000.00	350000.00	300000.00
2.	खरीफ सब्जी	50000.00	350000.00	300000.00
	कुल	**100000.00**	**700000.00**	**600000.00**

सफलता का असर

जैविक सब्जी उत्पादन में श्रेष्ठता के कारण श्रीमती सविता देवी को भारतीय कृषि अनुसंधाान परिषद् के विभिन्न केन्द्रों द्वारा सम्मानित किया गया है। श्रीमती सविता देवी को चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि वि   वविद्यालय द्वारा दिसम्बर 23, 2017 को किसान दिवस पर सम्मानित किया गया है। श्रीमती सविता देवी पूरे क्षेत्र में किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती सविता देवी अपनी जैविक खेती के कारण न केवल महिला किसानों के लिए बल्कि पुरूष किसानों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं। सभी विभागों के अधिकारी व प्रगति   ील किसान समूहों की कई टीमों ने उनके फार्म का भ्रमण किया है। इन्होंने ग्रामीण युवती विकास मण्डल बनाकर जैविक सब्जी व जैविक उत्पादों का विपणन किया है।

संकलनकर्ता
डॉ. रमेश वर्मा एवं डॉ. जसबीर सिंह
वरिष्ठ समन्वयक एवं वैज्ञानिक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल (हरियाणा)

39 कृषि विज्ञान केन्द्र - महेन्द्रगढ़

घरेलू महिला से सफल डेयरी उद्यमी की डगर पर

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती नीतू यादव**
पति का नाम	:	श्री पवनवीर यादव
आयु	:	42 वर्ष
शिक्षा	:	12वीं
पता	:	गाँव–गुढ़ा, खण्ड–कनीना जिला–महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)
फोन नंबर	:	9050254067
सफलता का क्षेत्र	:	डेयरी पालन
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

पृष्ठभूमि

जिला महेन्द्रगढ़ के अधिकतर किसान सीमांत एवं लघु श्रेणी के हैं तथा अपनी आजीविका के लिये खेती पर निर्भर रहते हैं परन्तु पिछले कुछ वर्षों से यह देखने में आया है कि खेती से प्राप्त आय किसानों के घरेलू खर्चों के लिये पर्याप्त नहीं है। दूसरी ओर जिले की खेती के लिये आवश्यक संसाधन–भूमि एवं जल भी सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं जिसके परिणाम स्वरूप फसल उत्पादन से वांछित पैदावार एवं आय प्राप्त नहीं हो पाती। अधिकतर महिला किसानों की भी कृषि के कार्यों में सहभागिता रहती है परन्तु खेती से प्राप्त कम आय के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं हैं। जिले की विभिन्न परिस्थितियों के आंकलन के आधार पर यह पाया गया है कि फसल उत्पादन के साथ डेयरी व्यवसाय करके किसान अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर सकते हैं। श्रीमती नीतू यादव जो कि जिला के गुढ़ा गांव से हैं तथा बारहवीं पास घरेलू महिला हैं, इन्होंने भी महसूस किया कि खेती से प्राप्त आय पारिवारिक खर्चों को पूरा करने में अपर्याप्त है तथा कृषि आधारित लाभप्रद व्यवसाय अपनाने की आवश्यकता है।

तकनीकी हस्तक्षेप

वर्ष 2008 में कृषि विज्ञान केन्द्र, महेन्द्रगढ़ द्वारा आयोजित कृषक प्रशिक्षण में श्रीमती नीतू यादव ने भाग लिया। कृषि विशेषज्ञों से विचार–विमर्श के उपरान्त इन्होंने डेयरी व्यवसाय शुरू करने का मन बनाया। सफल डेयरी व्यवसाय के लिये आवश्यक तकनीकी ज्ञान (उन्नत नस्ल, आहार एवं रोग प्रबन्धन, टीकाकरण, कृत्रिम गर्भाधान आदि), उपलब्ध संसाधनों का आंकलन, उत्पादों का विपणन, व्यवसाय का लेखा जोखा इत्यादि पहलुओं की जानकारी प्राप्त करने के लिये नीतू यादव ने डेयरी व्यवसाय विषय पर आयोजित व्यावसायिक प्रशिक्षण में भाग लिया तथा प्रशिक्षण के दौरान डेयरी इकाईयों का भ्रमण किया। इसके अतिरिक्त कृषि विज्ञान केन्द्र ने श्रीमती नीतू यादव द्वारा डेयरी व्यवसाय सुचारु रूप से चलाने के लिये पशुपालन एवं अन्य विभागों से मदद प्राप्त करने के लिये

सम्बन्धित अधिकारियों से सम्पर्क कराने में मदद की। साथ ही श्रीमती नीतू यादव केन्द्र के कृषि विशेषज्ञों के सम्पर्क में रहकर वर्ष भर हरा चारा उत्पादन, साइलेज बनाना इत्यादि पहलुओं की जानकारी प्राप्त करती रहती हैं।

सफलता का विवरण

प्रारम्भ में श्रीमती नीतू ने डेयरी व्यवसाय वर्ष 2008 में लघु स्तर पर पांच संकर नस्ल की गायों के पालन से शुरू किया। धीरे–धीरे व्यवसाय से प्राप्त आमदनी का सदुपयोग करने के लिये उन्होंने मुर्रा भैंस पालन भी शुरू किया। इस प्रकार नीतू यादव ने वर्ष 2008 में स्थापित लघु डेयरी इकाई वर्तमान में वर्ष 2021 तक उच्च तकनीक की एक बड़ी इकाई स्थापित कर ली है। वर्तमान में इनकी डेयरी इकाई में 105 संकर (एच.एफ.) गायें, 35 बछड़ियां व 11 मुर्रा नस्ल की भैंस हैं। दूध बिक्री के अतिरिक्त वह गोबर व बछड़ियों की बिक्री करके भी आमदनी प्राप्त कर रही हैं।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)
1.	पशु आहार	9490000.00	00.00
2.	टीकाकरण व दवाई	1460000.00	00.00
3.	मजदूरी खर्च	730000.00	00.00
3.	बिजली व पानी	182500.00	00.00
4.	अन्य खर्च	91250.00	00.00
5.	दूध बिक्री	00.00	12956040.00
6.	बछड़ियों की बिक्री	00.00	600000.00
7.	गोबर की बिक्री	00.00	200000.00
	कुल	**11953750.00**	**13756040.00**

सफलता का असर

डेयरी व्यवसाय को अपनाकर श्रीमती यादव प्रसन्न एवं गौरवान्वित महसूस करती हैं। व्यवसाय से प्राप्त आमदनी से वह न केवल घरेलू खर्चों की ही पूर्ति करती हैं अपितु बच्चों की अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य व सामाजिक कार्यों के लिये भी आवश्यक व्यय कर रही हैं। वर्तमान में इनकी बेटी एक उच्च शिक्षा संस्थान में एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई कर रही हैं। डेयरी व्यवसाय ने इनको जिला ही नहीं

अपितु प्रदेश व देश के स्तर पर पहचान दी है। इस व्यवसाय में उत्कृष्ट कार्यों के लिये केन्द्र व राज्य सरकार ने इन्हें विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया है। महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने वर्ष 2019 में हरियाणा सरकार द्वारा आयोजित चतुर्थ कृषि नेतृत्व सम्मेलन के अवसर पर नीतू यादव को हरियाणा कृषि रतन पुरस्कार से सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त इन्हें भारतीय डेयरी संगठन द्वारा सर्वश्रेष्ठ अमूल दुग्ध उत्पादक पुरस्कार व सर्वश्रेष्ठ महिला डेयरी पुरस्कार दिया गया। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा भी विभिन्न अवसरों पर इन्हें सम्मानित किया गया है।

पशुपालन में विशेष उपलब्धि के लिए सम्मान

एग्री लीडरशिप समिट में पशुपालन में विशेष उपलब्धि के लिए महेंद्रगढ़ के गांव गुढ़ा की नीतू यादव को सम्मानित करते राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद। 10 साल में ही नीतू की डेयरी में पशुओं की संख्या 200 पार हो गई है, इनमें 150 गायें और करीब 10 भैंसें हैं।

क्षेत्र में योगदान

डेयरी व्यवसाय को सफलतापूर्वक अपनाकर श्रीमती नीतू यादव ने जिला एवं प्रदेश स्तर पर एक उदाहरण स्थापित किया है। इनके व्यवसाय की जानकारी एवं विश्लेषण के लिये अनेक विशिष्ठ अधिकारी, जन प्रतिनिधि एवं डेयरी व्यवसाय के इच्छुक युवक इनकी इकाई का समय–समय पर भ्रमण करते रहते हैं। व्यवसाय से प्राप्त आमदनी एवं सामाजिक पहचान से प्रभावित होकर जिले के अनेक युवाओं ने लघु डेयरी इकाइयां शुरू की हैं तथा वांछित लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. पूनम
जिला विस्तार विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

40 कृषि विज्ञान केन्द्र - रेवाड़ी

डेयरी–सह किचन गार्डनिंग ने बनाया आत्मनिर्भर

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती अनीता यादव**
पति का नाम	:	श्री रविंदर कुमार
आयु	:	35 वर्ष
शिक्षा	:	दसवीं
पता	:	सीहा, रेवाड़ी (हरियाणा)
फोन नम्बर	:	8398066989
सफलता का क्षेत्र	:	डेयरी सह किचन गार्डनिंग
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, रेवाड़ी (हरियाणा)

पृष्ठभूमि

श्रीमती अनीता यादव लघु कृषक परिवार से ताल्लुक रखती हैं। कृषक परिवार में भाादी के बाद उन्होंने महसूस किया कि परिवार के पास उपलब्ध 3 एकड़ जमीन से परंपरागत खेती करके परिवार का भरण पोषण सम्भव नहीं है। वर्तमान समय में आर्थिक विकास से ही परिवार का विकास किया जा सकता हैं। इसके मद्देनजर दूरदर्शिता को ध्यान में रखते हुए श्रीमती अनीता यादव ने परिवार की आमदनी बढ़ाने की लालसा से अपने पति के साथ कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपुरा–रेवाड़ी के वि ोषज्ञ डॉ. प्रमोद कुमार यादव से संपर्क करके परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिए समन्वित खेती के अंतर्गत डेयरी व्यवसाय एवं सब्जी उत्पादन द्वारा फसल विविधीकरण की तकनीकी जानकारी एवं इसका व्यवहारिक ज्ञान अर्जित किया।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपुरा–रेवाड़ी में श्रीमती अनीता यादव को किचन गार्डनिंग एवं डेयरी व्यवसाय से सम्बन्धित विभिन्न वैज्ञानिक तकनीकियों पर व्यवहारिक प्रि ाक्षण देकर दक्ष किया गया। श्रीमती अनीता यादव ने दक्षता के बाद अपने संसाधनों एवं दक्षता के अनुरुप कृषि विज्ञान केन्द्र के विषय वि ोषज्ञों एवं प ुपालन विभाग के अधिकारियों के तकनीक मार्गद ान एवं पर्यवेक्षण में वर्ष 2018 से 5 भैंसों के साथ लघु डेयरी एवं मार्च 2020 से किचिन गार्डनिंग भाुरु की। वर्तमान में वे अपनी किचन गार्डनिंग से रसायन मुक्त ताजी सब्जियों का उत्पादन कर रही है। डेयरी से दुग्ध उत्पादन करके गांव एवं नजदीक कस्बों में आपूर्ति करके अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर रही हैं।

सफलता का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्र एवं प ुपालन विभाग की नवीनतम एवं लाभकारी वैज्ञानिक तकनीकियों का व्यवहारिक ज्ञान एवं दक्षता हासिल करके श्रीमती अनीता यादव ने 5 भैंसों की लघु डेयरी व्यवसाय करके नजदीकी गांव एवं कस्बों में दूध की आपूर्ति करके लगभग 2.70 लाख रुपये की अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर रही हैं। साथ ही कोरोना काल में भाुरु की गई अपनी किचन गार्डनिंग से रसायन मुक्त ताजी सब्जियों की बिक्री विभिन्न मौसमों में वर्ष भर करके प्रति वर्ष लगभग 90000 रुपये की आमदनी प्राप्त करके गांव की महिलाओं के लिए मिसाल बनी हुई हैं।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि/उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1.	डेयरी व्यवसाय	600000.00	870000.00	270000.00
2.	किचन गार्डनिंग	30000.00	120000.00	90000.00
	कुल	**630000.00**	**990000.00**	**360000.00**

सफलता का असर

श्रीमती यादव समन्वित खेती के तहत लघु डेयरी एवं किचन गार्डनिंग को अपनाकर परिवार के साथ कृषि कार्यों में सक्रिय भागीदारी के कारण गांव की अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। ये अब एक कु ाल डेयरी संचालक एवं वैज्ञानिक ढंग से किचन गार्डनिंग करने वाली प्रगति ील किसान महिला के रुप में जानी जाती हैं। कोविड काल खंड में किचन गार्डनिंग का कार्य भुारु करके पूरे गांव एवं नजदीकी क्षेत्रों में किचन गार्डनिंग की अलख जगाने में इनकी अहम भूमिका रही है। श्रीमती यादव स्वयं सहायता समूह, आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को समय–समय पर लघु डेयरी एवं किचन गार्डनिंग के लिए प्रेरित करती रहती हैं।

क्षेत्र में योगदान

सीहा एवं नजदीकी गांवों में 60 प्रति ात महिलाएं जो परिवार में एक भैंस रखती थीं वे अब श्रीमती अनीता यादव के लघु डेयरी के मॉडल को देखकर लघु डेयरी स्थापित करके परिवार की आमदनी में इजाफा कर रही हैं। कृषक महिलायें परिवार के लिए रसायन मुक्त ताजी सब्जियाँ अपनी किचन गार्डनिंग से परिवार के सदस्यों एवं संसाधनों के अनुरुप मौसमी सब्जियों का उत्पादन वर्ष भर कर रही हैं।

श्रीमती यादव समन्वित कृषि प्रणाली के अंतर्गत लघु डेयरी, सब्जी उत्पादन को एक व्यवसाय के रुप में महिला कृषकों के लिए आद ी बन कर उभरी हैं। इनकी प्रेरणा से महिलाएं अपने परिवार की आमदनी में अतिरिक्त इजाफा करके जीवन यापन में बदलाव की और अग्रसर हो रही हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. प्रमोद कुमार यादव
विषय वि ोषज्ञ (बागवानी)
कृषि विज्ञान केन्द्र, रेवाड़ी (हरियाणा)

41 कृषि विज्ञान केन्द्र - सिरसा

कपास का संकर बीज उत्पादन बना महिला कृषक की सम्पन्नता का साधन

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती मंजु रानी**
पति का नाम	:	श्री राजा राम
आयु	:	35 वर्ष
शिक्षा	:	दसवीं
पता	:	गाँव–शाहपुर बेगु, जिला–सिरसा (हरियाणा)
फोन नंबर	:	9812579185
सफलता का क्षेत्र	:	कपास संकर बीज उत्पादन, केंचुआ खाद उत्पादन
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, सिरसा (हरियाणा)

पृष्ठभूमि

श्रीमती मंजु रानी कपास की परंपरागत खेती करती थीं। वर्ष 2012 में उन्होंने कपास का संकर बीज उत्पादन शुरू किया। साथ ही उन्होंने केंचुआ खाद बनाने का प्रशिक्षण लेकर व्यवसायिक स्तर पर इसका उत्पादन शुरू किया। अपनी कुल 8 एकड़ भूमि से वह हर साल 2 एकड़ भूमि में बीज उत्पादन कर रही हैं तथा परम्परागत खेती के मुकाबले कई गुना मुनाफा कमा रही हैं।

तकनीकी हस्तक्षेप

श्रीमती मंजु रानी ने वर्ष 2011 में कृषि विज्ञान केंद्र, सिरसा से बीज उत्पादन खासकर कपास के संकर बीज उत्पादन एवं केंचुआ खाद उत्पादन का प्रशिक्षण लिया तथा इन तकनीकों को अपनाकर अपनी आमदनी बढ़ाई।

सफलता का विवरण

श्रीमती मंजु रानी ने जिला और राज्य स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। उन्होंने अन्य महिला किसानों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया है तथा आज अनेक महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। इस उपलब्धि के लिए उन्हें जिला और राज्य स्तर पर कई बार सम्मानित किया गया है।

आमदनी

क्र.सं.	गतिविधि / उद्यम	कुल लागत (रु)	कुल आमदनी (रु)	शुद्ध लाभ (रु)
1.	बीज उत्पादन	210000.00	630000.00	420000.00
2.	केंचुआ खाद उत्पादन	40000.00	120000.00	80000.00
	कुल	**250000.00**	**750000.00**	**500000.00**

सफलता का असर

श्रीमती मंजु रानी शुरुआत में परम्परागत खेती करती थीं जिससे कम आमदनी होती थी। समय की मांग को देखते हुए श्रीमती रानी ने कपास का संकर बीज उत्पादन करके अपनी आमदनी को कई गुना बढ़ाया। इससे अन्य महिलाओं के लिए वह उदाहरण बनीं तथा आत्मनिर्भर बनीं।

क्षेत्र में योगदान

आज अनेकों किसान श्रीमती मंजु रानी से कपास का बीज लेते हैं तथा उनकी सफलता को देख कर जिले के कई किसानों ने संकर बीज उत्पादन शुरू किया है। उनकी इस पहल से जिला तथा आस पास के क्षेत्र में कपास की खेती की ओर किसानों का रुझान बढ़ा है। कई किसानों ने केंचुआ खाद उत्पादन को व्यावसायिक स्तर पर अपनाया है तथा अपनी आमदनी बढ़ाने के साथ साथ टिकाऊ खेती की ओर कदम बढ़ाए हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. देवेंद्र सिंह जाखड़, वरिष्ठ समन्वयक
डॉ. सुनील बेनीवाल, वैज्ञानिक सस्य विज्ञान
कृषि विज्ञान केंद्र, सिरसा (हरियाणा)

42 कृषि विज्ञान केन्द्र - यमुनानगर

अंतरफसलीय जैविक खेती से बनी सफल महिला कृषक

कृषक का विवरण

नाम	:	**श्रीमती परवीन कुमारी**
पति का नाम	:	श्री राजेश कुमार
उम्र	:	33 वर्ष
पता	:	ग्राम–गोलनपुर, जिला–जगादरी (हरियाणा)
सफलता का क्षेत्र	:	सब्जी उत्पादन
प्रेरणा स्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, यमुनानगर (हरियाणा)

पृष्ठभूमि

श्रीमती परवीन कुमारी बचपन से ही कृषि कार्य से जुड़ी हैं। भुरुआत में उनके परिवार को खेती से न तो फायदा होता था और न ही नुकसान। इसलिए श्रीमती परवीन कुमारी एक ि ाक्षित महिला होने के नाते खेती को लाभकारी बनाने के रास्ते तला ाने लगी। इस संदर्भ में उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, यमुनानगर के वैज्ञानिकों से भेंट करके उनसे कृषि को लाभकारी बनाने के तरीकों पर बात की। उनके बताये रास्तों पर श्रीमती परवीन ने खेती को एक लाभकारी व्यवसाय बनाने का मन बना लिया और अंतरफसल और जैविक खेती को अपनाने के लिए अग्रसर हो गयीं। श्रीमती परवीन कुमारी लाभ के साथ पर्यावरण को भी स्वच्छ बनाये रखने में विश्वास रखती हैं। ऐसा करने पर उनको लाभ भी हुआ और पर्यावरण भी स्वच्छ रहा।

तकनीकी हस्तक्षेप

कृषि विज्ञान केंद्र, यमुनानगर से तकनीकी जानकारी एवं प्रि ाक्षण प्राप्त करके श्रीमती परवीन ने 4 एकड़ जमीन पर गन्ने की फसल में गोभी लहसुन, उड़द एवं जैविक सब्जियों को अंतरफसल के रूप में लगाकर अपना व्यवसाय शुरू किया। इन्होंने रबी मौसम में गन्ने के साथ गोभी और लहसुन को अंतरफसल के रूप में लगाकर जनवरी–फरवरी तक फसल की उपज प्राप्त कर ली। फिर उसमें गन्ने के साथ उड़द की अंतरफसल के रूप में बुवाई की। श्रीमती कुमारी ने 4 एकड जमीन पर जैविक सब्जियाँ भी लगाई। उसमें उन्होंने करेला, घीया, टमाटर आदि जायद मौसम में लगाए और रबी मौसम में ब्रोकली, टमाटर तथा गोभी लगाई। जैविक तरीकों में उन्होंने 6 क्विंटल केंचुआ खाद को उर्वरक के रूप में प्रयोग किया। बीमारियों एवं कीड़ों से बचाव के लिए उन्होंने नीम आधारित दवाइयों का प्रयोग किया ताकि मनुष्य को कोई हानि न पहुँचे।

सफलता का विवरण

अंतरफसल करने के फलस्वरुप श्रीमती परवीन कुमारी को 2.7 लाख रूपये का लाभ एक छोटी से नवाचार विविधीकरण से मिले। उन्हें तोरई से रू. 6000, घीया से रू 70000 करेले से रू. 75000 टमाटर से रू. 45000 प्रति एकड़ गर्मियों के मौसम में मुनाफा हुआ तथा रबी मौसम में अंर्तसफल करने से उनको रू 90000 ब्रोकली से, रू. 70000 गोभी से और रू 80000 टमाटर से लाभ हुआ।

सफलता का असर

जो भी कार्य श्रीमती परवीन कुमारी ने अपने क्षेत्र में किये और अंतरफसल एवं जैविक खेती से सफलता पाई उसे उनके पड़ोसी गांव, मंडल और जिला ने मान्यता दी। वह दूसरी महिलाओं के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बनीं। उनसे सब्जियां लेने वाले ग्राहक हमेशा उनके पास आते हैं। उन्होंने टिकाऊ कृषि की एक सफल मिसाल पेश की है। उन्होंने टिकाऊ कृषि को एक सफल व्यवसाय बनाने का उदाहरण प्रस्तुत किया है और यह साबित कर दिया कि कैसे पुरूष प्रधान व्यवसाय में एक महिला भी सफलता का परचम लहरा सकती है।

क्षेत्र में योगदान

श्रीमती परवीन अन्य महिलाओं एवं बेरोजगारों के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं। वह अपने विचार सबके सामने रखती हैं और उनके विचारों का सम्मान भी होता है। वह पूरे क्षेत्र में अंतरफसल और जैविक खेती की दूत मानी जाती हैं। उनको क्षेत्र में आयोजित किये जाने वाले सभी प्रि क्षण में लगातार बुलाया जाता है जहाँ वो किसान भाइयों और बहनों को अंतरफसल और जैविक खेती की जानकारी देती हैं।

संकलनकर्ता
डॉ. आशमा खान
जिला प्रसार विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)
कृषि विज्ञान केंद्र, यमुनानगर (हरियाणा)

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भाकृअनुप-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, क्षेत्र-II

काजरी परिसर, जोधपुर - 342 005 (राजस्थान)

फोन: 0291-2748412, 2740516 फैक्स: 0291-2744367

ई-मेल: atarijodhpur@gmail.com; zpd6jodhpur@gmail.com

वेबसाइट: www.atarijodhpur.res.in